CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Bhastika

Folio - 49

卐 INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

RECORD NO. 16	LANGUAGE Skt /
ROLL NO. 4 Date of Filming 16-5-96	SCRIPT Dev Nagari
ACC NO.	MATERIAL Paper
Ms. No. 4483 (1)	
Bundle No.	
DEC NO. /R NO.	
DESCRITIVE CATALOGUE/TRIENNIAL CATALOGUE VOLUME : An Index to the Register of Mss. in the Pothikhana of Jaipur.	NO OF FOLIOS-PAGES 49
AUTHOR Jayadeva	
TITLE Gitagovindam	COMPLETE/INCOMPLETE
WITH OR WITHOUT COMMENTARY Bhāṣāṭīkā	REMARKS
SUBJECT Kāvya	LOCATION The Maharaja Sawai Man Singh II Museum, Khasmohor Collection, JAIPUR

Ekram

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Bhaskita
Folio - 49

बेलासकलानिनदि [illegible] बेकाइच्छाहैतोज [illegible]
कीबाणीसुनहु।सु [illegible] सीहैबाणी।सरसहै।अर्थजा [illegible]
कोमलहैपदजाबाणीमैनाहीतें [illegible] रतिहै।शाक
बाच:पल्लवयत्युमापतिधर:सन्द [illegible] गिरांजानंते
जयदेवएवशरणश्लाघ्याडुरूहद्रुते: [illegible] रोत्त [illegible]
मेयस्वनेराचार्यगोवर्धनस्पर्द्धीकोपिनविश्रुतः [illegible]
र:धोयीकविक्ष्मापति:॥ अबकविऔरश्रृंगार
ग्रंथनितेंआपनेंग्रंथमेंबहुतगुण [illegible] टकरतकहतहै॥
सोइकहतुहै।उमापतिधरनामजुकबितबचनविस्ता
रबहुतकरतहैपरिऔरश्रृंगारकेगुणकछूनाहीजा
नत।अरुगोवर्धनाचार्यनामजुकवितेश्रृंगारकरत
तिनकीबराबरिकोऊसुनिजननाही।परिमेरेग्रंथ
श्रृंगारऔरऊनिगुणहैतातेंगोवर्धनाचार्यकेग्रंथमे
ग्रंथहिनरजाहिंअरुधोयीकविनामजुकबितेश्व
धरकहिजतहैजुसुनहिसुनजू [illegible] अरुबडेके
बेहैपरिअर्थजतपैनाहीतातेंअर्थकी [illegible] करि
होहिजानतहो [illegible] ग्रंथकाहूपैनवत्त [illegible]
हेवेगिकरूजुहै।तातेंसबकबिनकोशिरोम [illegible] सोई
हैयातातिश्रीजयदेवजी।आपनेंग्रंथकेगुणप्रगट
रतजए॥ [illegible] ॥गोडामाल [illegible]
[illegible] प्रलयपयोधिजलेधृतवानसिवेदं॥विहितवहि
त्रचरित्रमखेदं॥केशवधृतमीनशरीरजयजगदीश
अहोकेशवजूबेदजुधरिबेकोधर्योहैमी
नरूपजिनऐसेअहोजगदीशजनकेनिकेदु:षहरणहा
रे [illegible] राजयहो।कैसेहोतुम।प्रलयकालकोजुस
मुद्रताविषै [illegible] तजुहै।बेदतिन्हहिंबिनाहीकष्ट
धारनकीनो।सुकैसे।प्रलयसमुद्रविषैबेदनि [illegible]

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सिंधुकौं जिहाजके चरित्र हि करत हो। सु कहा। जैसे
और समुद्र मैं बूडते ताकौं जिहाज शरण होइ तैसें
प्रलय समुद्र माहि बेदनिकौं शरण भए॥ अ॥
क्षितिरिति बिपुलतरे तव तिष्ठति पृष्ठे॥ धरणिध
रणकिणचक्रगरिष्ठे॥ केशव धृत कच्छपरूप जय
जगदीश हरे॥२॥ अ॥ अहो केशव धर्‍यो है कच्छ
परूप जिन ऐसे अहो जगदीश तुम्ह जय युक्त हो
ऊ। तुम्ह कैसे हो। जिनकी अतिबिशाला पृथि
रनैमि रहति है। सु कैसी है पीठि सर्बदा भूमि
कौ जु धरिबौ तातें भए जु घाठे तिनकरि कठोर है
मूल॥ वसति दशन शिखरे धरणी तव लग्ना॥ श
शिनि कलंक कलेव निमग्ना॥ केशव धृत शूकर रू
प जय जगदीश हरे॥३॥ अ॥ अहो केशव धृत
धर्‍यो है शूकर रूप बाराह रूप जिन ऐसे जु हो तु
म्ह तिनकी दाढ बिषैं भूमि लगी सोहत है। सु भू
मि कैसी देषियत है। चंद्रमा बिषैं जैसी कलंक
की रेषा ऐसे अहो जगदीश संसार के स्वामी ह
रि तुम्ह जय युक्त होऊ॥ मू॥ तव कर कमल ब
रे नखमद्भुत शृंगं॥ दलित हिरण्यकशिपु तनु भृ
गं॥ केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीश हरे
॥४॥ अ॥ धृत धर्‍यो है नृसिंघ रूप जिन ऐसे केशव
जी तुम्हारे हस्त कमल बिषैं शृंग समान अद्भुत न
ख शोभित तिन नखन करि फार्‍यो है हिरनकशि
पकौ हृदय जिन करि ऐसे जगदीश तुम्ह [illegible]
जय युक्त होऊ॥ छलयसि विक्रमणे ब
लिमद्भुत बामन॥ पद नख नीर जनित जनपा
वन॥ केशव धृत बामन रूप जय जगदीश ह

रे॥५॥ अ॥ धृत धर्‍यो है अद्भुत बामन रूप जिन ए
से केशव जी संसार के प्रभु तुम्ह कौं जय युक्त होउ॥
सु कैसे हो तुम्ह। चरननिकौ जु राषिबो तिन करि
छल्यो है बलि राजा जिन अरु जातीय चरण करिके
ब्रह्मांड जें दिकरि परम पवित्र जु गंगा जी तिन्हहि
प्रगट करिके उद्धर्‍यो है त्रैलोक जिन॥ मूल॥ क्षत्रिय
रुधिरमये जगदपगत पापं॥ स्नपयसि पयसि शमि
त भव तापं॥ केशव धृत भृगुपति रूप जय जगदीश ह
रे॥६॥ धृत धर्‍यो है परशुराम रूप जिन ऐसे केश
व जु तुम्ह क्षत्रियन को रुधिर जु जल ता बिषै सकल
बिश्व हि स्नान करावत हो अरु पाप रहित करत हो॥
अरु संसार जनित संताप दूरि करत हो। ऐसे जग
दीश तुम्ह कौं जय होऊ॥ मू॥ वितरसि दिक्षु रणे
दिक्पतिकमनीयं॥ दशमुखमौलिबलिं रमणीयं॥
केशव धृत रामशरीर जय जगदीश हरे॥७॥ अ॥
धृत धर्‍यो है रामचंद्र रूप जिन ऐसे केशव जु संग्राम
बिषैं इंद्रादि दिग्पालन कौं तुम्ह कल्याण बांछत हो।
अरु रावण के जु दसौं मस्तक तिन्ह करि दशहूं दि
शानकौं बलि देत भए ऐसे जु जगदीश जी ते जय यु
क्त होऊ॥ मूल॥ वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदा
भं॥ हलहति भीति मिलित यमुनाभं॥ केशव धृत
हलधर रूप जय जगदीश हरे॥८॥ अ॥ धृत धर्‍यो
है बलभद्र रूप जिन ऐसे प्रभु जु तुम्ह उज्जल शरी
र बिषैं बस्त्र हि धरत हो॥ सु बस्त्र कैसो है॥ मेघ समा
न बर्न जाको। बहुरि कैसो है बस्त्र। हल के भय तें प्रा
प्त भई जु जमुना ता समान नील है ऐसे जु हलधर
रूप जगदीश तुम्हारो जय होउ॥ मू॥ निंदसि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२ यज्ञविधेरहह श्रुतिजातं॥सदयहृदयदर्शितपशु
घातं॥केशवधृतबुद्धशरीरजयजगदीशहरे॥८॥
अर्थ॥अहोबुद्धअवतारपरमदयालहेअंतःक
रणजिनकोऐसोतुम्हजग्यकीबिधिजामहिंऐसो
जुबेदताहिनिंदतहो।सुकैसोहैजग्य।बिधान
जामहिपशुकोघातहोतहैऐसेबुद्धरूपजगदी
शजीतुम्हारीजयहोहु॥मूल॥म्लेछनिवहनिध
नेकलयसिकरवालं॥धूमकेतुमिवकिमपिक
रालं॥केशवधृतकल्किशरीरजयजगदीशहरे॥१०॥
अ॥ धृतधर्योहैकल्कीरूपजिनऐसेजुतुमम्लेछ
निकोजुसमूहताहिमारिबेकोषड्गधर्योहै।सु
कैसोहैषड्ग।धूमकेतुजुहैअग्नितासमानभया
नकहै।सुकहाजुअग्निकीनाईम्लेछनकोभस्म
करतहैऐसेकल्कीरूपजुजगदीशतेजयजुकहो
हु॥मूल॥ श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं॥शृ
णुसुखदंशुभदंभवसारं॥केशवधृतदशवि
धिरूपजयजगदीशहरे॥११॥ धृतधर्योहै
दशप्रकाररूपजिनऐसेतुम्हजयजुकहोहु॥
श्रीजयदेवकहतहैयहजुमेरोग्रंथताहिभक्त
सुनहुसुकैसेहैग्रंथ।मनोहरहैअरुसुखदाय
कहै॥अरुकल्याणकारीहै।अरुसंसारकोसा
रहै॥ [illegible]
मूल॥बेदानुद्धरतेजगन्निवहतेभूगोलमुद्बि
भ्रतेदैत्यंदारयतेबलिंछलयतेक्षत्रक्षयंकुर्व
ते।पौलस्त्यंजयतेहलंकलयतेकारुण्यमा
तन्वतेम्लेछान्मूर्छयतेदशाकृतिकृतेकृष्णा
अबपाछिलीअष्टपदी
यतुभ्यंनमः॥

कोअर्थयाश्लोककरिकहतहैं॥ऐसेजुश्रीकृष्ण
जीतिन्हकोमेरोनमस्कार॥सुकैसेहैं॥मीनरूप
धरिकरिजिन्हबेदउद्धरे।बहुरिकूर्मरूपकरि
जिगतसंसारशिरधरतहैं॥बहुरिबाराहरूपधरि
भूमिकोउद्धारकरतहैं॥बहुरिनरसिंहरूप
धरिहिरन्यकशिपकोबधकरतहैं।बहुरिबाम
नरूपधरिबलिकोछलतहैं।बहुरिबामनरूप
धरिबलिकोछलतहै।बहुरिपरसरामरूपधरि
क्षत्रियन्हकोनाशकरतभए।बहुरिरामचंद्ररू
पधरिरावणकोबधकरतभए।बहुरिबलभद्ररू
पधरिहलआयुधजिन्हधर्यो।बहुरिबुद्धरूपध
रिदयाबिस्तारतभए।बहुरिकल्कीरूपधरिम्
लेछनकोनाशकरतभए।यानांतिधरेहैंदशरू
पजिन्हऐसेजुश्रीकृष्णजीतिन्हकोदंडवत॥अ
[illegible] श्रितकम
लाकुचमंडलधृतकुंडलए।कलितललितव
नमालजयजयदेवहरे॥ अहोदेवपर
मेश्वरतुम्हजयजुकहोहु॥सुतुम्हकैसेहो॥श्री
श्रएहैलक्ष्मीजीकेकुचमंडलजिन।बहुरिकै
सेहो।धृतधरेहैंमकराकृतकुंडलजिन।बहु
रिकैसेहो।कलितपहरीहैललितसुंदरबनमा
लजिन दिनमणिमंडलमंडनभव
खंडनए॥मुनिजनमानसहंसजयजयदेव
हरे अहोदेवहरितुम्हजयजुकहो
हु।कैसेहोतुम्ह।दिनमणिमंडलजुसूर्यमं
डलताकोमंडनआभूषणहो॥बहुरिकैसे
हो।भवजुहैजनमताकोषंडनहारकर्ताहो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२ यज्ञबिधेरहह श्रुतिजातं॥ सदयहृदयदर्शितपशु
घातं॥ केशवधृतबुधशरीरजयजगदीशहरे॥९॥
अर्थ॥ अहो बुद्ध अवतार परम दयाल देव अत: क
रुणा जिनको ऐसो तुम्ह जग्य की बिधि जामहि ऐसो
जु बेदवृत्ता हि निंदत हो। सु कैसो है जग्य। बिधान
जामहि पशु को घात होत है ऐसै बुद्धरूप जगदी
शजी तुम्हारो जय होउं॥ मूल॥ म्लेछनिबहनिध
ने कलयसि करवालं॥ धूमकेतुमिव किमपि क
रालं॥ केशवधृतकल्किशरीरजयजगदीशहरे
॥१०॥ धृत धर्यो है कल्की रूप जिन ऐसे जु तुम्ह म्लेछ
निको जु समूह ताहि मारिबे कों षड्ग धर्यो है। सु
कैसो है षड्ग। धूमकेतु जु है अग्नि ता समान भया
नक है। सु कहा जु अग्नि की नाई म्लेछन कों भस्म
करत है ऐसे कल्की रूप जु जगदीश ते जय जुक्त हो
ऊं॥ श्रीजयदेवकवेरिदमुदितमुदारं॥ शृ
णु सुखदं शुभदं भवसारं॥ केशवधृतदशवि
धिरूपजयजगदीशहरे॥ धृत धर्यो है
दश प्रकार रूप जिन ऐसे तुम्ह जय जुक्त होऊ॥
श्रीजयदेव कहत है यह जु मेरो यं यता हि भक्त
सुनउ सु कैसे है ग्रंथ। मनोहर है अरु सुखदाय
क है। अरु कल्याणकारी है। अरु संसार को सा
र है॥ श्लो॥ ... वेद ...
श्लो॥ वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्बि
भ्रते दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्व
ते॥ पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमा
तन्वते म्लेछान्मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णा
य तुभ्यं नमः॥ अब पाछिली अष्टपदी

को अर्थ या श्लोक करि कहत है॥ ऐसे जु श्री कृष्ण
जी तिन्ह को मेरो नमस्कार। सु कैसे है॥ मीन रूप
धरि करि जिन्ह बेद उधरे। बहुरि कूर्मरूप करि
जिगत संसार धरत है॥ बहुरि बाराह रूप धरि
भूमि को उद्धार करत है॥ बहुरि नरसिंह रूप
धरि हिरन्यकशिपु को बध करत है। बहुरि बाम
न रूप धरि बलि को छलत है। बहुरि बामन रूप
धरि बलि को छलत है। बहुरि परसराम रूप धरि
क्षत्रियन्ह को नाश करत भए। बहुरि रामचंद्र रू
प धरि रावण को बध करत भए। बहुरि बलभद्र रू
प धरि हल आयुध जिन्ह कै सो बहुरि बुद्धरूप ध
रि दया बिस्तारत भए। बहुरि कल्की रूप धरि म्
लेछन को नाश करत भए। या भांति धरे है दशरू
प जिन्ह ऐसे जु श्री कृष्णजी तिन्ह कों दंडवत॥ अ
थ॥ ... राग ... श्रितकम
लाकुचमंडल धृतकुंडल ए॥ कलितललितव
नमाल जय जयदेव हरे॥ अहो देव पर
मेश्वर तुम्ह जय जुक्त होउ। सु तुम्ह कैसे हो॥ श्रा
श्रए है लक्ष्मी जी के कुचमंडल जिन। बहुरि कै
से हो। धृत धरे है मकराकृत कुंडल जिन। बहु
रि कैसे हो। कलित पहरी है ललित सुंदर बनमा
ला जिन॥ दिनमणिमंडलमंडनभव
खंडन ए॥ मुनिजनमानसहंस जयजयदेव
हरे॥ अहो देव हरि तुम्ह जय जुक्त हो
ऊ। कैसे हो तुम्ह। दिनमणिमंडल जु सूर्यमं
डल ता को मंडन आभूषण हो॥ बहुरि कैसे
हो। भव जु है जनमता कि षडन दूरि कर्ता हो॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४ बड़ुरि कैसे हो। मुनिजन जु रिषीस्वर तिनको
जु मानस हृदय ता बिषें हंस हो॥ मूल॥ कालियवि
षधरगंजन जनरंजनए॥ यदुकुलनलिनदि
नेश जय जयदेव हरे॥३॥ अर्थ॥ अहो प्रभु तुम्ह
जय जुक्त होहु। सु कैसे हो तुम्ह॥ कालियसर्प
के जीतनहार हो। बहुरि कैसे हो। जन जु हैं लो
क तिनको रंजन सुषदायक हो। बहुरि कैसे हो।
जादव बंश ही जु नलिन कमल ताको दिनेश सू
र्य हो॥ मूल॥ अमलकमलदललोचनभवमोचन
ए॥ त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे
॥४॥ अहो देव तुम्ह जय जुक्त होहु। सु कैसे हो तुम्ह।
निर्मल जु है कमलदल ता समान नेत्र जिनके।
बहुरि कैसे हो। भव कहिए संसार ताके मोचन
दूरिकर्त्ता हो। बहुरि कैसे हो। त्रिभुवन जु है त्रैलो
क्य सोई जु भुवन घर ताके निधान निधि हो
॥ मधुमुरनरकबिनाशनगरुडासनए॥ सुरकु
लकेलिनिदान जय जय देव हरे॥ अहो
प्रभु तुम्ह जय जुक्त होहु। सु कैसे हो तुम्ह। मधु दै
त्य मुर दैत्य नरकासुर इनके मारनहार हो। ब
हुरि कैसे हो॥ गरुड है आसन बाहन जिनके॥
बहुरि कैसे हो॥ सुरकुल जु है देवकुल तिनकी
जु केलि क्रीडा ताके निदान कारण हो
जनकसुताकृतभूषणजितदूषणए। समरस
मितदशकंठ जय जय देव हरे॥ अहो
देव तुम्ह जय जुक्त होहु। कैसे हो तुम्ह। जनक
सुता जु सीता जी तिनको कृत कीयो है आभू
षन जिन। बहुरि कैसे हो। जितजीत्यो है दूषण
नाम राक्षस जिन। बहुरि कैसे हो। समर संग्राम
बिषें समित मार्यो है दशकंठ रावण जिन॥ मूल॥ अ
भिनवजलधरसुंदर धृतमंदरए॥ श्रीमुखचंद्रचको
र जय जय देव हरे॥७॥ अर्थ॥ एसो अहो प्रभु तुम्ह जय
जुक्त होहु। सु कैसे हो तुम। अभिनव नूतन नव जु है ज
लधर मेघ तैसो सुंदर है बर्ण जिनको। बहुरि कैसे
हो। धृत धर्यो है मंदर पर्वत जिन। कैसे हो बहुरि श्री
जु लक्ष्मी तिनको जु मुख सो शशि चंद्रमा ताको चको
र हो॥ तवचरणप्रणता वयमिति भावय ए॥
कुरु कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे॥ अर्थ॥ श्री
जयदेव कहत है अहो प्रभु तुम्हारे चरननिको नम
स्कार करत हैं ऐसे जु शरण आए जन तिन्हको कु
शल करहु अरु जय जुक्त होहु॥ मूल॥ श्रीजयदेवक
वेरिदं कुरुते मुदं॥ मंगलमुज्ज्वलगीतियजयदेव
हरे॥ अहो प्रभु जु जयदेव कबि करि कीनो जु
है यह गीत सु सब लोकनिको कल्याणकारी है अ
रु आनंद दीकरत हैं॥ पद्मापयोधरतटीपरि
रंभलग्नकाश्मीरमुद्रितमुरो मधुसूदनस्य॥ व्य
क्तानुरागमिव खेलदनंगखेदस्वेदांबुपूरमनुपू
रयतु प्रियं वः॥ अब कबि काम उद्दीपन है
तातें बसंत रितु बर्णन कर्यो चाहत भक्तनिको आ
शीर्बाद देत हैं। मधुसूदन जी को जु बक्षस्थल सु
तुम्हारो अभिलाष पूर्न करो॥ सु कैसो है बक्षस्थल।
पद्मा जु लक्ष्मी तिनको जु आलिंगन तातें लाग्यो
जु कुंकुम ताकरि चिन्हित है सु कुंकुम कहि
आरक्त नाही मानहु। अनुरागप्रीति प्रगटल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

५ ने शहरे अनुसार कांत श्री डा तें उपजो जु श्रम कण ताको
है प्रवाह जा विषे। श्लोक॥ बसंते बासंती कुसुमसु
कुमारैरवयवैर्भ्रमंती कांतारे बहु विहित कृष्णानु
सरणं॥ अमंद कंदर्प ज्वर जनित चिंता कुलतया
बलद्बाधां राधां सरस मिदमूचे सहचरी॥२॥ अर्थ॥
कोउ एक जु राधाजी की सषी सु बसंत बिषे राधाजी
सों रस पूर्न कलह निन री॥ केसी है राधाजी। माध
वी के जु फूल तें से कोमल है अंग जिन्ह के॥ बहुरि
कैसी है राधाजी। बन बिषे फिरै है॥ बहुरि कैसी है
राधाजी॥ इती सौ बार बार श्री कृष्णजी के मिलन को
जतन करती है॥ बहुरि कैसी है राधाजी। बहुत उ
पजी जु काम पीडा तातें अति अति आकुल भई है
अथ पद॥ बसंत राग॥ ताल ॥ ल
लित लवंग लता परिशीलन कोमल मलय समी
रे॥ मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजित कु
ज कुटीरे॥ बिहरति हरिरिह सरस बसंते॥ नृ
त्यति युवति जनेन समं सखि बिरहि जनस्य
दुरंते॥१॥ ध्रु॥ एक सखी राधाजी सों कहति
है॥ अरी राधा श्री कृष्णजी अति सरस जु है ब
संतता बिषे बिहार क्रीडा करत है॥ अरु जुवती
न के समूहनि मिलि नृत्य करत है॥ सु कैसो है
बसंत। बिरही जनको दु:ष दाय करै है॥ बहुरि
कैसो बसंत। ललित मनोहर जु है लवंगन
की लता तिनको जु परिशील मिलिबो ताहि
तें परम सुखदायक बहुत है मलय पर्वत
को बायु जा बिषे। बहुरि कैसो है बसंत। भ्र
मरनि के जु समूह ता सों मिली जु कोकिला

तिनको जु कूजित शब्द करि सो जित है कुंजन
बिषे॥ मूल॥ उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूजन
जनित विलापे॥ अलिकुल संकुल कुसुम समू
ह निराकुल बकुल कलापे॥२॥ अर्थ॥ बहुरि कैसो
है बसंत। अधिक उपज्यो है मदन को अभिलाष
जिनके ऐसे पथिक बधू जन बिरहिनी तिन करि
जनित उपज्यो है बिलाप जा बिषे। बहुरि कैसो है
बसंत। अलिकुल जु है भ्रमर समूह ता करि व्या
प्त जु है कुसुम समूह तिन करि शोभित है बोलसरी
के वृक्ष जा बिषे॥ मूल॥ मृगमद सौरभ [illegible] वसं
वद नवदल माल तमाले॥ युवजन हृदय बिदा
रण मनसिज नखरुचि किंशुक जाले॥३॥
बहुरि कैसो है बसंत। मृगमद जु है कस्तूरी ता
को जु सौरभ सुगंधता को जु रभस आधिक्य ता
के बस करणहार जु है ऐसे तमाल पत्र तिन करि
शोभित है। सु कहा। नूतन जु तमाल पत्र तें कस्तू
री के गंध है जीतत है॥ बहुरि कैसो है बसंत। यु
व जनन जु है तरुन जन तिन के हृद को जु बिदार
न करत मनसिज कामता के नखनि अनुसरत
है। किंशुक जाल केसू के फूल जाल जा बिषे॥ मू
मदन महीपति कनक दंड रुचि केसर कुस
म बिकासे॥ मिलित शिलीमुख पाटलि पटल
कृत स्मर तूण बिलासे॥४॥ अर्थ॥ बहुरि कैसो
है बसंत। मदन जु महीपति राजा ता को जु
सुबर्ण को है दंड जाके ऐसो जु छत्र ता समा
न देषियत है नागकेशर के फूल जा बिषे॥
सु कहा नागकेशर के फूलन होइ कामरा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जा को रचे है मानडुं। बड़ारि कैसो है बसंत बै
ठे है ज भ्रमर जिनपर ऐसे जु पाडल के फूल तिनक
रि कीनो है काम कै तरकस को बिलास जा बि
षैं। सु कहा। पाडल के फूलन होइ काम को तरक
स है मानडुं॥ बिगलितलज्जितजगदवलो
कनतरुनकरुणकृतहासे॥ विरहिनिकृंतनकुं
तमुखाकृतिकेतकिदंतुरिताशे बड़
रि कैसो है बसंत। शिथिल है अंग जिनके ता ही तें
गइ है लाज तिनकी ऐसे जु लोक तिनको जु देषि
बो ता करि तरुण मनुष्यनि कीन्है है करुण वृक्ष
के फूलन के मिस करि हास जा बिषैं। सु कहा॥
करुण वृक्षनाहीं फूले हैं मनुष्यनि देषि तरु
ण हसत है मानडुं॥ करुणा के फूल सेत होत हैं
अरु हास कविनि सेत बर्णियत है ता तें यह उप
मा दीनी। बड़ारि कैसो है बसंत। बियोगी जु पु
रुष तिनको जु निकृंतन मारिबो ता के कारण कुं
त जु है बरछा ता के फल समान देषियत है केत
की को फूल जा बिषैं। सु कहा। केतकी को फूल
न होइ बिरहीजन मारिबे को कामदेव को बर
छा है मानडुं॥ माधविकापरिमलललि
ते नवमालतिजातिसुगंधौ॥ मुनिमनसामपि
मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ॥
बड़ारि कैसो है बसंत। माधवी के जु फूल तिन
को जु परिमल तिन करि ललित मनोहर है।
बड़ारि कैसो है बसंत। मालती के जु फूल
अरु जाइ के जु फूलनि तिनकरि सुगंध है। ब

ड़ारि। रिषिस्वरानि हू के जु मन तिनहू कौं काम
उपजावत है बड़ारि कैसो है बसंत॥ तरुण पुरु
षनि को सहज मित्र है॥ ८॥ स्फुरदतिमुक्तलता
परिरंभणमुकुलितपुलकितचूते॥ वृंदावनविपि
ने परिसरपरिगतजमुनाजलपूते॥ ९॥ बड़ा
रि कैसो है बसंत चंचल होत जु है माधवी की लता
ता को जु परिरंभण आलिंगन ता तें पुष्पित फूलो
है आंब जा बिषैं। सु फूलन होइ लता के आलि
गन तें रोमांच है मानडुं। श्रीराधाजी सौं सषी क
हति है श्रीराधा ऐसे बसंतरितु हि पाइ करि श्री
कृष्ण वृंदावन के कुंजनि बिषैं क्रीडा करत है। सु
कैसो है कुंज। निकट प्राप्त जयो जु जमुनाजल ता
करि पवित्र है॥ श्रीजयदेवकवेरिदमुदय
ति हरिचरणस्मृतसारं॥ सरसबसंतसमयब
नवर्णनमनुगतमदनविकारं॥ १०॥ श्रीजय
देव कबि को जु यह गीत सो उदय को प्राप्त होत
है। कैसो है गीत। श्रीकृष्णजी के जु चरणकमल
तिन को जु स्मरण सोई कह्यो है सार जा विषैं। ब
ड़ारि कैसो है गीत। अति सरस जु बसंत रितु ता
बिषैं कीयो जु बन वर्णन ता तें प्रगट होत है का
मबिलास जा तें॥ ॥ १॥ दरविदलितमल्ली
बल्लिचंचत्परागप्रकटितपटवासैर्वासयन्का
ननानि॥ इह हि दहति चेतः केतकीगंधबंधुः
प्रसरदसमबाणप्राणवद्गंधवाहः॥ ॥ बसं
त को जु बायु सो बिरहीन के चित्त कौं दहतु है॥
सु कहा करत। फूली जु मल्ली ता को जु परागसो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७ शीजुन्नयोग्रबीरता करिकाननजु बननाहिसुग
धकरत। कैसो है बायु। केतकीके गंधसहित है॥
बहुरि कैसो है बायु॥ पसरत है जु कामबाणाति
नको जीवहै मानहुं॥ उन्मीलन्मधुगंधलुब्ध
मधुपव्याधूतचूतांकुरक्रीडत्कोकिलकाकलीकल
कलैरुदीर्णज्वरा:॥ नीयन्ते पथिकैः कथंमपिध्याना (ध)
वधानक्षणप्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैर
मी बासरा:॥ अर्थ। बसंतके जु दिन ते कामोद्दीप
क है॥ सो ही कहत है। बसंतरितु के जु दिन तिन्ह हि
परदेश स्थित लोक ते कैसे हूं करि दु:षकरि का
टत है। सु कैसे है बसंत दिन। प्रगट भयो जु पुष्प
रस तासों लुब्ध जु भ्रमर तिन करि कंपित जु आंब की
मंजरी तिन बिषै क्रीडा करत है जु कोकिला तिनके
जु मधुर शब्द तिन्ह करि बहुत उपजत है दु:ष जि
न दिवसनि बिषै। कैसे है पथिकजन। ध्यान करि
पायो जु प्रिया संगता तें उपजत रसाधिक्य जिनको
अनेकनारीपरिरंभसंभ्रमस्फुरन्मनोहारि
बिलासलालसं॥ मुरारिमारादुपदर्शयन्त्यसौ स
खी समक्षं पुनराह राधिकां॥ बहुरि सखी
श्रीराधाजी कौं श्रीकृष्ण हि समीप दिषावति कहति
भई। कैसे है कृष्ण। अनेक जु नारी तिन कौं जु आलिं
गन ता तें उपजत जु आनंदता करि सो नमान जु बि
लासता बिषै है उत्कंठा जिनकै
करी
चंदनचर्चितनीलकले
वरपीतवसनवनमाली॥ केलिचलन्मणिकुंड
लमंडितगंडयुगस्मितशाली॥ हरिरिह मुग्धव
धूनिकरे बिलासिनि बिलसति केलिपरे
सषी कहति है अरी राधा एसा जु बसंत ता के बि

पीनपयोधरभारभरेण हरिं परिरभ्य सरागं
गोपवधूरनुगायति काचिदुदंचितपंचमरागं॥
षै सुंदरीन के जु समूह तिन्ह सों क्रीडा करत है अरु ति
न्ह हि मिलि श्रीकृष्ण क्रीड़ा करत है। सु कैसे है श्रीकृ
ष्णजी। चंदन करि चर्चित है श्याम शरीर जिन्ह को
अरु पीत है बसन जिन्ह को अरु बनमाला हि पहि
रैं है। बहुरि कैसे है श्रीकृष्णजी। क्रीडा करत चप
ल जे मणि जटित कुंडल तिन्ह करि शोभित हि
पावत जु है कपोल तिन्ह करि अरु मंद हास्य जु मु
ख का नि ता करि शोभित है॥ पीनपयोधरभार
भरेण हरिं परिरभ्य सरागं॥ गोपवधूरनुगायति का
चिदुदंचितपंचमरागं॥ सु गोपीनि की क्री
डा बरणति है राधाजी की सषी राधाजी सों सो ही क
हति है कोई एक गोपी सु पंचम राग करि गावति
है। सु कहा करि कै आलिंगन दे करि कापि
बिलासबिलोलबिलोचनखेलनजनितमनोजं॥ ध्या
यति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदनवदनसरोजं॥ स
षी कहति है अरी राधा को उ एक जु है गोपिका सो म
धुसूदन जु है श्रीकृष्णजी तिन कौ जु मुखकमल ता कौ
ध्यान करति है। सु कैसो है मुखकमल। बिलास क
रि कै बिलोल चंचल ऐसे जु बिलोचन नेत्र तिन को
षेलन जु कटाक्ष चितवनि ता करि जनित उपजायो
है मनोज कंदर्प जा मुखकमल करि करतलता
लतरलवलयावलि कलितकलस्वनवंशे॥ रा
सरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रशशंसे॥
बहुरि सषी कहति है अरी राधा को उ एक जु है
गोपी सु हरि जू करि सराही। सु कैसी है गोपी। रास को
जु रसता बिषै श्रीकृष्ण के संग नृत्य करति है। सु कैसो
है नृत्य। हस्त की जु ताली तिन करि दीने जु चंचपुट ७

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दितावतिनकेदेत चंचलनरजुकं कर्णानंक
रिमधुरनयोहै जुरुण कारताकोरिशोनतदैमु
रलीकोसदनानृत्यबिषे कल्पिकपोलततने
मिलितं लपितं किमपिश्रुतिमूले॥ चारुचुंबनि
तंबवतीदयितंपुलकैरनुकूले॥ सषी
कहतिहैअरीराधाकोऊएकजुगोपीसोश्रीकृ
ष्णजीकेकपोलबिषैं चुंबनदेतिनई॥ सुकेसो
हैकपोल॥ सात्विकभावकेजुरोमांचतिनक
रिअनुकूलनयोहै॥ केसेहैश्रीकृष्णजी। कछू
एकजुरहस्यकीबातनादिकहिबेकोंकर्ण
केनिकटप्राप्तनएहै श्लिष्यतिकामपिचु
बतिकामपिकामपिकामपिरमयतिरामं॥ पस
तिसस्मितचारुतरामपरामनुगच्छतिबामं
यापदकरिश्रीकृष्णजीकोबड़ुवल्लनताब
र्णियतहै॥ सोईसषीराधाजीसोंकहतिहैकी
ऊएकजुगोपीताहिश्रीकृष्णजीआलिंगनदेतहै॥
काहूकोंचुंबनदेतहै। काहूकोरमावतहैका
हूकोदेषिमुसकातकटाक्षकरिचितवतहै
बहुरिकाहूकेसंगउठिचलतहैऐसीन्नाति
क्रीडाकरतहै मूल॥ केलिकलाकुतकेन
चकाचिदमुंयमुनाजलकूले॥ मंजुलवंजु
लकुंजगतंबिचकर्षकरेणदुकूले॥ स
षीकहतिहैअहोराधाकोऊएकगोपीएकांतक्री
डाकेनिमित्तजमुनातटबिषेंजुबनकोबनत
हैताप्राप्तएजुश्रीकृष्णजीतिन्हहिपीतांबरप
कोरिषेंचतिनई॥ श्रीजयदेवभणितमि

दमद्भुतकेशवकेलिरहस्यं॥ बिपिनबिनो
दकलासहितंबितनोतुसुभानिजसंसा
श्रीजयदेवकबिकरिकहेजुश्रीकेशवजीकी
एकांतक्रीडासोअद्भुतहैकल्याणतिन्हकै
रो॥ सुकेसीक्रीडाहै। परमअद्भुतहै अरुबन
बिषैंजुकेलिकलाअतिचातुरीतासहितहैअ
रुजाकेसुननतजसुहोतुहै बिश्व
षामनुरंजनेनजनयन्नानंदमिंदीबरश्रेणी
श्यामलकोमलैरुपनयन्नंगैरनंगोत्सवं॥ स्व
च्छंदंव्रजसुंदरीभिरभितःप्रत्यंगमालिंगितः
श्रृंगारःसखिमूर्तिमानिवमधौमुग्धोहरिःक्री
डति सषीकहतिहैअरीराधामनोह
रजुहरितेबसंतबिषैंक्रीडाकरतहैंहरिके
सेहैमूर्तिवंतश्रृंगारहैमानहु॥ सुकहाकरत।
सत्तगोपीनुकेमनुकोअनुरंजकबचननिक
रिआनंददेतअरुनीलकमलसमानजेअं
गतिन्हकरिकामउत्सवदृढबढावतक्रीडतहै
अध्यात्संगवसद्भुजंगकवलक्लेशादिवे
शाचलंप्रालेयप्लवनेच्छयानुसरतिश्रीषंडशैला
निलः॥ किंचित्स्निग्धरसालमौलिमुकुलान्या
लोक्यहर्षोदयादुन्मीलंतिकुहूःकुहूरितिकल
लोत्ताला पिकानांगिरः अबपाछेंजु
कह्योबसंतरितुताहिश्रीराधाजीकेआगेसषी
बर्ननितिहै॥ अरीराधादेषिआजुमलयपर्ब
ततेंनिकटसबुतेंजेसर्पतिन्हकरिकीनोदैपा
नजाकोताहीतेंनयो जुसंतापताहिदूरिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२ रिबेकोंमलयबायुकैलासपर्बतकेहिममे
तरिबेकोंमलयबायुकैलासप रक्षाकरि
आवतुहै अर्थकहा जुत्रिबिधिपवनबह
तुहै॥ औरफुनिअतिसुंदर जुआंबकेबौ
रतिन्हहिदेषिनयोहै अतिअधिकहर्षजि
न्हकेंऐसेजुकोकिलमधुरअरुउत्ताइल
कुहूकुहूरसोशब्दबोलतहैं ॥ रासो
ल्लासभरेणबिभ्रमभृतामाभीरबामभ्रु
वामभ्यर्णेपरिरभ्यनिर्भरमुरः प्रेमांधया
राधया॥ साधुत्वद्वचनंसुधामयमितिव्या
हृत्यगीतस्तुतिव्याजादुद्भटचुंबितःस्मितम
नोहारीहरिःपातुवः॥ कविकथाकौ
प्रसंगछोडिकरिलोकनकोंआसीर्बाददे
तुहै॥श्रीकृष्णतुम्हारीरक्षाकरहुकैसेहैश्री
कृष्णजीरासबिषेजुउत्साहतामैंगोपीनके
समूहहठआलिंगनदेकरिश्रीराधाजीकौ
नोहैचुंबनजिन्हकोबहुरिकैसेहैकृष्ण
जीमंदहास्यकरिमनहरतहैं
बिहरतिब
ने राधासाधारणप्रणयेहरौबिगलितनिजोत्क
र्षादीर्ष्याबशेनगतान्यतः॥ क्वचिदपिल
ताकुंजेगुंज[illegible]धुब्रतमंडलीमुखरसिखरे
लीनादीनाप्युबाचरहःसखीं॥ श्री
राधाजीएकांतबिषेंपधारिसषीसौंकहतिहै।
कैसीहैराधा।राधाजीसौंअरुगोपीनसौंस
मानप्रेमकरिश्रीकृष्णकेंबिहारकरतभ

ईजुआपनेसुहागकीहानिलतातैंषिजिकरि
औरठौरपधारीहैंताहीतेंकुंजनिमैंदूरिबैठ
हैं॥सुकैसोकुंज॥बोलतजुपक्षीअरुगुंजतजु
भ्रमरसमूहतिन्हकरिशोभतहैं॥बहुरिकै
सीहैराधाजी॥भईजुमानहानिताततेंअतिदीन
[illegible]
भईहै।
संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमो
हनबंसं॥चलितदृगंचलचंचलमौलिक
पोलबिलोलवतंसं॥रासेहरिमिहबिहितबि
लासं।स्मरतिमनोममकृतपरिहासं॥
अबराधाजीएकांतबिषैआपनीसषी
सौंकहतिहैअरीसषीऐसेजुहरितिनकौंमे
रोमनुस्मरतुहै।कैसेहैहरि।रासक्रीडाबिषे
कीन्हेहैबिलासजिन।बहुरिकृतकीनौ
हैपरिहासहास्यजिन्ह।बहुरिःप्रसरतहै
अधरामृतजाकेविषेंऐसोजुमधुरशब्दताक
रिबजायोहैमोहनकारीबंसीजिन।बहु०॥
चंचलहैतंजुकटाक्षतिनसौंमिलेचंचलहै
तहैंमस्तकअरुकपोलजिनके।कैसेहैकपोल।
चंचलहैंअवतंसकर्णाभरणजाकपोलबि
षै चंद्रकचारुमयूरशिखंडकमंडलब
लयितकेशं॥प्रचुरपुरंदरधनुरनुरंजितमेदु
रमुदिरसुवेशं॥ बहुरिकैसेहैहरि।
अतिबिचित्रजुहैमयूरचंद्रिकातिनकोजुमं
डलसमूहतिनकरिबेष्टितहैकेशतिनके।
र्थयहुजुमुकटपहिरेहै।ताहीकरिइंद्रध
षसहितअतिस्निग्धजुहैमेघतासमानबेषजि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

१०

नैकि॰ ॥ गोपकदंबनितंबवती मुखचुंबन
लंभितलोभं ॥ बंधुजीवमधुराधरपल्लवमुल्लसि
तस्मितशोभं ॥ ३ ॥ बड॰ हरि कैसे है हरि । गोपक
दंब जु ग्वालन को समूह तिनकी जु नितंबव
ती स्त्री तिनको जु मुख तिनको जु चुंबनता बिषै
बांध्यो है लोभ जिन । बड॰ । बंधुजीव जु है दुपह
रिया को फूल तासमान आरक्त है अधर जिन
के । बड॰ प्रगट भयो जु मंद हास्य ता करि शोभ
त है ॥ ४ ॥ विपुलपुलकभुजपल्लववलयितब
ल्लवयुवतिसहस्रं ॥ करचरणोरसिमणिगणभू
षणकिरणविभिन्नतमिस्रं ॥ ॥ बड॰ हरि कैसे
है हरि । बड॰ भए हैं रोमांच जिन बिषैं ऐसे जु हस्त
कमल तिन करि आलिंगी है गोपी सहस्र जिन क
रि । बड॰ हस्तन बिषैं चरनन बिषैं अरु हृदै बि
षैं पहिरे हैं जु मणिजटित आभूषण तिनकी जु
कांति ता करि दूरि कीनो है अंधकार जिन ॥ ॥
जलदपटलचलदिंदुविनिंदकचंदनतिल
कललाटं ॥ पीनपयोधरपरिसरमर्द्दननिर्द्दयहृ
दयकपाटं ॥ ॥ बड॰ हरि कैसे है हरि । जल
दपटल जु है मेघसमूह ता बिषैं प्राप्त जु है नंद
माता की शोभा को जीतनहार ऐसो जु है चं
दनतिलक सो है ललाट बिषैं जिनकों गोपिक
नके जु अति स्थूल स्तन तिनको जु परिसरमर्द्द
न जु गाढ आलिंगन ता बिषैं निर्दय है हृदया क
रि रह्यो हृदय जिनको ॥ ॥ मणिमयमकर
मनोहरकुंडलमंडितगंडमुदारं ॥ पीतबसन

— हरि कैसे है हरि

मनुगतमुनिमनुजसुरासुरवरपरिवारं ॥
॥ ॥ बड॰ हरि कैसे है हरि । मणिमय जु मकराकृ
त कुंडल तिन करि शोभायमान है अति सुंदर कपोल
जिनके । बड॰ पीत है बस्त्र जिनको । बड॰ अनु
गत सेवा करत है ऐसे जु ऋषीस्वर अरु मनुष्य सुर
देवता असुर दैत्य नेई है परिवार सेवक जिन
के ॥ ॥ विशदकदंबतलेमिलितं कलिकलुष
भयं शमयंतं ॥ मामपि किमपि तरंगदनंगदृशा
मनसा रमयंतं ॥ ॥ बड॰ हरि कैसे है हरि । बि
शद निर्मल जु है कदंब वृक्ष ता के तरें बैठे है । ब
ड॰ कलि जु गके जु है पाप तिनके डर कों हरत है ।
बड॰ राधाजी कहति है अरी सखी मोकों अति
अद्भुत प्रगट होत है कामजा ऐसी जु दृष्टि अरु म
नता करि रमावत है ॥ ॥ श्रीजयदेवभणितमम
तिसुंदरमोहनमधुरिपुरूपं ॥ हरिचरणस्मर
णं प्रति संप्रति पुण्यवतामनुरूपं ॥ ॥ कह
त है श्रीजयदेव करि कह्यो जु यह गीत सो भक्तन
कों श्रीकृष्णचरणस्मरण कराइबे कों जोग्य है
॥ सु कैसो है गीत । अति सुंदर है । बड॰ परम
मनोहर है । बड॰ कह्यो है मधुरिपु श्रीकृष्ण को
रूप जा बिषैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ पद ॥
॥ गणयति गुणग्राममं भ्राममं भ्रमाद
पि नेहते वहति च परीतोषं दोषं विमुंचति दूर
तः ॥ युवतिषु वलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां वि
ना पुनरपि मनो वामं कामं करोति करोमि किं ॥ १ ॥
अब श्रीराधाजी कौं जु है कृष्णजू की मि
लिबे की उत्कंठा ता तें सखी सों कहति है मेरा मन

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नमे रहै थे नहीं के हैं करौ। अरी सखी मेरो
मन अनंद श्री कृष्णजी कै बिषै इछा करतु है
जद्यपि वे मोहि बिनु बिहार करत हैं अरु स्त्री
रनु युवतीन सौं आह करत हैं तथापि पत
है ही मेरो मनु चाहत है कै इछा करौ। अरु उन्ह
ही के गुणनि गनिबो करत है। अरु मेरु की
उन्ह दोष लखत नाहीं। अरु उन्ह के गुण सुनेतन सं
तोष पावतु है। अरु उन्ह मेरो अपमान रूप जु अपरा
ध कीनो ताहि दूरि करै डारतु है। तातें री सखी हौं क
हा करौं मेरो मनु मेरे बस नहीं तातें आगिली अ
ष्टपदी करि सखी सौं कहति हैं जु मोसौं मिलन
होइ सु जतनु करि ॥ अष्ट ॥ छ पद ॥
... ल ॥ मूल ॥ निभृतनिकुंजगृहं गत
या निशि रहसि निलीय वसंतं ॥ चकितविलो
कितसकलदिशा रतिरभसरसेन हसंतं ॥ सखि
हे केशिमथनमुदारं ॥ रमय मया सह मदनमनो
रथभावितया सविकारं ॥ ध्रु० ॥ राधाजी
कहति है अरी सषी। केशीमथन जु श्री कृष्ण तिन्ह
हिं मोसौं क्रीडा करवाइ ॥ कैसे हैं श्री कृष्णजी। स
यौ है कामबिकार जिनके हौं कैसी हौं। एकांत
बिषै जु है कुंज गृह तहां प्राप्त भई हौं। कैसे है कृ
ष्ण। रात्रि बिषै एकांत स्थल बिषै दुरि रहत हौं के
सी हौं हौं। नयपूर्वक चारि हूं दिशानि देषति हैं ॥
बहुरि कैसे हैं कृष्णजी। रति जु है केलि ता बिषै जु
रस सहज सौं है ताके बस करि हंसत हैं। बहु
रि हौं कैसी हौं कामजनित जु बिकार ताके बस
भई हौं ॥ ... प्रथमसमागमलज्जितया प

शीथि ॥ चटुचाटुशतैरनुकूलं ॥ मृदुमधुरस्मितभा
षितया शिथिलीकृतजघनदुकूलं ॥ सखि ॥ २ ॥ राधा
जी कहति हैं हौं कैसी हौं। प्रथम जु समागम मिल
न ता तें भई है लाज जाके। कैसे हैं श्री कृष्णजी। प्रि
य जु है मीठे बोलनि तिनकरि मेरी लाज छुडाई। बहु
को अनुकूल भए हैं। बहुरि हौं कैसी हौं। मृदु कहि
ए कोमल ऐसे जु मधुर बचन तिनकरि बोलति हौं ॥
कैसे हैं कृष्णजी। मेरी बात सुनि शिथिल ढीलो कीनो
है कटि को बस्त्र जिन ॥ मूल ॥ किशलयशयननिवेशितया २५
चिरमुरसि ममैव शयानं ॥ कृतपरिरंभणचुंबनया
परिरभ्य कृताधरपानं ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ बहुरि हौं कैसी हौं ॥
श्री कृष्णजी करि किशलय जु है कोमल पत्र तिन
की जु सेज ता बिषै पौढी हौं। कैसे हैं कृष्णजी। चिरका
ल बहुत काल पर्यंत मेरे बक्षस्थल बिषै सैन करत
हैं। बहुरि हौं कैसी हौं। कृत कीनो है आलिंगन अरु
चुंबन जाकरि। कैसे हैं कृष्ण जी। आलिंगन दे
करि कीनो है अधरपान जिन ॥ मू ॥ अलसनिमी
लितलोचनया पुलकावलिललितकपोलं ॥ श्रमज
लसिक्तकलेवरया वरमदनमदादतिलोलं ॥ ४ ॥ अर्थ
राधाजी कहति हैं हौं कैसी हौं। आलस करि मूंदे हैं लो
चन जिन। कैसे हैं श्री कृष्णजी पुलकावलि जु है रोमा
वनकी पांति तिनकरि मनोहर है कपोल जिनके।
बहुरि हौं कैसी हौं। श्रमजल जु है प्रस्वेद ताकरि सी
चो है कलेवर शरीर जाको। बहुरि कैसे हैं कृष्ण
जी। वर श्रेष्ठ जु है काम तातें उपज्यो जु मद ताकरि
अति चंचल हैं ॥ मूल ॥ कोकिलकलरवकूजितया
जितमनसिजतंत्रविचारं ॥ श्लथकुसुमाकुल
कुंतलया नखलिखितघनस्तनभारं ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२ हौंकैसीहो। कोकिलाकोजुमधुरशब्दतैसोहैकू
जितजाकौ। कैसेहैश्रीकृष्णजी। जितजीतौ
हैकामशास्त्रजिनबहुरिकैसीहौहो। शिथिलज
एहैफूलनिकरिशोभमानकेशजाके। बहुरिकै
सेहैकृष्णजी। नखनिकारचिन्हितकीनेहैंस्थूलमे
हैस्तनजिन्हकरि॥मूल॥चरणरणितमणिनूपुर
यापरिपूरितसुरतबितानं॥मुखरविश्रृंखलमे
खलयासकचग्रहचुंबनदानं   हौंकैसी
हौ। चरननिबिषेरणितशब्दकरतहैमणिजटित
नूपुरजाकेंकैसेहैकृष्णजी। पूर्नकीनोहैसुरतके
लिसमूहजिनबहुरिकैसीहौहो। मुखरशब्दकर
तिहैछूटीहैमेखलाजाकी। बहुरिकैसेहैश्रीकृष्ण
जी। केशपकरिदीनोहैचुंबजिन॥   रतिसुखस
मयरसालसयादरमुकुलितनयनसरोजं॥निःस
हनिपतिततनुलतयामधुसूदनमुदितमनोजं।
अर्थ हौंकैसीहौ। रतिसुखसमयजुहैसुरतकोसु
मयतातिषैजुप्रीतितातैंउपज्योहैआलसजाकैं। कै
सेहैश्रीकृष्णजी। कछुएकमुकुलितकहैप्रफुल्लि
तनएहैनेत्रकमलजिनके। बहुरिहौंकैसीहौ। निः
सहअसमर्थजाहीतैंनिपतितपरीहैशरीरलता
जाकी। बहुरिकैसेहैकृष्णजी। उदितकहैप्रगट
कीयोहैमनोजकामजिनको।   श्रीजयदेव
भणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुबनशीलं॥सु
खमुत्कंठितगोपबधूकथितंबितनोतुसलीलं॥
अर्थ श्रीजयदेवकरिबर्णितजुहैयहगीतसोश्रो
तनिकौसुखदाताहोउ। सुकैसोहैगीत। मधुरि
पुजुहैश्रीकृष्णजी तिनकोजुनिधुबनसुरतसु
बर्णीहैजाबिषैं। बहुरिकैसोहैगीत। लीलास
हितजोहै

सो॥ हस्तस्रस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लिमद्
ल्लवीवृन्दोत्सारिदृगंतवीक्षितमतिस्वेदार्द्रगंड
स्थलं॥ मामुद्वीक्ष्यविलज्जितस्मितसुधामुग्धानन
काननेगोविंदव्रजसुंदरीगणवृतंपश्यामिहृष्या
मिच॥१॥अर्थ राधाजीकहतिहैअरीसषीश्रीगोवि
दजीकोदेषतिहौंअरुहर्षपावतिहौ। सुकैसेहै
श्रीकृष्णजी। वृंदाबनबिषैघजसुंदरीजुगोपीति
न्हसहितहैं। बहुरिकैसेहैगोबिंदजी। मोहितेषि
करिगिरीहैमुरलीजिनकी। बहुरिकैसेहैश्रीगोबि
दजी। कुटिलहैंजोहजिन्हकीएसीजुगोपिकाति
न्हकीओरकटाक्षकरिचितवतहैं। बहुरिकैसेहैं
श्रीगोबिंदजी। प्रस्वेदकरिआर्द्रहैकपोलजिन्हके।
बहुरिकैसेहैश्रीगोबिंदजी। लाजसहितजुमंदहा
स्यताकरिशोभतहैमुखजिनको।   दुराली
कस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिकाबिकाशकां
सारोपवनपवनोपिव्यथयति। अपिभ्राम्यद्भृंगी
रणितरमणीयानमुकुलप्रसूतिश्चूतानांसखि
शिखरिणीयंसुखयति॥   अर्थ श्रीराधाजीकहि
तिहैअरीसषीबियोगिननिकोदुःखजनककएसी
जुअशोककीलतातााकोजुबिकासफूलिबोसोमो
हिदुःखदेतहै। अरुसरोवरकोजुपवनसुफान
पीडाकरतुहै। बहुतकहाकहौंआंबकीजुमं
जरीसुअतिसंतापहिकरतिहैसुमंजरीकैसी
हैं। सुबासतेनिकटगुंजारवकरतिहैजुभ्रमरी
तिन्हकरिशोभतहैअग्रजिनको॥साकू
तस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासितभ्रू
बल्लीकमलीकदर्शितभुजाबालार्धहस्तस्तनं॥
गोपीनांनिभृतंनिरीक्ष्यदयिताकांक्षिरींचि
तयनस्रतमुग्धमनोहरोहरतुबःक्लेशांनव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२ केशवका ॥ अथ ॥ बहुमरुणानुकेशवजू तेश्रकि
निकेकु खहिहरकु सुकैसे है केशवजू गोपि
कानकोजुगुप्तभावतादि प्रिय करिकोऊएक
जुप्रियातादिमनाविषेस्मरतहैं। बङु ॥ सु
दरश्ररु मोहनहैं। गोपिकानिकोगुप्तभावकै
सोहै। चितकीवातनिप्रगटकरतुहैमंदहा
सजामें। बङुरिकैसोहैगुप्तभाव। छूटैहैकेश
पाशविषैबङुरिकैसोहैगुप्तभाव। ऊंचेचढी
हैनौहजाविषैबङुरिकैसोहैगुप्तभाव। मिस
करिदिषाएहैं भुजाश्ररुश्राधेहस्तश्रगजावि
षै ॥ ... ॥ ... क
सारिरपिसंसारबासनाबंधश्टंखलां ॥ राधा
माधायहृदयेतत्याजव्रजसुंदरी ॥ ... राधा
जीकोविरहकह्योश्रबश्रीकृष्णजीकोविरह
बर्नतहैं। सोईकहतहैं। श्रीकृष्णराधाजीकूं
हृदयविषैराषिकरिव्रजसुंदरीजुगोपीति
नकोछोडतभए। कैसीहैराधाजी। संसारवि
षैजुवासनातादिबांधिवेकोश्टंखलाहै
क ॥ इतस्ततस्तामनुसृत्यराधिकामनंगबाण
व्रणखिन्नमानसः ॥ कृतानुतापःसकलिंदन
दिनीतटांतकुंजेविषसादमाधवः ॥
तेजुहैमाधवजीसुजमुनातटाकेकुंजनतहांवे
ठतभए। सुकहाकरिके। श्रनेकठौरनिश्री
राधाजीकोंसोधिकरि। कैसेहैमाधवजी। का
मबाणकेजुलगेघावतिन्हकरिदुःषितहैमन
जिनको। बङुरिकैसेहैमाधवजी। कीयोहैप
श्चातापजिनसोईपुछितावो श्रागेश्रष्टपदी
करिप्रगटकीजतुहै ॥
मूल ॥ मामियंचलिताविलोक्यवृतंबधूनि

चयेन ॥ सापराधतयामयापिनवारितातित
येन ॥ हरिहरिहतादरतयागतासाकुपिते
व ॥ ... ॥ श्रीकृष्णकहतहैं। यहजुहेरा
धासोमोहिबङुतगोपीनकेझुंडमेंदेषिकरि
रूतिचली श्ररुकीनोजुराधिकाकोश्रपराध
ताहीतेंडरपिकेमैंहूंनबरजी। ताहीतेंघ्यो।
जुश्रादरतातेंश्रीकृष्णकहतहैंहरिहरिबङु
तकष्टपाइराधाषिझिगई ॥ मूल ॥ किंकरिष्य
तिकिंवदिष्यतिसाचिरंविरहेण ॥ किंधनेनज
नेनकिंममजीवितेनगृहेन ॥ २ ॥ श्रर्थ ॥ श्रीकृष्णक
हतहैं। वहराधाचिरकालपर्यंतजोविरहतौकै
रिकहाधौंकरेगीश्ररुकिंवदिष्यतिकहाकहेगी है
श्ररुमोकोंवाराधाबिनुकिधनेनधनसोंकहाका
म। श्ररुजनेनकिंलोकनिसौंकहाकाम। श्ररु
मेरेजीवनकरिकहा श्ररुमोहिगृहसोंकहा
काम। वाराधाहिबिनुएसबनिःफल ॥ मूल ॥ चिं
तयामितदाननंकुटिलभ्रुकोपभरेण ॥ शोण
पद्ममिवोपरिभ्रमताकुलंभ्रमरेण ॥ ३ ॥ श्रर्थ ॥
श्रीकृष्णकहतहैंहौंराधाकोजुमुखताकौस्म
रणाकरतहौं। सुकैसोहैमुख। श्ररुतक्रोधतें
कुटिलभईहैजोभौंहजाविषैंसुकैसोदेषियत
हैऊपरफिरतहैभ्रमरजाकैएसोजुश्रारक्तक
मलहैमानङु। यहुउपमाया। तजुक्रोधतेंनेत्र
लालभएहैंश्ररुभौंहसामहैं ॥ मूल ॥ तामहं
हृदिसंगतामनिशंभृशंरमयामि ॥ किंवने
नुसरामितामिहकिंवृथाविलपामि ॥ ... श्रथ ॥
श्रीकृष्णजीकहतहैंवहराधामेरेहृदेहीमें
तरहैंबारबाररमाऊंश्ररुहांबनमेंहिबा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२ हौंकैसीहौं। कोकिलाकोजुमधुरशब्दतैसोहैकू
जितव्याहूजाको। कैसेहै श्रीकृष्णजी। जितजीतौ
हैकामशास्त्रजिनबहुरिकैसीहौहौं। शिथिलज
एहैफूलनिकरिशोभमानकेशजाके। बहुरिकै
सेहैकृष्णजी। नखनिकरिचिन्हितकीनेहैस्थूलमे
रैस्तनजिन्हकरि॥मूल॥ चरणरणितमणिनूपुर
यांपरिपूरितसुरतवितानं। मुखरविशृंखलमे
खलयासकचग्रहचुंबनदानं हौंकैसी
हौं। चरननिविषैरणितशब्दकरतहैमणिजटित
नूपुरजाकेकैसेहैकृष्णजी। पूर्नकीनोहैसुरतके
लिसमूहजिनबहुरिकैसीहौंहौं। मुखरशब्दकर
तिहैछूटीहैमेखलाजाकी। बहुरिकैसेहैश्रीकृष्ण
जी। केशपकरिदीनोहैचुंबनजिन॥ रतिसुखस
मयरसालसयादरमुकुलितनयनसरोजं॥ निःस
हनिपतिततनुलतयामधुसूदनमुदितमनोजं।
॥टी॥ हौंकैसीहौं। रतिसुखसमयजुहैसुरतकोस
मयोताविषैजुप्रीतितातैउपजोहैआलसजाकैकै
सैहैश्रीकृष्णजी। कछूएकमुकुलितकहैप्रफुल्लि
तनएहैनेत्रकमलजिनके। बहुरिहौंकैसीहौं। निः
सहअसमर्थजाहीतैंनिपतितपरीहैशरीरलता
जाकी। बहुरिकैसेहैकृष्णजी उदितकहैप्रगट
कीयोहैमनोजकामजिनको। श्रीजयदेव
भणितमिदमतिशयमधुरिपुनिधुवनशीलं॥ सु
खमुत्कंठितगोपवधूकथितंवितनोतुसलीलं॥
॥टी॥ श्रीजयदेवकरिवर्णितजुहैयहगीतसोश्रो
तानिकोसुखदाताहोउ। सुकैसोहैगीत। मधुरि
पुजुहैश्रीकृष्णजीतिनकोजुनिधुवनसुरतसु
वर्णितहैजाविषैं। बहुरिकैसोहैगीत। लीलास
हितजोहै

॥मूल॥ हस्तस्रस्तविलासवंशमनृजुभ्रूवल्लिमद्
ल्लवीवृन्दोत्सारिदृगंतवीक्षितमतिस्वेदार्द्रगंड
स्थलं॥ मामुद्वीक्ष्यविलज्जितस्मितसुधामुग्धाननं
काननेगोविंदंव्रजसुंदरीगणवृतंपश्यामिहृष्या
मिच॥१॥टी॥ श्रीराधाजीकहतिहैअरीसखीश्रीगोवि
दजीकोदेषतिहौंअरुहर्षपावतिहौं। सुकैसेहै
श्रीकृष्णजी। वृंदावनविषैघरीसुंदरीजुगोपीति
न्हसहितहैं। बहुरिकैसेहैगोविंदजी। मोहिदेषि
करिगिरीहैमुरलीजिनकी। बहुरिकैसेहैश्रीगोवि
दजी। कुटिलहैंत्योहजिन्हकीऐसीजुगोपिकाति
न्हकीओरकटाक्षकरिचितवतहैं। बहुरिकैसेहैं
श्रीगोविंदजी। प्रस्वेदकरिआर्द्रहैकपोलजिन्हके।
बहुरिकैसेहैश्रीगोविंदजी। लाजसहितजुमंदहा
स्यताकरियोभतहैमुखजिनको। ॥मूल॥ दुरालो
कस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिकाविकासः का
सारोपवनपवनोपिव्यथयति। अपिभ्राम्यद्भृंगी
रणितरमणीयानमुकुलप्रसूतिश्चूतानांसखि
शिखरिणीयंसुखयति॥ ॥टी॥ श्रीराधाजीकहे
तिहैं अरीसखीबियोगिजननिकौंदुःखदायकऐसी
जुअशोककीलतातांकोजुविकासफूलिबोसोमो
हिदुःखदेतुहै। अरुसरोवरकोजुपवनसुफ़ान
पीडाकरतुहै। बहुतकहाकहौंआंबकीजुमं
जरीसुअतिसंतापहिकरतिहै सुमंजरीकैसी
हैं। सुबासतैंनिकटगुंजारवकरतिहैजुभ्रमरी
तिन्हकरिशोभतहैअग्रजिनको॥मूल॥ साकू
तस्मितमाकुलाकुलगलद्धम्मिल्लमुल्लासितभ्रू
वल्लीकमलीकदर्शितभुजाबालार्धहस्तस्तनं॥
गोपीनांनिभृतंनिरीक्ष्यदयितांकांक्षिश्चिरंचि
तयन्नतमुग्धमनोहरोहरतुवःक्लेशानव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२ केशव ॥ अर्थ ॥ तुम्हारा जु केशव जू तें अति
निकेतु सहित हरकौ सु कैसे है केशव जू गोपि
कानकों जु गुप्त भावना तिन्हें देषिकरि कोऊ एक
जु प्रियाता हिमन बिषे स्मरत है। बहुरि ॥ सु
दर अरु मोहन है। गोपिकानि के गुप्त भाव के
सो है। चित्त की बातनि प्रगट करतु है मंद हा
स जामें। बहुरि कैसो है गुप्त भाव। छूटे है केश
पाश जा बिषे बहुरि कैसो है गुप्त भाव। ऊंचे चढी
है भौंह जा बिषे बहुरि कैसो है गुप्त भाव। मिस
करि दिषाए है भुजा अरु आधे ढके अंग जा बि
षे ॥ ... ॥ ... क
सारि रि ... संसार बासना बंधश्रृंखलां ॥ राधा
माधाय हृदये तत्याज ब्रजसुंदरी ॥ राधा
जी को विरह कह्यो अब श्री कृष्ण जी कौ विरह
बर्नत हैं। सोइ कहत हैं। श्री कृष्ण राधा जी कौं
हृदय बिषे राषिकरि ब्रजसुंदरी जु गोपी ति
नकौं छोडत भए। कैसी है राधा जी। संसार बि
षै जु बासना ता हि बांधिबे कौं श्रृंखला है
॥ इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनंगबाण
व्रणषिन्नमानसः ॥ कृतानुतापः स कलिंद न
न्दिनी तटांत कुंजे निषसाद माधवः ॥
तें जु है माधव जी सु जमुना तटा के कुंजन हां बै
ठत भए। सु कहा करि कै। अनेक ठौरनि श्री
राधा जी कौं सोधि करि। कैसे है माधव जी। का
म बाण के जु लगे घाव तिन्हकरि दुःषित है मन
जिनको। बहुरि कैसे है माधव जी। कीयो है प
श्चाताप जिन सो ई पुछितावो आगे अष्टपदी
करि प्रगट कीजतु है ॥
मूल ॥ मामियं चलिता बिलोक्य वृतं वधूनि

चयेन ॥ सापराधतया मयापि न वारितातिभ
येन ॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ॥ १ ॥ ... ॥ श्री कृष्ण कहत हैं। यह जु है रा
धा सो मोहि बहुत गोपीन के झुंड में देषि करि
रूसि चली अरु कीनौ जु राधिका को अपराध
ता ही तें डराय के मैं न बरजी। ता ही तें चली।
जु आदर ताते श्री कृष्ण कहत हैं हरि हरि बहु
त कष्ट पाइ राधा षिझि गई ॥ मूल ॥ किं करिष्य
ति किं वदिष्यति सा चिरं विरहेण ॥ किं धनेन ज
नेन किं मम जीवितेन गृहेण ॥ २ ॥ अर्थ ॥ श्री कृष्ण क
हत हैं। वह राधा चिरकाल पर्यंत जो निरहतौ कि
रि कहा धौं करेगी अरु किं वदिष्यति कहा कहेगी
अरु मो कौं वा राधा बिनु किं धन ने न धन सौं कहा का
म। अरु जन ने न कि लोकनि सौं कहा काम। अरु
मेरे जीवन करि कहा अरु मो गृह सौं कहा
काम। वा राधा हि बिनु ए सब निःफल ॥ मूल ॥ चिं
तयामि तदाननं कुटिल भ्रु रोषभरेण ॥ शोण
पद्ममिवोपरि भ्रमताकुलं भ्रमरेण ॥ ३ ॥ अर्थ ॥
श्री कृष्ण कहत है हौं राधा कौ जु मुख ता कौ स्म
रण करत हौं। सु कैसो है मुख। अत्यंत क्रोध तें
कुटिल भई है भौंह जा बिषे सु कैसो दीषियत
है ऊपर फिरत है भ्रमर जाके ऐसो जु आरक्त क
मल है मानहु। यह उपमा याते जु क्रोध ते नेत्र
लाल भए हैं अरु भौंह स्याम है ॥ मूल ॥ तामहं
हृदि संगतामनिशं भृशं रमयामि ॥ किं वने
नुसरामि तामिह किं वृथा विलपामि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥
श्री कृष्ण जी कहत हैं वह राधा मेरो हृदै ही मैं
तर है बारबार रमाऊं अरु हां बन मांहि बा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पको॥ मूल। दृश्यसे दूरतो गता जत अवश्यं दिवा

१४ दृहीकाहेकैंसोधौंअरुकाहेकौंबिंदधासिकिं
पुरेवसंसंभ्रमपरिरंभणानदटासि॥५॥अ॥अ
बश्रीकृष्णजीराधाहिमिलिबेकीअतिउत्कंठाता
तैंश्रीराधाजीकोंआगेदेषतसेकहतहैं।अरीराधा
तूमेरेंआगेआवतितातिसीदेषिजतिहैंपरिहै
सोपहलेंआदरसूर्वकआलिंगनदेतीतेसैंअब
क्यानदेहि॥मूल॥तन्वि खिन्नमसूयया हृदयंतवा
कलयामि।तन्न बेद्मि कुतो गतासि न तेन तेऽनु
नयामि॥६॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीकहतहैं।अहोरा
धेतुम्हारोहृदयक्रोधकरिखिन्नयोजानतहौंअरु
हूंसरेयहजानतुनांहीतुकितगईहोताहीतैंना
हीमनावतु॥मूल॥ दृग्पतामपरां कदापि तवे
क्षणं न करोमि॥देहिसुंदरि दर्शनं मम मन्मथे
न दुनोमि॥७॥अर्थ।श्रीकृष्णकहतहैंअरीराधा
यहजुमोतैंअपराधपरयौताकीक्षमाकरहु।
बहुरितुम्हारोएसोअपराधनैकनकरिहौंअ
वकीबारअपराधदूरिकरिकेदर्शनदेहु।हे
कामकरिदुःषपावतहौं॥मूल॥ वर्णितं जय
देवकेन हरेरिदं प्रणतेन॥किंदुबिल्वसमु
द्रसंभवरोहिणीरमणेन॥८॥अर्थ॥कहतहैं
यहगीतजयदेवकविकरिवर्ण्यौ।कैसेहैंजय
देवकवि।श्रीहरिकोकीनौहैनमस्कारजिन।
सुकैसेहैंजयदेवकबि।किंदुबिल्वहैनामजा
कोएसोजुगावतातेंप्रगटभयेरोहिणीरमण
चंद्रमाहैमानो॥इतिश्री ...
... ॥७॥श्लोक॥ भ्रूपल्लवं धनुरपां

गतरंगतानि बाणा गुणः श्रवणपालिरिति स्मरेण॥
तस्यामनंगजयजंगमदेवतायामस्त्राणि निर्जित
जगंति किमर्पितानि॥१॥अर्थ॥श्रीकृष्णजीकेविर
हाधिकावर्णतहैंसोइकतहैं।श्रीराधाजीकोम
नकुंबिश्वसंकोवसरावकरिकैकामआपनेअस्त्र
सौंपेसुकैसीहैश्रीराधाजी।अनंगजुकंदर्पता
हिजयदेनकौंदेवतारूपहैताततेंजैसेकोऊदे
वताप्रसंन्नहोइकरिकाहूकोंअस्त्रदेइबहुरि
वहपुरुषआपनोकार्जसिद्धकरि...
ताहीदेवताहिअस्त्रसौंपेतैसैंमानहुकामदेव
श्रीराधाजीकोंअस्त्रसौंपेहैं।सुकहा...
हतहैं।जोहतोधनुषअरुकाणकौं...
चाकहिजैधनुषकीजिहअरुकटाक्षकारचित
वनितेइबाण॥श्लोक॥हृदि बिशलताहारो नायं
भुजंगमनायकः कुवलयदलश्रेणी कंठे न सा गर
लद्युतिः॥मलयजरजो नेदं भस्म प्रियारहिते मयि
प्रहर न हरभ्रांत्यानंग क्रुधा किमु धावसि॥२॥अ
र्थ॥श्रीकृष्णजीकहतहैंअनंगमहादेवकोभ्रम
करिकेंमोहिप्रहारकरिबेकोंकाहेकोंकुद्धकै
रतुहै।नोसोंबैरुहैमहादेवसौंउन्हकेधोषें
मोहिकाहेकोमारतुहै।सुधोषोदूरिकरतहैं॥
प्रियाकेरिरहितनयातातेंबिरहाग्निसंताप
दूरिकरिबेकोमैकमलनिकैजुकोमलनाल
तिनकीमालापहिरीहैयहसर्पमतिजान
हिअरुकंठबिषकुमुदिनीकेदलहैतिन्ह
हिबिषकीनी।लिमामतिजानहिअरुकामे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८५ सताएनिवारिबेकौं मैं अगचंदनकी षोरिकरी है
ताहिलखनमतिजानहिं जातैं मेरै मनमैं धोषो
है सुदूरिकरि मोहि निरापराधस्मितिसतावहि॥
॥ पाणोमाकुरुत्रूलसायकमनुमाचापमारो
पयत्क्रीडानिर्जितविश्वमूर्छितजनाघातेनकिंपौ
रुषं॥ तस्याएवमृगीदृशोमनसिजप्रेंखत्कटाक्षा
नलश्रेणीजर्जरितंमनागपिमनोनाद्यापिसंधुक्ष
ते॥ ॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कहत हैं बिनाहीं कष्ट जी लि
है विश्वजिन एसे कामदेव यद्यपि आंबके फूलरूप
बाणसु साथ मातिले हि अरु धनुष चढावहि मति।
सु कहा है जु मूर्छित भयो ताहि मारिके कहा पुरुषार्थ
नाहीं सु मूर्छा को कारण कहत हैं। सो जु मृगनैनी
राधा ताके कटाक्ष बाण निकरि खंडित भयो जु म
नुसु अब द्वैनेक सा व धनन हीं होत। तातैं प्रिया के
कटाक्ष करि मूर्छित जु हौं ताहि कहा है कौं मारहि मे
रे मारिके कहु पुरुषार्थ नाहीं ॥ ॥ भ्रूचापे निहि
त: कटाक्षविशिखो निर्मातु मर्मव्यथां श्यामात्मा
कुटिल: करोतु कबरी भारोपि मारोद्यमं॥ मो
हं तावदयं च तन्वितनुतां बिंबाधरो रागवान्स
द्वृत्त: स्तनमंडलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति
॥ ॥ अब मन मैं श्रीराधाजी कौं आनिकारि श्री
कृष्णजी सो कहत हैं॥ अहो राधा तु मह जु नौह
धनुष बिषैं कटाक्ष बाण राष्यो है सु मर्म बि
षैं पीडा करो सु बाण मर्म पीडा करें या बात
को अचिरज नहीं। अरु श्याम बरण अरु टेढ़ी
जु बेणी सु मारिबे कौं उद्यम करो या बात को
जानि अचिरजु नाहीं ॥ रस हत कहि जोग

लज्जु स्तनतें मेरैं प्राण हरत हैं सु उचित नहीं क
रत॥ ॥ तानिस्पर्शसुखानि ते च तरला: स्नि
ग्धो दृशोर्विभ्रमास्तद्वक्त्राम्बुजसौरभं स च सुधा
स्यंदी गिरां वक्रिमा॥ सा बिंबाधरमाधुरीति विष
यासंगेपि चेन्मानसं तस्यां लग्नसमाधि हंत बि
रहव्याधि: कथं वर्तते॥ ॥ श्रीकृष्णजी कहत
हैं जु जे नाइका के संग करि पहिले स्पर्श सुष अ
नुभए ते ही अब ध्यान करि अनुभवतु हौं अरु वे
ही कटाक्ष चंचल अति प्रेमयुक्त हैं अरु वहै मुष
को सुगंध है। अरु वहै तर्क सहित बचन हैं। अ
रु अधर अति मधुर हैं इहिं भांति बिषयन है के अ
छत मेरो मन ता नायिका बिषैं एकाग्र समाधि
लागी है सु अचिरजु है। सु कहत हौं जो बिषय
बासना नजाइ तौ जो जोगन सधे समाधि है सु
जोग बिनु न होइ मेरै बिनाहीं बिषैं दूरि भएं जो
ग भयो परि जु जोग साधैं ताकै व्याधि न बूझिजे सु
मेरैं एक तो यह है अचिरजु बिषय रहतें हीं जो
ग भयो दूसरे यह है अधिक अचिरजु जोग भएं हू
बिरहव्याधि न गई ॥ श्लोक ॥ तिर्यक्कंधबिलोलमौ
लितरलोत्तंसस्फुरद्भ्रूलताचलतीतिस्थानकृतावं
धानललनाललाटेन संलक्षिता:॥ संगुंधं मधुर
दनस्पमधुरेराधामुखे दामृदु स्पंदं पल्लवितास्चि
रं दधतु व: क्षेमं कटाक्षोर्मय: ॥ ९ ॥ अर्थ॥ कविक
हतु हैं श्रीकृष्णजी के कटाक्ष जु कृष्ण कौं कल्या
ण करहु। कैसे हैं कटाक्ष। परमप्रेम मधुर जु राधा
मुषचंद्र ता बिषैं मुसकानि सहित प्राप्त भए
हैं। बहुरि कैसे हैं कटाक्ष। मुरलीतें प्रगट होत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१६ जुगीलतिन्हविबैंराषेहैंअरुजिन्हएसीजुगोपि
कासहस्त्रतिन्हकरिनादीजाने॥केसेहैंश्रीकृष्णजी।
बक्रहैकंठजिन्हकोअरुचंचलहैमस्तकजिन्हको
चपलहैकुंडलजिन्हके॥इतिश्रीगीतगोविं... यस
र्गः॥३॥श्लोक॥ जमुनातीरबानीरनिकुंजेमंदमास्थि
तं॥प्राहप्रेमभरोद्भ्रांतमाधवंराधिकासखी॥
अबश्रीराधाजीकीसषीश्रीकृष्णसोकहतिहैं।सुके
मैदेष्योकृष्णजी।जमुनातटविषेजुबेतवृक्षनिको
कुंजतामध्यमेंमधुरबैठेहैं।बहुरिकेसेहैंश्रीकृ
ष्णजी।राधामोसोकेसेप्रसन्नह्वैहैयाचिंतातेंअ
रुकुराधिकाजीबिषेंजुअधिकप्रेमताते उद्विग्नहैं।
... मूल। निंदति
चंदनमिंदुकिरणमनुबिंदतखेदमधीरं॥ब्याल
निलयमिलनेनगरलमिवकलयतिमलयसमी
रं॥साबिरहेतवदीनामाधवमनसिजबिशिष
भयादिवभावनयात्वयिलीना॥ ... ।बि
रहकरिउत्कंठितजुराधिकाजीतिनकीअवस्था
सषीश्रीकृष्णजीसोंकहतिहैं।अहोकृष्णतुम्हारे
बिरहतेंराधिकाअतिदीनभईहै।सुकेसीहैरा
धिका।श्रीकृष्णबिषेंप्रविष्टभएमोह्निकामकेबा
णकेभयनलागिहैएसीभावनाकरिकेकामबा
णकेभयतेतुम्हबिषेंलीनह्वैरहीहैं।करतिकहा
हैसुसषीश्रीकृष्णसोंकहतिहैं।चंदनकोंनिंद
तिहैअरुचंद्रमाकेकिरणनिदेषिअतिदुःख
पावतिहैअरुकाइरहोतिहैं।अरुचंदनकेवृ
क्षनिमेंजुसर्पतिन्हहिंस्पर्शकरिआवतजुहै
मलयवायुताहिविषसोकरिजानतिहै ...
अविरलनिपतितमदनशरादिवभवदवना
यविशालं॥स्वहृदयमर्म्मणिबर्मकरोतिस

जलनलिनीदलजालं॥ ... बहुरिकहाकरति
हैराधा।अतिबिशालजुहैकमलिनीकेजलसहित
दलतिन्हहिंआपनेहृदेकोजुमर्मताबिषेंबर्मक
वचकरतिहै।सुकाहेको।हृदेमेबसतजुतुम्ह
तिन्हकीपरलोहेकामकबाणतिनतेंरक्षाकरि
बेकों ॥ कुसुमबिशिषशरतल्पमनल्पविला
सकलाकमनीयं॥व्रतमिवतवपरिरंभसुखाय
करोतिकुसुमसयनीयं॥ ... बहुरिकहाकर
तिहैराधा।तुम्हारोजुआलिंगनताकोजुसुषताके
कारणव्रतकरतिहै।सुकहाव्रत।कुसुमबिशिषजु
हैकामताकेजुशरफूलतिनकीजुसेजताबिषेंसो
वतिहैं।सुकहा।औरोजुकोककठिनव्रतकरेसुस
रसेजसोवतैंसेंफूलनिकामकेसरजानिसोव
तिहै।केसीहैफूलकीसेज।कामकेजुबिलासताको
जोग्यहै॥ ॥बहतिचबलितबिलोचनजलध
रमाननकमालमुदारं॥बिधुमिवबिकटविधुंतुद
दंतदलनगलितामृतधारं॥ ॥ बहुरिकेसी
हैराधा।बहुतहैअश्रुजलजिनबिषेंएसेजुनेत्रति
न्हकरिशोभमानजुहैमुखकमलताहिधरतिहै।
मु.१कृष्ण ल१० सुकेसोदेषियतहैअतिबिकटजुहैबिधुंतुदराहु
ताकेद्यसैतेंछूटीहैअमृतधाराजातेंएसोचंद्रमा
हैमानहु। बिलखतिरहसिकुरंगमदेनभवं
तमसमशरभूतं॥प्रणमतिमकरमधोबिनिधा
यकरेचसरंनवचूतं ॥ सषीकहतिहै
अहोकृष्णवहराधाकोमरूपगुणलषतिनाहिं
एकांतबिषेंकुरंगमदजुहैकस्तूरीताकरिलि
षतिहैअरुकामकोबाहनजुहैमकरताहिच
रणनितरलिषिअरुकामकोबाणजुहैआंब
केबोरताहिहाथमेंलिषिकरिनमस्कारक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७ रतिहै॥ ...प्रतिपदमिदमपिनिगदतिमाध
वतववचरणेपतितादं॥ त्वयिबिमुखेमयिसपदि
सुधानिधिरपितनुतेतनुदाहं॥ ॥अ॥ सषी
कहतिहैअहोकृष्णतुह्मारेबिरहतेंवराधा
बारबारयहकहतिहैअहोमाधवहौंतुह्मा
रेचरणनिकेसरणआइपरीहौ।सुकाहेतें॥
जातेंतुह्मारेबिरहजुहैतेंसुधानिधिअमृतको
निधानऐसोजुचंद्रमासोमेरेशरीरहिजार
तहै॥ ॥ध्यानलयेनपुरःपरिकल्पभवंतमतीव ८
दुरापं॥बिलपतिहसतिबिषीदतिरोदतिचंचति
मुंचतितापं॥ ॥अ॥ सषीकहतिहैंअहोकृष्णदुः
षकरिपाइयेतजुहौतुह्मतिनहिंबहराधाध्यानल
यजुचितवनकीएकाग्रतातांकरिआगेठाढेकरिकेबि
लापहिकरतिहै।ध्यानमैपायोंजुतुह्मारोदर्शनता
तेंहसतिहैं।बहुरिजबनाहीदेषतितबबिषादहुः
षहिकरतिहैं।अरुरुदनुकरतिहैबहुरिमनमे
यहबिचारतिहैंओरठोरगएमिलहिंगेतातेंउठि
चलतिहैं।अरुमनकेसंतापहिदूरिकरतिहै
॥मूल॥श्रीजयदेवभणितमिदमधिकंयदिमन
सानटनीयं॥हरिबिरहाकुलवल्लवयुवतिसखी
बचनंपठनीयं॥ ॥अ॥ कहतहैंजोजयदेवक
बिकरिकह्योजुयहगीततातेंमनपूर्बकजोल
परनचाह्योचाहतहोतोश्रीकृष्णजीकेबिरहक
रिव्याकुलजुहैराधाजीतिनकीसषीकोजुय
हबचनताहिपढहु।
उत्कायमा
वतिसायंस्पाःसंकेतंनागतःप्रियः॥ तस्यानाग
मनेहेतुंचिंतयंत्याकुलाभवत्
जानाइककोकिसकेनबिषेपातिनआदेअरुना

इकायहबिचारिबोकरैजुमोसोंतोप्रियकह्यो
होजुहौंआवततहौंतूसंकेतस्थलचलिजुहौंतो
इहांआइ।अरुप्रियनपधारेसुकाहेतेंऐसैक
हिकरिअतिआकुलहोइतानाइकाकोबिरहो
।त्कंठिताकहिये ॥मूल॥ गीतगोविंदेअष्टमाऽष्टपदी
॥७॥ ...अथवासोबिपिनेपतिप्रिय
सखीमालापिजालायतेतापोपिश्वसितेनदाव
दहनज्वालाकरालायते॥ सापित्वद्बिरहेणह
न्तहरिणीरूपायतेहाकथंकंदर्पोपियमायतेविरच
यन्शार्दूलबिक्रीडितं पहिलीअष्टपदी
कोअर्थश्लोकेकहतुहै।राधाजीकीसषीश्रीकृष्णजी
सौंकहतिहै।अहोप्रभुराधाकौंनिसुह्मारेबिरहतें
हरिणलोहोतिहै।सुकैसैं।सोसीकहतहैं।पहलेंतो
बनहोतुहैअरुप्रियसषीजुहैतेईजालहोतिहैं॥
सुकाहेतेंइहांपधारिबेकोनाहीदेति।दूसरोजु
संतापसोईदावानलहोतहैअरुकामदेवजुमे
होतुहैसिंहकीसीनाईत्रासदेतुहै॥ अथोष्ट
...॥मूल॥स्तनबिनिहितम
पिहारमुदारं॥सामनुतेकृशतनुरतिभारं॥राधि
काबिरहेतवकेशव॥ध्रु०॥१॥ अथ सषीकहति
हैअहोकृष्णतुह्मारेबिरहकरिअतिकृशहैतनु
शरीरजाकोऐसीजुराधिकासोहृदैबिषैपह्यो
हैजुमोतिनकोबडुमोलहारताहिभारकरिजा
नतिहै॥मूल॥ सरसमसृणमपिमलयजपंकं॥
पश्यतिबिषमिववपुषिसशंकं॥२॥अ॥ सषीक
हतिहैअहोकृष्णतुह्मारेबिरहतेंराधाजीश
रीरबिषेचढायोजुसुंदरचंदनताहिशरीर
बिषैबिषुसोजानतिहै॥मूल॥ श्वसितपवन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१८ मनुपममपरिनाहं ॥ मदनदहनमिव वहतिसदाहं ॥
अर्थ ॥ अहो कमलवदनतुम्हराधा आपने अतिबडे उसास
तिनहिं कामकी अग्नि हि समानदाहकजानतिहैं ॥
दिशिदिशिकिरतिसजलकणजालं ॥ नयननलिनमि
वबिगलितनालं ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ अहो कमलवदनराधा तुम्हहि
६६ देषिवेकी वांछाकरिकै अश्रुजलसों भरे नेत्र तिन्ह
हिं चहूंओर पसारतिहैं । सु कैसे हैं नेत्र । दूरि नयोहैना
ल जिनतें ऐसे कमलहैं मानहु ॥ अर्थ ॥ नयनविषयम
पिकिशलयतल्पं ॥ कलयति विहितहुताशविकल्पं
५ ॥ अर्थ ॥ सषी कहतिहै वहतुम्हराधानेत्रनके आगे है ए
सी तुम्हे पल्लवनिकी सेजताहि हुतासनतुम्हें अग्नि
तासमान करिदेषतिहै ॥ त्यजतिनपाणितले
नकपोलं ॥ बालशशिनमिवसायमलोलं ॥
वहराधा अवितानि कपोलपरधऱ्योजुहस्तताहि
दूरिकरतिनाहीं सकतिसु कैसो देषियतुहै संध्यास
मैयबिषैनिश्चलदुतियाकोचंद्रहैमानहु ॥
हरिरितिहरिरितिजपतिसकामं ॥ बिरहविहि
तमरणेवनिकामं अहो कमलवदनराधा
हरिहरिहरिहिजानतिकहतिहै । सु हैं यहजानति
है । ऊनिबिरहसंतापतें मरिबेबिषें निश्चे कीनो
है ॥ ७ ॥ श्रीजयदेवभणितहरिगीतं ॥ सुखय
तुकेशवपदमुपनीतं ॥ श्रीजयदेवकवि
कह्योजुयहगीतसोजननकोंसुखदेउ । सुकै
सोहैगीत । श्रीकेशवजीकेचरणनिकोंसमर्प्यो
है ॥ ८ ॥
सा रोमांचति सीत्करोति विलपत्युत्कं
पते ताम्यति ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्या
ति मूर्च्छत्यपि ॥ एतावत्यतनुज्वरे बरतनुर्जीवे

न्न किं ते रसात्स्वर्वैद्यप्रतिम प्रसीदसि यदि त्यक्तोन्य
था हस्तकः ॥ १ ॥ अबश्रीराधाजीकी सषी कहति
है अहो अश्विनीकुमार समान वैद्य जो तुम्ह प्रसं
न्न हो हु तौ तुम्हारै रसतें वह राधा मेंहा उपजी जु का
मज्वर की बाधा ताते छूटै । जैसे ज्वर बडो भए
तैं ज्वरांकुशादी न्हें नीको होतु है । सु ज्वर के चिह्न क
हति है । रोमांच होतु है । अरु उसास छोडति है बि
लापकरति है अरु कांपति है सुधि निजु कहोति है के
बहू एकबकति है नेत्रनि मूदि रहति है ठौठौ चल
ति है गिरि परति है मूर्छा हि पावति है इतनें ज्वर के
लक्षण भए हैं अब तो हाथ इहै जो तुम्ह प्रसंन्न होहु
तो आराबंधे ॥ ९ ॥ स्मरातुराँ दैवतवैद्यहृद्य त्वदंगसंगा
मृतमात्रसाध्यां ॥ विमुक्तबाधां कुरुषे न राधामुपें
द्रवज्रादपि दारुणोसि ॥ २ ॥ अर्थ ॥ सषी कहति है अ
हो अश्विनीकुमारसमान सुंदर जो तुम्ह राधाजीकों
नीकी न करहु तो तुम्ह वज्रहूतें कठोर हो । कैसी
है राधा । कामकरि आतुर है । बहुरि कैसी है रा
धाजी । तुम्हारे अंगको जु संगसो इहैजु अमृत
ताही करि साध्य है और औषधया ज्वरकों न लगे ॥
कंदर्पज्वरसंज्वराकुलतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं चेतश्चंदनचंद्रमाःकमलिनीचिंतासु संता
म्यति ॥ किंतु क्लांतिवशेन शीतलतनुं त्वामेकमेव
प्रियं ध्यायंती रहसि स्थिता कथमसौ क्षीणा क्षणं
प्राणिति ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ सषी कहति है तुम्हारे इ ध्यान
करि जीवति है । औरु या राधा को चित्त चंदन चं
द्रमा कमलिनी इतने जु शीतल उपचार तिन्ह क
को स्मरण करत हीदु:ष पावत है । कैसी है रा
धा । कामज्वर को संताप ताते आकुल भई है तुम्ह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१८ कैसैं सो परमअधीन तन है तनु जिन्हकौं ॥ ३ ॥ क्ष
णमपि विरहः पुरा न सेहे नयननिमीलनखिन्न
यायया ते । श्वसिति कथमसौ रसालशाखां चि
रविरहेण बिलोक्य पुष्पिताग्रां ॥ ७ ॥ सषी क
हति है अहो कृष्णजी जु राधा पहिलें एक छिण
तुम्हारे बिरह हि न सहती अरु पलक लागत क
हती जु एक कहा तबी रि निमेष अंतर पारत है सु
राधा अब यौ बहुत बिरह कैसें सहति है । तातें मै
अनर्थ यह जु फूले आम्र बन निर्दषि करि कै जीवति
है ॥ कवि ॥ वृष्टिव्याकुलगोकुलावनवशादुद्धृ
त्य गोकुलावनवसादुद्धृत्य वर्द्धनं बिभ्रद्वल्लवसुं
दरीभिरधिकानंदाच्चिरं चुंबितः ॥ कंदर्पेण तदर्पि
ताधरतटीसिंदूरमुद्रांकितो बाहुर्गोपतनोस्त
नोतु भवतः श्रेयांसि कंसद्विषः ॥ कवि क
हतु है गोपतनु धरे जु श्री कृष्णजी तिनहि जु कंसद्वि
षतिन्ह को जु बाहु हस्त सो जननि कौं कल्याण करौ ॥
सु हस्त कैसौ है । जल वृष्टि करि दुःषित जु गाइनि
को समूह ता दिराषिबेकौं सात दिन लौं धरयौ है
गोवर्द्धन जा करि । बहुरि कैसो है बाहु । गोवर्द्ध
न के धरे तें नयो जु गोपीन के आनंद तातें जा बा
हु को चुंबन कीनो है । बहुरि कैसो है बाहु । का
म करि जुक्त जु गोपी तिन्ह करि कीनौं जु आलिं
गन तातें सिंदूर करि चिन्हित है ॥ इति ... गी ॥
द चतुर्थसर्ग ॥ ... अहमिह निवसामि याहि
राधामनुनय मद्वचनेन चानयेथाः ॥ इति मधुरिपु
ना सखी नियुक्ता स्वयमिदमेत्य पुनर्जगाद रा
धां ॥ १ ॥ अर्थ ॥ कवि कहतु है मधुरिपु श्री कृष्णजी

करि ऐसी भांति करि कह्यौ तब जाइ करि राधाजी
सौं आगि ... अष्टपदी करि कहति है सो सु कैसे
कहति जु राधाजी की सषी सो कहति है अरी सषी
है इहां बैठ्यौ होत जा कौ रि धाम्हि मनाइ लेआ
उ मेरे बचन ... अष्टपदी ... रूपक ॥
मूल ॥ बहति मलयसमीरे मदनमुपनिधा
य ॥ स्फुटति कुसुमनिकरे बिरहिहृदयदलना
य ॥ तव बिरहे वनमाली सखि सीदति कुंजग
है ॥ ... ॥ सषी कहति है अरी राधा तुम्हा
रे बिरह तें । बनमाली जु है श्री कृष्ण ते दुःख पा
वत हैं । सु कहा होत । काम है सो सयन जो ऐसो जु
मलयपर्वत को बायु ताहि लगत है ... क
हा होत । बिरहीन को जु हृदय ता ... करि
बेकौं फूलनि बिकासित देषि ॥ मूल ॥ दहति शि
रमयूषे मरणमनुकरोति ॥ पतति मदनविशि
खे विलपति विकलतरोति ॥ २ ॥ अर्थ । सषी कहति है
अरी राधा । श्री कृष्ण कौं तेरे बिरह तें चंद्रमा जब से
ताप करतु है तब श्री कृष्ण मरण कौ आकार करत
हैं । अरु काम के बाण जब लगतु है तब अधिक बि
लाप करत हैं अरु बिबस होत हैं ॥ मूल ॥ ध्वनति
मधुपसमूहे श्रवणमपिदधाति ॥ मनसि वलित
बिरहे निसि निशि रुजमुपयाति ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ सषी क
हति है अरी राधा जब भ्रमर गुंजार करत हैं तब श्री कृ र यक
ष्ण अति दुःखित होइ करि कान निमूंदत है । अरु
जब मन बिषें बिरह व्यापत है तब राति बिषें
अति दुःष पावत हैं ॥ मूल ॥ बसति बिपिनविताने
त्यजति ललितधाम ॥ लुठति धरणिशयने बहु
कुबिलपति तव नाम ॥ ४ ॥ अरी सषी ...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

छोडतहे
२० बिरहते श्रीकृष्ण अतिदुरजुगृहता हि छोडतहे बिरहते श्रीकृष्ण अति दुरजु गहता हि छोडतहे मि बिषें शायन करतहैं
अरु बनाबिष बसतहैं। अरु भूमि बिषें शायन करतहैं
अरु बार बार तेरोई नाम लेतहैं मूल॥ भणति कबि
जयदेव बिरह बिलसितेन। मनसि रसितसाबिष
... ॥ कहतहैं बर्णीदे
बेहारसहतु ... बिलासजिन ऐसजु जयदेवकबि
श्रीकृष्ण... तिनकरिश्रीहरिम
तिन्ह कोंपूर्ण ... होउ। सुकेसो है मन। श्रीराधाकृष्ण
नबिषपूर्ण बर्णत होत है अरुनि आनंदजा बिषे
कोलीन ...

पूर्वहै त्र सलिव्यारति पते रासा दितः सिद्धयस्त
... नि कुंजमन्मथ महातीर्थ मिनर्मी धव॥ ध्या
... नलीम नि राजपन पिन वे बालाप मंत्रावली
... कुचकुंभ निर्भरपरी रंभामृतं बाञ्छति
श्री सषी राधाजी सौं कहति है श्रीराधा माधव
डी ताही कुंज रूप काम तीर्थ मध्य निरंतर रहे रोई
ध्यान करत तेराईना मजु मंत्र नाहि जपत बहुरि
तेरे अंग निके आलिंगन की इच्छा करत हैं। सुकैसो
नु काम तीर्थ। जहा पहिले तासहित रतिपतिकी
जु सिद्धि मनोरथ तेजाती थी मे पाए॥
... रतिसुखसारे
गतमभिसारे मदनमनोहरवेशं॥ नकुरुनितं
बिनिगमनविलंबनमनुसरतं हृदयेशं॥ धी
रसमीरे जमुनातीरे बसति बने बनमाली॥ गो
पीपीनपयोधरमर्द्दन चंचलकर युगशाली॥
... कहति सखी राधाजी सों श्रीराधि
का जमुना की तीर बिषें जु बनता बिषें बनमा

लीजु है श्रीकृष्ण ते बसत हैं। सुकैसो है जमुनाजी
कौ तीर। धीरक है मंद है ससमीर बायु जा बिषें। कै
से है श्रीकृष्णजी। अभिसारजु है संकेतस्थल तहां
आमन ए है। कैसो है संकेतस्थल रतिसुषजु सं
भोगसुख सो है सुखजा बिषें। कैसे है श्रीकृ
ष्ण मदन जु है कामता समान मनोहर सुंदर है बेष
जिनको। तातें कहति हौं अरी राधा बिलंब मतिक
रे प्राणबल्लभ जु है श्रीकृष्ण तिनपें बेगि चलि। कै
से है श्रीकृष्ण गोपिकान के जु स्थूल अंग तिनको
जु मर्द्दनता बिषें चंचल है हस्त जिनके॥ ॥ ना
म समेतं कृत संकेत बादयते मृदु बेणुं॥ बहुम
नुते तनुते तनुसंगत पवनचलितमपि रेणुं॥ श्र
सषी कहति है अरी राधा व श्रीकृष्ण तेरे नाम
सहित परम मधुर बेणु बजावत हैं। कैसे है श्रीकृ
ष्ण तेरे शरीर को स्पर्श करि बहुत जु है बायु ता
करि उडाई जु है रेणु ताहि बहुत करि मानत हैं॥
॥ पतति पतत्रे बिचलित पत्रे शंकित भवदु
पयानं॥ रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति
तव पंथानं॥ ॥ सषी कहति है अरी राधे श्री
कृष्ण पल्लव की सेज रचत हैं अरु तेरो पेंडो देष
त हैं। सु कैसो है पेंडो। पतत्र जु हैं पक्षी ते जब उ
डत हैं अरु जब वृक्षन ते पात गिरत हैं तब हीं
श्रीकृष्णजी तेरे आगमन को भ्रम करत हैं जामा २१
गबिषें। कैसी है सेज। नयकरि चकित राषे हैं
न त्रजा बिषें ... मुखर मधीरं त्यज मंजीरं रिपु
मिव केलिसुलोलं॥ चलि सखि कुंजं सतिमि
र पुंजं शीलय नीलनिचोलं ... सषी कहै

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१ तिहेश्वरा[illegible]नितेरैशिमित्तश्रीकृष्णचलतश्रकुला
तहैबाजेकुंजनौ चलिश्ररूमंजीरनुदेनपुरलि
न[illegible]रिक्षेसुकाहेनेजातएनूपुरतोल
है। श्ररूस्वेनस्पलकेचलिबेकै। वेरीलो
प्रगटकरतहे। [illegible]क्रीडाबिषैचलहै तातेंइ
न[illegible]उतारिकैरिश्ररूमीनबस्त्रहिश्रादिकरि
निकुंजकोजा[illegible]। केसोहैनिकुंज। बहुतहेश्रंध
कारजाबिषै [illegible] श्रीतिमुरारेरुपाहितहारघ
नस्तन[illegible]नानि॥ तडिदिवपीतेरतिबिपरी
तेरुज्ञसिसुकृतविपाके॥ सषीकहति
हैपीतकेरंगोरहैश्रंगजा कोएसीराधातेंश्रीकृ
ष्णकेहृदयपरबिपरीतसुरतबिषैसोजोगी। के
सोहैकृ। सुकृतजुहैपूर्वजन्मकेपुन्यतिनकोपा
योहैफलजिनश्रनूपयाश्रीकृष्णसोंबिपरीतसु
रतकैसंपाइजे। केसोहैकृष्णहृदय। शोभतहै
मुक्ताहारजाबिषै। ताबिपरीतसुरतबिषैतूकै
सीदेषिजेगी। चचलहैबगपंकतिजाबिषैएसे।
जुमेघतामहिबिद्युलताजेसीदेषिजेतैसीतूदे
षिजेगी॥ श्रीकृष्णकोमेघकीउपमाश्रीराधा
कौबिद्युलताकीउपमाश्ररूमुक्तामालकोब
गपंकतिकीउपमा॥ मूल॥ बिगलितबसनंपरि
हृतरसनंघटय जघनमपिधानं॥ किशलय
शयनेपंकजनयनेनिधिमिवहर्षनिधानं
॥१४॥ सषीकहतिहेश्रीराधापल्लवसेजन
परबर्तमानजुपंकजनयनकृष्णतिनकोश्रा
पनोहैरबस्त्रजाते बहुरिकेसोहैजघन। दूरिकी

नोहैपिधानढांकनोजाकोएसोजुनिधिक
हिजेरत्ननिनकीपात्रताकीनाईहर्षकीनि
धानहैसुकहाजैसेनिधिपाएश्रानंदहोइते
सेतेरेजघनपाएश्रीकृष्णकेश्रानंदहोइगो॥
याकरिबिपरीतसुरतजनायो॥ मूल॥ हरिर
भिमानीरजनीरिदानी[illegible]पषाति बिरामं॥
कुरूममबचनंसत्वर[illegible]यमधुरिपु
कामं॥ सषीकहतिहेश्रीराधा श्रीकृष्ण
परमश्रभिमानीहैजानत[illegible]
हिश्रनुसरहिंगेतातेहो[illegible]नकोजतावलि
करिचलिश्ररूमधुरिपुजु[illegible]कामतिनकोम
नोरथपूर्नकरिश्ररूराविभानबीतिगोहैतोहि
ढीलमतिकरै॥ मूल॥ श्रीजयदेवेकथितेहरिरमसे
वेननिलिपरमरमणीये॥ प्रमुदितहृदयंहरि
मतिसदृयंनमतसुकृतकमनीये॥ ८॥ श्री
जयदेवकविकीनीहरिसेवाजहाएसोजयहगी
तताहिसुनिहर्षजुक्तहोइकरिश्रीकृष्णकोनम
स्कारकरहु। कैसेहैश्रीकृष्ण। परमदयालहैश्ररू
बडेपुन्यतेपाइयतहै। केसोहैगीत। श्रतिमनो
हरहै॥ ॥११॥
बिकरतिमुहुःश्वासानाशापुरोमुहुरीक्ष
तेप्रविशतिमुहुः कुंजंकूजन्मुहुर्बहुताम्यति॥
रचयतिमुहुःशय्यांपर्याकुलंमुहुरीक्षतेमदनक
दनक्लांतःकांतप्रियस्तबवर्तते॥ सषीकह
तिहेश्रीराधातेरोकांतकामपीडाकरितप्त
हैतातेंतूबेगिचलि। सुकोनप्रकारकरिसो
शीकहतिहै। श्रबहूनश्रैहैयहकहिबारबार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२१ तिहैश्रीराधातेरेनिमित्त श्रीकृष्ण अति अकुला
तहैवाकुंजकौ चलिअरुमंजीरनुहैनुपुरनि
नहिगनारिघरिसुकाहैतैजातरनूपुरतेलाल
है। अरुसंकेतसालकौचलिबेको। बेरालो
प्रगटकरतहै। अरुक्रीडाबिषैचंचलहैनातें
नहिउतारिकरिअरुमनीनबस्त्रहिश्रादिकरि
निकुंजकोचलि। कैसोहैनिकुंज। बहुतहैअंध
कारजाबिषै॥ मूल॥ उरसिमुरारेरुपाहितहारेघ
नइवतरलबलाके॥ तडिदिवपीतेरतिबिपरी
तेराजसिसुकृतबिपाके॥ सषीकहति
हैपीतवर्णगोरहैअंगजाको एसीराधातुश्रीकृ
ष्णकेहृदयपरबिपरीतसुरतबिषैसोजागी। के
सीहै। सुकृतजुहैपूर्वजन्मकेपुन्यतिनकोपा
योहैफलजिनअन्याथाश्रीकृष्णसोंबिपरीतसु
रतकैसंपाइजे। कैसोहैकृष्णहृदय। शोभतहै
मुक्ताहारजाबिषै। ताबिपरीतसुरतबिषैतूके
सीदेषिजेगी। चंचलहैबगपंकतिजाबिषैएसा
जुमेघतामधिबिद्युलताजेसीदेषिजेतेसीतूदे
षिजेगी। श्रीकृष्णकोमेघकीउपमा। श्रीराधा
कौबिद्युल्लताकीउपमा। अरुमुक्तामालीकोब
गपंकतिकीउपमा॥ मूल॥ बिगलितबसनंपरि
हृतरसनंघटयजघनमपिधानं॥ किसलय
शयनेपंकजनयनेनिधिमिवहर्षनिधानं
॥ ७॥ सषीकहतिहैश्रीराधापल्लवसेजन
परबर्त्तमानजुपंकजनयनहैकृष्णतिनकोआ
पनोहैस्वरजातबडुरिकैसोहैजघन। दूरकी

नोहैपिधानढांकनोजाकोएसोजुनिधिक
हिजेरत्ननिनन्पोपात्रताकीनाईहर्षकोनि
धानहैसुकहाजैसेनिधिपाएआनंदहोइते
सैतेरेजघनपाएश्रीकृष्णकेआनंदहोइगो॥
याकरिबिपरीतसुरतजनायो॥ मूल॥ हरिर
भिमानीरजनिरिदानीमियमपियाति बिरामं॥
कुरुममबचनंसत्वररचनं पूरयमधुरिपु
कामं ॥ सषीकहतिहै श्रीराधा श्रीकृष्ण
परमअभिमानीहैजानतहै .... आइका
हिअनुसरहिंगेतातेहोकौ .... नकोतताकलि
करिचलिअरुमधुरिपुजु ...... कृष्णतिनकोम
नोरथपूर्णकरिअरुरात्रिभीमनबीतनिहैनाहि
हीलमतिकरै॥ मूल॥ श्रीजयदेवेकृतहरिसे
वेभणितिपरमरमणीयं॥ प्रमुदितहृदयंहरि
मतिसदयंनमतसुकृतकमनीयं॥ ८॥ श्री
जयदेवकविकीनीहरिसेवाजहाएसोजुयहगी
तताहिसुनिहर्षजुक्तहोइकरिश्रीकृष्णकोनम
स्कारकरहु। कैसेहैश्रीकृष्ण। परमदयालहैअरु
बडेपुन्यतेपाइयतहै। कैसोहैगीत। अतिमनो
हरहै॥ ॥ ११ ॥
बिकरतिमुहुःश्वासानाशापुरोमुहुरीक्ष
तेप्रविशतिमुहुः कुंजंकूजन्मुहुर्बहुताम्यति॥
रचयतिमहुःशय्यापर्याकुलंमुहुरीक्षतेमदनक
दनक्लांतरीकांतप्रियबनेते॥ सषीकहु
तिहैश्रीराधातेरोकांतकामपीडाकरतप्र
हैताातेतू बेगिचलि। सुकैानप्रकारकरिसो
ईकहतिहै। अबहूनआईयहकहिबारबार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२ तुसासलेमहैं।एकाग्रचित्तह्वै करि नासिका
परदृष्टिराखिबारबारतोहीकौंदेषतहैं।बहु
रिजबतोहिनादेषततबजानतहैंमतिकुंज
मेंआईहोइनातेंबारबारकुंजमेंपैठतहैंब
हुरितोहिकुंजहूमेनाहीदेषतहैंतबअहोरा
धाकितहोएसेंबारबारकहिकरिदुःषीहोत
है।बहुरिराधाआईहैयहजानिबारबारसे
जकौजानतहैं।बहुरिजबतोहिनदेषतहैंतब
बारबारदशदिशनिकेचहुंओरदेषतहैं।तातेंकृप
तिहैंतातैंहितालनीकरहि॥ व्रह्माकोन
समर्पस्यमधुनातिमासुरस्तंगतोगोविंदस्तम
नोरथेनसमप्राप्ततमःसोद्भुतां॥कोकानांकरु
णास्यमेनसदृशीदीर्घामदस्मर्थनात्मुग्धेविफ
ल बिलंबनमसोरम्यानिसारक्षणः स
षीकहतिहैचरीराधातेरेबचनकेसाथसूर्जआ
स्तनयोकहाजैसेतेरेबोलअस्तसेह्वैरहैहैं,ते
सेंसूर्जतिन्हहीकेंसाथअस्तरनयोअर्थयह
जुसांझनहई।अरुगोविंदजीकेमनोरथकेसाथ
अंधकारबहुतभयोअबएहैअबएहैएसेंदे
श्रीगोविंदजीकेकहतअंधियारोभयोअबच
लिबेकोसमयहै।अरुचकवानुकोजुबिरहद
याजुककरुणातेहूतेसीमेरीप्रार्थनाबिनतहि॥
करुणाकरिकरिकहीतदो।बेगिचलिअरीरा
धासांझभई।अंधकारभयोअतिलोचलिबे
कोसमयहैनिःफलबिलंबमतिकरहिबेगि
चलि॥ आश्लेषादनुचुंबनादनुनखोल्ले
खादनुस्वांतजाद्बोधादनुसंभ्रमादनुरता

रंभादनुप्रीतयोः॥अन्यार्थगतयोर्भ्रमान्मिलि
तयोसंभाषणैर्जानतोर्दंपतोर्निशिकोस्तम २८
सित्रीडाविमिश्रोरसः॥अर्थ॥सषीकहतिहैअ
रीराधाश्रीनिसारबिषैश्रृंगाररसअधिकहोतु
है।सोइकहतिहैदेषिस्त्रीपुरुषकोअंधकार
मैंकौनकोनलज्जाजुक्तरसनाहींहोतहैहास
नरससेहिकहासभरसहोतहैं।जिनस्त्रीपुरुषनि
कौरसउपजतहैसुकैसेंहैं।पुरुष[illegible]कौ
केनिमित्तअरुवाहीकौजु[illegible]नाइकाके
निमित्तबडेअंधकारमैंएक[illegible]संकेतस्थल
कौंप्राप्तभएहैंअरुकाम[illegible]कोजुबहुत
ताताँतेनायकाजानतुहैजा[illegible]होते
सोइनायिकारुअरुनायिकाजानत[illegible]ना
कसौमैसंकेतकीनोसुनायकहैएसैचमनेमिले
पीछेंआलिंगनचुंबननखक्षतनिकेभयोजुका
मउद्बोधतातेंकामसेवाभयेपाछैजुभयोसंतोषता
पाछैंजबसंभाषनभयोतबजानतभएजुयहतो
औरैभईतबउपजीजुलाजताकरियुक्तअद्भुतरस
हिपावतभएतातेंतोसोंकहतिहैसंकेतस्थलच
लि सभयचकितंविन्यस्यतीदृशांतिमिरेप
थिप्रतितरुस्थित्वामंदंपदानिबिन्वती॥कथमपि
रहःप्राप्तामंगैरनंगतरंगिभिःसुमुखिसुभगःप
श्यन्सत्वामुपैतुकृतार्थतां॥अर्थ॥सषीकहतिहै
सुंदरहैमुखजाकोएसीराधातोहिदेषतश्रीकृष्ण
कृतार्थहोहु।तूकैसीहै।अंधकारजुक्तजुमार्गता
बिषैंभयतेंबहुंओरचितवतिहै।बहुरितूकैसी
है।रूषनिरूषनिप्रतिठाढीह्वैकैहरेहरेपाइध
रतिहैसुकाहेतैंमतियाहीरूपकीओटहोहि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२३ तोमोहिरहीहीमिलह्यियात्रमतैं। बङ्करिहेकैसी
२२ हैआतंगकी उठतिहैलहरिजिन्हतेंएसेजुअगति
न्हकेरिशोभतिहैलहरिकेसीहैएकांतप्रापन्न
इहैएसीतोहिदेषिश्रीकृष्णकृतार्थहोडं॥
राधामुग्धमुखारबिंदमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली
नेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारक्षमः। स्व
छंदव्रजसुंदरीजनमनस्तोषप्रदोषश्चिरंकंसध्वं
सनधूमकेतुरवतुत्वांदेवकीनंदनः॥ क
बिकहतुहैदेवकीनंदनतुम्हनिकीरक्षाकरहुं॥
सुकैसोहैदेवकीनंदन। परममुग्धजुराधाताकोजु
मुषकमलताबिषैं मधुपहै। बङ्करिकैसोहै। त्रैलोक्य
कैमस्तक... कटतिन्हमुकटनिकेनीलमणि
रूपहै। ब.. कैसेहैं। भूमिकोभारउतारिबेकों
समर्थहैं। बङ्करिकैसेहैं। आपनेआधीनजुगोपि
कातिन्हकेमनकोंआनंददेतहैं। बङ्करिकैसैहैं।
कंसकोबिध्वंसकरिबेकोंधूमकेतुहैं
॥ अथतागतुम
शाक्ताचिरमनुरक्तोललतांदेहदृष्ट्वा॥तच्चरितंगोबि
दैमनसिज्ञमंदसखीप्राह॥ अबसषीश्री
कृष्णजीकेंनिकटआइकरिराधाजीकेचरित्रक
हतिहै। सुकहाकरिके।कुंजलौंराधाजीदिजानकों
असमर्थदेषिकरि। कैसीहैराधाजी। बङ्कतका
लतेंहैकृष्णजीबिषैंअनुरागजिन्हकों। कैसेहैंकृ
ष्णजीबिषैकामकरिबिह्वलहैं॥
पश्यतिदिशिदिशि
रहसिभवंतं॥ त्वदधरमधुरमधूनिपिबंतं॥नाथ

हरेदेवनाथहरेसीदतिराधावासगृहे॥ध्रु०॥१॥अ
अबसषीराधाजीकीअवस्थाश्रीकृष्णजीसौंकह
तिहै। अहोकृष्णवहराधावासगृहजुहैसंकेतस्था
नताबिषैंतुह्मारेनिमित्तअतिदुःषपावतिहै।सु
कैसेसोइकहतहै। एकांतबिषैंस्थितजुहैराधासु
अहोनाथअहोहरिचहुंओरनतहिदेषतहै।तुह्म
कैसेहो। औरनाइकाकेअधर...तकोपानकरतहो॥
त्वदभिसरणरभसेनबलंती॥पततिपदानि
कियंतिचलंती॥ ॥सुकैसीहैराधा।तुह्मारेनि
कटकोजुकौतुअभिसारणआइ...ताकोजउत्साह
तातैंचलिबेकोजतनकरतिहैअरुगहचलतिहै
अरुपैंडदोइतीनिचलिकेश्रमहोतहैतबफिरीसे
जबिषैंपरतिहैं॥ ॥बिहितबिशदबिसकिसल
यवलया॥जीवतिपरमिहतवरतिकलया॥ ॥
बङ्करिकैसीहैराधा।बिहितकीनेहैबिशदकिसलय
जुहैकोमलकमलनालतिनकेकंकणजिनएसी
जुराधासोतुह्मारीजुसुरतकेलिताकोस्मरणकरि
करिजीवतिहैं॥ मुहुरवलोकितमंडनलीला।
मधुरिपुरहमितिभावनशीला॥ ॥बङ्करिकै
सीहैराधातिन्हहिंबिनुएवपर्थ।यहंजानिबारबार
आपनेआभूषणदेषतिहै।बङ्करिकैसीहैराधाहै
तुजुहैतुह्मारोध्यानतातैंमधुरिपुश्रीकृष्णजीहे
हीहौंएसीभावनाकरतिहै। त्वरितमुपैतिनक
थमभिसारं॥हरिरितिवदतिसखीमनुवारं॥॥
दूतीकहतिहैअहोकृष्णवहराधासषीसौंबार
बारकहतिहैअरीसषीश्रीकृष्णसंकेतस्थलबेगि
काहेनाहींपधारत॥ श्लिष्यतिचुंबतिजलधर
कल्पं॥हरिरुपगतइतितिमिरमनल्पं॥ ॥दू

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२४ तौकहतिहै।अहोकृष्णवह्राधात्र्यंधकारकोजुस
२२ मूहताहिदेषिकरिमेघसमानहोजुतुमतिनकों
भ्रमकरिकेत्र्यालिंगनदेतिहै॥मूल॥नवतिबिलंबि
निबिगलितलज्जा॥बिलपतिरोदतिबासकसज्जा
॥ ॥दूती कहतिहै।अहोकृष्णतुह्मारेबिलंबक
रतहीलैनहैलाजजाकीएसीजुराधासोबिलाप
करतिहै।अरुरुदनकरतिहै।कैसीहैराधातुह्मा
रोत्र्यागमनजानिसेजडसाइसिधरनहैहै श्री
जयदेवकवेरिदमुदितं॥रसिकजनंतनुतामति
मुदितं। श्रीजयदेवकविकरिकीनोजुयह
गीतसोरसिकजनजुभक्तजनतिनकोंत्र्यानंददे
उ

॥क॥ ॥बासकसज्जासोसज्जितांगरतालयेनिश्चि
तागमत्कान्तु:धारेत्क्षणपरान्वित ॥ जुनारि
कायहबिचारिजुत्र्याजुमेरोदिनहै।त्र्वश्यकरि
नायकमेरेंत्र्याइहैएसैंनिश्चयकरिकेसेजसंवा
रित्र्याभूषणपहिरिकरिद्वारकीत्र्योरचितैबोक
रेत्र्यरुदेषतहीदेषतजोरहोइत्र्यरुनायकजाके
नत्र्यावतानाइकाकोबासकसज्जाकहिजे

बिपुलपुलकपालिस्फीतसीत्कारमंतर्जनितजडि
मकाकुव्याकुलंब्याहरंती॥तवकितववि किविधा
यानंदकंदर्पचितारसजलनिधिमग्नमाध्यानलग्ना
मृगाक्षी॥ ॥ श्रीराधाजीकीसषीकहतिहैत्र्यहो
कपटीकृष्णतुह्मारेश्रृंगारसमुद्रमैंमग्नहैराधा
सुकहाकरिकैं॥कामकोस्मरणकरिकै।कैसी
हैराधा।तुह्मारेध्यानसोलग्नहैहै।बहुरिकैसी
हैराधाबडुलन्नयोहैरोमांचजाकै।बहुरिकैसी

हैराधाजी।ध्यानकरिमनमैंत्र्यायौजुत्र्यालिंगन
तातेंउपज्योजुसात्विकुलावनासात्विकतेंव्याकु
बचनत्र्यरुत्र्यालबषनकहतिहै॥ ॥ त्र्यंगीत्र्या
भरणंकरोतिबहुश:पत्रेपिसंचारिणि॥ ॥
परिरांकतेबिलंबुतेशाय्याचिरंध्यायति॥इत्या
कल्पबिकल्पतल्परचना ॥ कल्पलीलाशतंब्या
सक्तापिबिनात्वयाबरतनु ॥ नेषानिष्यति॥ ॥त्र्य
॥ सषीकहतिहै।त्र्यहोकृष्णवहराधा ॥ निबि
षैंत्र्याभरनपहिरतिहै।त्र्यरुजौने ॥ बाजे
हैतौतुह्मारोत्र्याइबौजानतिहै ॥ ॥ति
हैवहुरिध्यानकरतिहै।रहिजांत ॥ ॥
बाेसेजबिछाइबोपत्रनिकेशब्दतुह्मारोत्र्याइवोध्या
नकरिबोएहीलीलाशततिनमैंचंचलकपोलेप्या
रियहजुराधासुहौजानतिहौतुह्मारेबिनावि
नगवाइहै। ॥

त्र्यत्रांतरेचकुलटाकुलव
र्मपातसंजातपातकइवस्फुटलांछनश्री:॥वृंदा
बनांतरमदीपयदंशुदीपैर्हिक्सुंदरीबदनचं
दनबिंदुरिंदु:॥ ॥ त्र्यबचंद्रोदयतेंश्रीराधाजी
कौंबिरहाधिकाबर्ननहै।जिहिंसमेराधाजीकीत्र्य
त्तावस्था।कीसषीराधाकोबिरहबर्ननतिहैताही
समैचंद्रमात्र्यापनेकिरणनिकरिवृंदाबनके
मध्यप्रकाशतुभयो।कैसोहैचंद्रमा।कुलटाजुत्र्य
भिसारिकानाइकातिनकोजुसेमूहताकोजुकी
नोबाटकोरोकिबोतातेंमानहुपापउपज्योसो
ईपापहीदेषिजतुहैकलंकजाबिषें।बहुरिकै
सोहैचंद्रमा।पूर्बदिशाजुसुंदरीताकेललाट
कोचंदनबिंदुहैमानहु॥ ॥ प्रसरतिशशधर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रविंबलिखितं बिलं [illegible] मा [illegible] विधुरा॥ विरचि
तं चित्रविलापसा [illegible] रितापचकोराद्वे॥ [illegible] अ
सुनुविरहिणी राधा सु अतिपरितापदुःखकर
तिनद्वी सुवेको है परिताप। बिरहिन की नो है
बहुत नातिबिला पनाबिषं कहा होत। राधे
रजुचंद्रमा ताको [illegible] रीके फलत अरु श्रीमा
धवजी के बिलंब [illegible] पद [illegible] रा
गज्ञानि [illegible] क युतसमयेपि हरिरहह न
ययौ बनं॥ [illegible] फलमेतदनुरूपमपि यौबनं॥
यामिहकामि [illegible] रुणं सखीजनबचनबंचिता।
[illegible] अरराधा अतिदुःषित होइ करिक
हति है। [illegible] न के बचन तें डरु का इनरी अ
बया निर्ज [illegible] न बिषै कौन के सरन जाउं। सुके
सा है सखी न कबचन। अरी राधा तूं संकेतस्थल
बि [illegible] चलि श्रीकृष्णउहां पधारेंगे ऐसें जाति कह्यो
है सु हौं तो इहां आई अरु श्रीकृष्णजी हि समय
पधारण कह्यो सु समय बीतौ परि श्रीकृष्ण यासं
केतस्थल बिषे चलि श्रीकृष्ण [illegible] पधारे मैं इ न
आए तातें श्रीकृष्ण विनु मेरो जोबन रूप सब ब्य
र्थ नयो॥ मूल॥ यदनुगमनाय निशि गहनमपि
शीलितं॥ तेन मम हृदयमसी [illegible] मिदमसम
शरकीलितं॥ २॥ अथ बहुरि राधाजी कहति है
मैं श्रीकृष्ण हि सुरतकेलि करि संतुष्ट करिबे कौं
रात्रि बिषैं गहन जु है बनता बिषैं आई अरु कृष्ण
न पधारे तातें तिम्होंहि अकेली देषि काम आपने
बानन करि बेध नयो॥ मूल॥ मम मरणमेव बर
मति बितथकेतना॥ किमिह बिषहामि बिरहा
नलमचेतना॥ ३॥ [illegible] श्रीराधाजी आपने मनसौं

कहति है अब तौ हैं बिरहानल कौ जु [illegible]
है कौं सहति हैं श्रीकृष्णजी बिनु मेरा [illegible] है
तातें अब मेरो मरण भलो संताप का है कौं सहौं॥ मू
मामहह बिधुरयति मधुरमधुयामिनी॥ कापि ह
रिमनुभवति कृत [illegible] कामिनी॥ [illegible] बहुरि
राधाजी कहति है अहह [illegible] कृष्ण [illegible] मम
धुरजु बसंत की रातिते [illegible] है। अरु की
नै है बहुत पुन्य जिन एसी जुवती [illegible] नाइ कासो श्रीकृ
ष्ण सौं क्रीडा करति है [illegible] यामि बलया
दिमणि भूषणं॥ हरिबिरहदहन [illegible] नेन बहु दू
षणं [illegible] बहुरि श्रीराधाजी [illegible] नेमनसौं कह
तिहैं अहह यह बडो कष्ट। बलय जु [illegible] तादि श्री
दि जु कुसुम सुकुमार तनु मस मसर [illegible]
गपि इदं दहति मामतिबिमसीलया॥ [illegible]
राधाजी कहति है स्त्र कज्जु फूलनि की माला सो [illegible]
रै हृदय बिषैं काम के बाणनि की लीला करति है [illegible]
कैसी हौं हौं। कुसुम जु हैं फूल तिन समान कोम
ल है शरीर जाको॥ कैसी है काम के बाण की ली
ला। अतिबिषम है शील सुभाव जाको॥ [illegible] अ
हमिह निवसामि न बिगणितबनबेतसा॥ स्मरति
मधुसूदनो मामपि न चेतसा॥ [illegible] बहुरि रा
धा कहति है। बहुत है बेतस जा बिषै एसो जु यह
बनता बिषैं बसति हौं अरु दुःष देषति हौं॥ म
धुसूदन जु है श्रीकृष्ण ते मोहि चित [illegible] सं न
रत [illegible] हरिचरणशरणजयदेवकविभा
रती॥ बसतु हृदि युवतिरिव कोमलकलाव
ती [illegible] श्रीकृष्णचरण है शरीर जिनके ऐसे

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

[illegible]अष्टदशवर्षा[illegible]तिनकोजु नारतीसरस्वतीसो
[illegible]को है दे बिषेंबसा। सुकेसी है सुरस्वत्ती।
कोमलकाबित्तजुक्त है। सुकेसी [illegible]सी मारककेह
देबिबे अति चतुर नाइका बसति है [illegible]
[illegible]
तदिकामपिकामि[illegible]नी मनसि स्मृतः किंवा कलाके
लित्तिर्बद्धो बधुभिः [illegible]कारणेन बनोपान्ते किमुत्त्रा
म्यति॥ कान्तः क्लान्तमनामनागपि पथि प्रस्थातु
मेवाक्षमः संकेतीकृतमंजुबंजुललताकुंजेपि
यन्नागतः [illegible] अबजु सषी कोंनये बिलंब
तातें श्री राधाजी का मसंतप्त है तर्क करति है आप
नै मनमें कहति है कांतप्रियजु श्रीकृष्ण सोसं
केत की मैं [illegible] कुंज तहां तें तब्बि बहूं न पधारें तातें जा
नति हों कांहूं नाइका नै अनुसरे अथवा परम
अंधकार जु कुंजुबन तामें भूले फिरत हैं सुन्द
लिजे तो सु ठोर जु एक बार देषी हो इयह गेर
तो बार बार देषी है। ताहि कैसे भूल है तो कर
ति है मेरे स्मरण हि करि बिबश न येता ही तें
पैंडो चलिबेही को असमर्थ नए हैं तातें बिलंब
नयो ऐसी जांति तर्क करति नइ [illegible] अथाग
तां माधवमंतरेण सखीमियं बीक्ष्य बिषादमूकां॥
विशंकमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदे
तदाह [illegible] अब राधाजी सषी हि अमाध
वजी बिनु आइ देषि करि आगिली अष्टपदी क
रि कहति है॥ सषी कैसी है॥ बिषाद जु कार्ज
न नयो तातें दुःषना करि कलूक सिबे को अ

समर्थ है। राधाजू कैसी है जनार्दन श्री कृष्ण तिन्ह
हि काहूं नाइका सौं रमें जानति है सु वैसे मानि कुं
नाइका सौं हि देषे इही है॥ अथ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] स्मरसम[illegible] चित बिरचितबेश॥ दलि
तकुसुमदरबिग[illegible]तकेशा। कापि मधुरिपुना बि
लसतयुवतीरधिकगुणा [illegible] राधाजी क
हति है। अरी सषी कोऊ एक [illegible]र का श्री [illegible]सों क्री
डा करति है सुकेसी है नाइका [illegible] कैसी रूप
अरु गुण जा बिषैं। बहुरि कैसी [illegible]का। स्मर जु
है काम ता को जु संग्राम सु रत [illegible]लाइक कीनो
है बेष जिन अरु गिरत है फूल [illegible]न ते ऐसे [illegible]के
शजाके। [illegible] हरिपरिरंभणबलितबिकारा॥ कु
चकलशोपरितरलितहारा॥२॥ अ[illegible] बहुरि कै
सी है नाइका। श्रीकृष्ण दीनो जु आलिंगन तातें उप
ज्यो जु बिकार जाके अरु अंगन पर शोभत है हा
र जाके॥ मूल॥ बिचलदलकललितानन चंद्रा॥
तदधरपानरभसकृततंद्रा॥३॥ अर्थ॥ बहुरि कै
सी है नाइका। चंचल जु है अलक तिन करि सो
भत है मुखचंद्रमा जाको अरु श्रीकृष्ण करि की
नो जु अधरपान तातें भयो जु आनंद तातें नि
श्चल कै रही है॥ मूल॥ चंचलकुंडलललितकपो
ला॥ मुखरितरसनाजघनगतिलोला॥४॥ अ
र्थ॥ बहुरि कैसी है नाइका। चंचल जु है कुंडल
तिन करि ललित मनोहर होत है कपोल जा
के। अरु शब्द करि है छुद्रघंटिका जा बिषे ऐसो
जु जघन तिनकी जु गति चंचलता ता करि चंच

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

२७ लहैं॥ [illegible] दयितबिलोकितलज्जितहसिता॥ ब
कुविधकूजितरतिरससरसिता॥५॥ अर्थ॥ बङ्करि
केसी है नाइका। दयित जु है श्रीकृष्ण तिनकौ जु
बिलोकित तिनदोतातें कछुएक लज्जा करति है
अरु कछुएक हसति है अरु बङ्कत बिधना नाना
ति जु कूजित [illegible] करि युक्त जु रतिक्रीडा तातें
आनंदित है [illegible] पुलपुलकष्टथुवेपथुमंग॥
स्वसितनि [illegible] विगसदनंग॥ ॥ बङ्क
रि कैसी है न [illegible] ॥ बङ्कत नए है रोमांच जाके अ
रु बङ्कत रुकंपज्या बिषै अरु स्वसित जु है सासता
बिषै॥ [illegible] जलकणनरसुजनगशरीरा॥ परि
पतितोरसि रतिरणधीरा॥ ॥ बङ्करि कैसी है
नाइका [illegible] ततें भयो जु प्रस्वेद ताकरि शोभित है
शरीर जाका। अरु श्रीकृष्ण जी के बक्षस्थल बिषै
परी है अरु कामसंग्राम बिषै अतिसूर है।
श्रीजयदेवभणितहरिरमितं॥ कलिकलुषंश
मयतु परिसमितं॥ ॥ श्रीजयदेव कवि बर्णि
त जु है यह श्रीकृष्ण की संजोग क्रीडा सो भक्तन के
जु कलिजुग कृत पाप तिनहिं दूरि करौ॥ ॥
बिदंच
बिरहपांडुमुरारिमुखांबुजद्युतिरयंतिरन्नापबे
दनां॥ बिधुरतीवतनोतिमनोभुवः सुहृदयेम
दनवाधां॥ ॥ राधाजी कहति है अरी सखी चं
द्रमा मेरे हृदय बिषै अति अधिक पीडा दिकरतु
है। सु कैसो है चंद्रमा। बिरह करि पांडुरवर्न जु
यो जु श्रीकृष्ण मुख कमल ताकी सी है शोभा जा
चंद्रमा बिषै। सु कहा करत। ज्ञान हि दूरि कर

त बङ्करि कैसो है चंद्रमा। मनोभव का सखा को मि
त्र है॥ अथ अष्टपदी गुजरी राग एकताल [illegible]
ल॥ समुदितमदने रमणीबदने चुंबनबलिताधे
रे॥ मृगमदतिलकलिखितसपुलकं मृगमिव र
जनीकरे॥ बिजयीमुरारिरधुना रमते यमुनापु
लिनबने॥ ध्रु०॥ ॥ श्री [illegible] राजी सखी के आगे
श्रीकृष्ण की चेष्टा कहति है। [illegible] री सखी जीत्यो है का
मसंग्राम जिन ऐसे जु मुरारि [illegible] तै जमुना के
तीर बिषै जु बन तामैं क्रीडा करत है। सु कैसे है सो
श कहत है। रमणी जु है कोउ एक प्रिया ताको जु
बदन मुष ता बिषै मृगमद जु कस्तूरी ताको तिलक
ताहि लिषत है अरु तिलक कै लिषतैं रोमांच जु
क होत है। कैसा है प्रिय का बदन। जाके देषतै क
दर्प प्रगट होत है। बङ्करि कैसो है बदन। चुंबन
कै निमित्त सन्मुख कीनो है अधर जा बिषै। सो क
स्तूरी को तिलक प्रिया के मुष बिषै कैसो देषियत
है रजनीकर जु है चंद्रमा ता बिषै मृगलांछन जै
सो देषिये॥ ॥ घनचयरुचिरे रचयति चिकु
रे तरलिततरुणानने॥ कुरवककुसुमं चपला
सुषमं रतिपतिमृगकानने॥२॥ ॥ बङ्करि क
हा करत है श्रीकृष्ण। ता नाइका के जु केश तिन
बिषै कुरवक वृक्ष के जु फूल तिन्है गुहत है। ब
ङ्करि कैसे वा प्रिया के केश। मेघन को जु समूह
तैसे मनोहर है॥ बङ्करि कैसे है केश। चंचल की
नो है तरुण जु है श्रीकृष्ण तिनु को मुष जिन करि।
बङ्करि कैसे है केश। रतिपति जु है काम सो री

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२ २८ जुत्तयोम्रगसिंघता कंबसिबिकानन है। कैसे है
कुरवककवृक्षकेफूल। विद्युलताकी देखोन्नाति
नोविषे॥मूल॥घटयतिसुघनंकुच युगगगनेम
गमदरुचिरस्पषेतो॥मोतिमहारसमलंतारकप
टलनमपदक्षावित्रिने ॥बहुरिकह
कहतहैं श्रीकृष्ण। तानाइकाकेजुदोऊकुच
तेरीजुनए॥ ॥आकाशतिनबिषेमोतीन
कोहारजु नक्षत्रसमूहताहिबनावत
हैं। सुकहाजहांआकाशहोइतहांनक्षत्रचा
हिजेअरुचंद्रमाचाहिजेसुस्तननएआका
शमोतीनकोहारसुनक्षत्रअबचंद्रमाचाहि
जे॥ तजुनयोजुचंद्रमाताकरिशोभतहे
कैसेहैस्तन। मृगमदजुहैकस्तूरीताकीजुकां
तिताकरिशोभतहे॥मूल॥ जितबिशाखकलेमं
डुभुजयुगलेकरतलनलिनीदले॥मरकतब
लयंमधुकरनिचयंबितरतिहिमशीतले॥
अर्थ॥बहुरिकहाकरतहैंश्रीकृष्ण। तानाइका
केजुदोकंकनतिनबिषेंनीलमणिजटितजु
हैंकंकणतेरीजुनएभ्रमरतिनहिप्राप्तकरत
हैं। सुकहाश्रीकृष्णजीनाइकाकोनीलमणि
जटितकंकणपहरावतहैं सुवेकंकणदोहिं
हस्तजुहैसुकमलहैनीलेजुमणितेभ्रमरहै
मानों। सुकैसेहैदोऊभुज। कोमलताकरिजी
तेहैकमलनालजिनबहुरिकेसेनाइकाके

१६
देऊभुजकमलकरतलजुहैहथेरीतेजहैपत्र
जाके। बहुरिकैसेहैभुजकमल। हिमजुहैतुसार
समानशीतलजुहै॥मूल॥रतिगृहजघनेबिपुला
पघनेमनसिजकनकासनें॥मणिमयरसनतोर
णहसनबिकिर ॥अर्थ॥ बहुरि
कहाकरैहैश्रीकृष्ण। वाना ।कोजुकामकोघ
रजघनतिताबिषेमुक्तानिकीजुमेषलाताहिपहि
रावतहैं। सुकैसोहैजघन। ॥ लजुहै। बहु
मनासनजुहैकामकोसुबर्नमयसिंघासनहै।
बहु॰मणिजटितहैछुद्रघंटिकाताबिषै॥ जकुंवा
पहरयोहैबस्त्रजाबिषै। कैसीहैछु घंटिका। तोर
णजुहैबंदनमालताकोहसतिहै। चरण
किशलयकमलानिलयेनखमणिगण ब
हिरपबरणंजावककृतरणंजनयतिहृदयेजि
ते॥ ॥ बहुरिकहाकरतहैश्रीकृष्ण। वाना
इकाकेजुचरणतिनबिषैयावकजुहैमहावर
ताहिपूर्णकरतहैं। सुकैसेहैनाइकाकेचरण। अ
तिअनुरागतेश्रीकृष्णजीहृदैबिषेधरेहैं। कैसेहैं
श्रीकृष्णकोहृदय। कमलाजुहैलक्ष्मीताकोनि
लयस्थानहै। कैसेहैनाइकाकेचरण। नखजुम
णिसमूहतिनकरिपूजेहैं। कैसोहैमहावर। बा
हिरहीप्रगटहोतहै॥मूल॥रमयतिसुदृशंका
मपिसुदृसंखलुहलधरसोदरे। किमफलमब
संचिरमिहबिबरोबदसखिबिटपोदरे॥३१॥
अर्थ॥राधाजीकहतिहैंअरीसषीहलधरकेसो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१२ २८ जुजयो मृगमदिघता कंबसिबकौंजनहै। कैसेंहै
कुरवेककवृक्षके फूल। विद्युलताकी देशो जाति
नादिष॥ मूल॥ घटयतिसुघनेकुचयुगगगनम्
गमद उचिरूचि दे॥ मौक्तिहारसमलतारकप
टलनखपदशशि [illegible] चिते ॥ बकुरिकह
कहत है श्री [illegible] ताना इकाके जु दोऊ कुच
तेई जु भए गगन आकाश तिन बिषै मोतीन
को हार जु [illegible] नक्षत्र समूह ता हि बनावत
हैं। सुकहा जहां आकाश होइ तहां नक्षत्र चा
हिजै अरु चंद्रमा चाहिजै सु स्तन भए आका
श मोतीन को हार सु नक्षत्र अब चंद्रमा चाहि
[illegible] तजु नयोज चंद्रमाता कारि शाभत है॥
कैसे है स्तन। मृगमद जु है कस्तूरी ताकी जु कां
तिता कारि शोभत है॥ मूल॥ जितबिशाखकलभ
भुजयुगलेकरतलनलिनीदले॥ मरकतब
लयंमधुकरनिचयंबितरतिहिमशीतले॥
अर्थ॥ बकुरि कहा करत है श्री कृष्ण। ताना इका
के जु दोऊ कच्छ जातिन बिषैं नीलमणि जटितजु
हैं कंकण तेई जु भए च भमरतिन्है प्राप्त करत
हैं। सु कहा श्री कृष्णजी नाइका को नीलमणि
जटित कंकण पहरावत हैं सुब कंकण हो हिं
हस्त जु है सु कमल है नीले नु मणि ते भ्रमर है
माने। सु कैसे है दोऊ भुज। कोमलताकी सी
मा है कमल नाल जिन बकुरि कैसे नाइका के

दोऊ भुज कमल कर तु लजु है हथरी तेई है पत्र
जाके। बकुरि कैसे है भुज कमल। हिम जु है तु सार
समान शीतल जु है॥ मूल॥ रतिगृह जघने बिपुला
पघने मनसिज कनक आसने॥ मणिमय रसनतोर
ण हसन बिकिरी [illegible] ॥ अर्थ॥ बकुरि
कहा करै है श्री कृष्ण। ना [illegible] को जु काम क्रोध
रज घन तिता बिषैं मुक्तानिकी जु मेषला ता हि पहि
रावत हैं। सु कैसो है जघन। श्री [illegible] लजु है। बकु
मनसिज जु है कामता को सुबर्नमय सिंघासन है।
बकु मणि जटित है छुद्र घंटिका जा बिषै। बकु था
पल्लो है बस्त्र जा बिषै। कैसी है छुद्र घंटिका। तार
ण जु है बंदनमाल ता को हसति है॥ मूल॥ चरण
किशलयकमलानिलयेनखमणिगणपूजिते॥ ब
हिरपवरणं जावककनरणं जनयति हृदये ज
ते॥ अर्थ॥ बकुरि कहा करत है श्री कृष्ण। ताना
इका के जु चरण तिन बिषैं याव के जु है महावर
ता हि पूर्ण करत है। सु कैसे है नाइका के चरण अ
ति अनुराग तें श्री कृष्णजी हृदय बिषैं धरे है। कैसो है
श्री कृष्ण को हृदय। कमला जु है लक्ष्मी ता को नि
लय स्थान है। कैसे है नाइका के चरण। नख के जु म
णि समूह तिन करि पूजे हैं। कैसो है महावर। बा
हिर ही प्रगट होत है॥ मूल॥ रमयति सुदृशं का
मपि सुदृशं खलु हलधर सोदरे॥ किम फलमव
संचिरमिह बिबरो बदसखि बिटपोदरे॥ अ॥
अर्थ॥ राधाजी कहति है अरी सखी हलधर के सो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२९ दरकहिहोनाहीएसेजुकृष्णतेजोनिश्चैकरिओर
नाइकासौंक्रीडाकरतहैताअबयहदूतसौंसो
कहिहैइनकुंजनिमैबाहिकाहेकोरहतिहै॥
अरुबिबसहोतिहै॥मूल॥इहरसभनणनेकृतह
रिगुणनेमधुरिपुपदसेवकके॥कलियुगचरितं
नबसतुदुरितकविनृपजयदेवके॥टी॥अ॥ज
यदेवजुकहतहैंसो।बिषैकलिजुगकृतपाप
मतिरहो।कैसोहैं।श्रीकृष्णकेशृंगार
रसकोकहतहैं।बकुरिहौकैसोहैं।मधुरिपु
जुहैश्रीकृष्णतिनकेचरणकोसेवकहै॥
गीतगोविंद....अष्टपदीसमाप्तः॥ ११
नारि ह्रः॥पाठ।सखिनिर्दयोयदिशठस्त्वंदूतिकिंदूय
सेत्वं दवबकुवल्लभः सरमतेकितवेनेदूषणं॥
पश्यप्रियसंगमायदयितस्यकृष्यमाणंगु
णैरुत्कंठार्त्तिभरादिवस्फुटदिदंचेतःस्वयंयास्य
ति॥ टी॥अ॥ अबराधाजीश्रीकृष्णजीकेबिनाले
आएतैंदुःषितहैजुसषीताहिसमुझाव
तिहै।अरीसषीजोपैरमनिर्दयीअरुबंच
कहैकृष्णजीएतोतूकाहेकोदुःषपाव
तिहै।येबहुतहैप्रियाजिन्हकेअरुबेको
चोरीहैतिन्हप्रियान्हसौंक्रीडाकरतहैतौते
रोकौनअपराधतूमतिदुःषपावहि।कदा
चितसषीकहैताबेइहांकैसेआइहैताको
कहतिहैअरीसषीतूदेषिजाहिआजुपरमप्रि
यजेकृष्णतिन्हकेगुणकरिश्रीकरष्योमेरास
नउन्हकेसंगकोआपुहीजाइगो।सुकैसोहै

मेरोमन।जहीजुकामपीडातातेंबाहिरहोत
हैमानहुं॥अष्टपदी॥३१॥रागयतिताले॥मूल॥
अनिलतरलकुवलयनयनेन॥पततिनसाकि
शलयसयनेन॥सखिहेयारमिताबनमालि
ना॥ध्रु०॥२॥टी॥राधाजीसखीसौंकहतिहै।अरी
सषीबनमालीजुहैश्रीकृष्णतिनकरिजोनाइका
सौंक्रीडाकरीहैसोनाइकापल्लवनकीसेजतापर
नाहीपोटतिसुमोसमानबिरहिणीनाहीताहीतै
नाहीपोटतिकैसेहैबनमालीअनिलजुहैबा
युताकरिचंचलकोनेजुनीलकमलतिनसमान
हैनेत्रजिनकै॥मूल॥बिकसितसरसिजललित
मुखेन॥स्फुटतिनसामनसिजबिशिखेन॥अ॥
राधाजीकहतिहैअरीसषीकृष्णसौरमीहै
सुनाइकाकामकेबाणनिकरिनाहीबींधिज
ति।कैसेहैश्रीकृष्णफूलेकमलसमाननयनो
हरहैमुखजिनको॥मूल॥अमृतमधुरमृदुतरब
चनेन॥ज्वलतिनसामलयजपवनेन॥अ॥
राधाजीकहतिहैअरीसषीजुनाइकाश्रीकृष्ण
करिरमाईहैमलयपर्बतकेजुबायुतातेंनाही
दुःषपावति।कैसेहैश्रीकृष्णअमृतसेमधुरओ
रुकोमलहैबचनजिनके॥मूल॥स्थलजलरुह
रुचिकरचरणेन॥लुठतिनसाहिमकरकिरणे
न॥अ॥राधाजीकहतिहैअरीसषीश्रीकृष्णजा
नाइकासौंक्रीडाकरीहैसुनाइकाचंद्रमाकीकि
रणनिकरिनाहीसो।तापहिपावति।कैसेहैश्रीकृ
ष्णस्थलकमलनिकीसीहैकांतिजिनकेऐसेहै
हस्तअरुचरणजिनके॥मूल॥सजलजलदस
मुदयरुचिरेण॥दलतिनसाहृदिबिरहभरेन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२० राग॥५॥अर्थ॥राधाके दूतीहै अरी सषी जानाइका
सेंश्रीकृस्नक्रीडाकरीहैसुनाइकाबिरहकोजु
आधिकाताकरिहृदाबिषैनाहींबिदीनहोति॥
केसेहेंश्रीकृष्णजी।जलसमेतउनश्रोजुमेघतास
मानसुंदरजोहैं॥ ॥कनककमिकषरुचिरुबि
बसनेन॥ स्वसितिनिसापरजनहसनेन
अर्थ:राधाजीकहतिहैंअरीसषीजुनाइकाश्रीकृ
ष्णका रमाईहैसुनाइकालोकनिकीहसीक
रिपाईनाहींजाति।केसेहैश्रीकृष्ण।जैसेकसो
टीमेसोनेकीरेषहोइतैसोशोभतहेपीतांबर
जिनको॥मूल॥सकलभुवनजनबरतरुणेन॥
बर्द्धितनस्यरुजमतिकरुणेन ॥ राधाजी
कहतिहैअरीसषीजुनाइकाश्रीकृष्णकीरमा
ईहैसोनाइकापीडाहिनाहीपावतिकैसेहे
श्रीकृष्ण।सकललोककेजुतरुणपुरुषतिनहू
तैश्रेष्टतरुणहैं।बहुरिकैसैहैंश्रीकृष्ण।अतिहै
करुणादयाजिनके॥मूल॥श्रीजयदेवभणितब
चनेन॥प्रविशतुहरिरपिहृदयमनेन
श्रीजयदेवकविकरिकह्योजुयहबीतनता
करिश्रीकृष्णभक्तनकेहृदयबिषैप्रविष्टहोहु॥
इतिश्रीगीतगोविंदेपाडशाष्टपदी॥ ॥१६॥
श्लोक॥ मनोभवानंदन चंदनानिलप्रसीदरे
दक्षिणमुंचबामतां॥क्षणंजगत्प्राणविधाय
माधवं पुरोममप्राणहरोभविष्यति॥
राधाजीकहतिहैंअरेकामकेआनंदकारीचं
दनकेबायुप्रसंनहोहिमोपरअरुअनु

कूलहोहिदक्षणएकपीछेश्रीमाधवजीकोमेरेआगेक
रिमेरेप्राणनिनिसांकहरिजा[illegible]
सित्ताससारकेप्राणनिसाषतुंहमेरेकाहेहरहि॥
श्लोक॥रिपुरिवसषिबासोयशीर्षोजहिमानिलो
बिषमिवसुधारश्मिर्यस्मिन्दुनोतिमनोगते॥हृ
दयमदयेतस्मिन्नेवंपुन[illegible]कुबलयद
शोवाम:कामोनिकामनिरंकुश:॥ ॥४॥अब
सषीजुसोकहतिहैराधाजीअ जिनके
दूरिपधारेतैंयहजुसषीनुसंदि बोजुरिपु
सोमनहिसंतापदेतुहैअरुहि जुबायुसुआग
लोमेरेमनदहिदहतुहै।अरुअ पहैकिर
णजाकेएसोजुचंद्रमाबिषसोलागतहैअरुजि
न्हकेलीनेएसीगतिनशोतिन्हहीनिर्दयीमे
षेमेरोमनोबरजतहैदृग करिबलात्कारप्रवि
ष्टहोतुहैसुहैजानतिहौस्त्रीनुकोकामनिर्दय
करिनिरंकुशस्वेच्छाचारीहैं॥श्लोक॥बाधांबिध्र
हिमलयानिलपंचबाणप्राणान्गृहाणनगृहंपु
नराश्रयिष्ये॥किंतेकृतांतभगिनिक्षमयातरंगै
रंगानिसिंचममशाम्यतुदेहदाह:॥३॥अर्थ॥अ
बश्रीराधाजीप्राणनितेंउदासह्वैकहतिहैंअरे
चंदनबनकेबायुपीडाकरिअरेपंचबाणका
मप्राणनिलेहिजैसेबहुरिघरनजांउं।अरी
जमकीबहिनिजमुनाअपनेतरंगनिकरिमे
रेअंगनिसींचितापदेहकोदाहमिटेकृतांतज
मकीबहिनितोहिक्षमासोकहाकामुएसोन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२ रोपद्यकेकदंबिनिइ॥श्लोक॥सांद्रानंदपुरंदरा
दिदिविषदृंदैरमंदादरादानम्रैर्मुकुटेंद्रनी
लमणिभिः संदर्शितेंदीवरं॥स्वच्छंदमकरंद
सुंदरगलन्मंदाकिनीमेदुरं॥श्रीगोविंदपदा
रविंदमशुभस्कंदाय वंदामहे॥४॥अर्थ॥कवि
कहतुहैश्रीगोविंदजीकेजुचरणकमलति
न्हहिहमआपने अशुभदूरि करिकैकौबंद
तहैं।सुकैसेहैंचरणकमल।बकुतहैंआ
नंदजिनकौंसजुइंद्रहिआदिसकलदेवता
तिन्हकेजेमुकुटनिकीनीलमनितिन्ह
करिजाननतहैं।बहुरिकैसेहैचरणकमल
प्रगटहोतिजुगंगासोईमानकुकमलको
परागहैताकरिसुंदरहैं॥इतिश्रीगीतगोविंदे
सप्तमः सर्गः॥ ॥७॥ ॥श्लोक॥अपकथमपियामि
नीविनीयस्मरशरजर्जरितापिसाप्रभाते।अ
नुनयवचनंवदंतमग्रेप्रणतमपिप्रियमाहसाभ्य
सूयं॥१॥अर्थ॥ अबराधाजीप्रातःएआएअरु
गाढेबिनतीकरतहैं।जुश्रीमाधवजीतिनसोंई
र्ष्यासहितुबचनकहतिहै।सुआगिलीअष्टप
दीकरि।कैसीहैराधाजी।कैसैंहूकैसेगवांईहै
रात्रिजिन।अरुकामबाणनिकरिअतिडित
करीहै॥अष्टपदीनैरवरागेन॥
जनि रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमे
षं॥वहतिनयनमनुरागमिवस्फुटमुदितरसा

लिनिवेशं॥हरिहरियाहिमाधवयाहिकेशवमा
वदकैतववादं॥तामनुसरसरसीरुहलोचनया
तवहरतिविषादं॥ध्रु॥१॥अर्थ॥पहिलेश्लोकमें
जुकहिआएसुराधाजीईर्ष्यासहितबचनकहति
हैं।अहोमाधवअहोकेशवतुमपधारोहरिहरि
कैतववादजुहेमिथ्यावचन तान्हिमतिबोलहु।अ
रुवानाइकाहिअनुसरहुजुतुम्हारेदुःखहि दू
रिकरै।सुमिथ्याबचनकैसेजानिये कहतिहैं॥
अहोकमलरात्रिबिषैकीनोजुअतिजागरणतातेक
षाएनेत्र।अरुआलसपजुतनतिहिरससेजुतुम्हा
रेनेत्रतेतुम्हारीप्रीतिहिप्रगटकरतहैं।कैसेहैने
त्र।आरनाइकासौंकीनीजुतुम्हरतिकेलिताके
अभिप्रायहिजनावतहैं॥२॥कज्जलमलिनवि
लोचनचुंबनबिरचितनीलिमरूपं॥दशनवसं
नमरुणंतवकृष्णतनोतितनोरनुरूपं॥२॥अर्थ॥अब
राधिकाजीश्रीकृष्णकेजुआरनाइकासौंरतिकेलि
केचिन्हतिनहिप्रगटकरिकहतिहैं।अहोकृष्ण
तुम्हारेजुदशनबशनबशनकहिजेअधरतेतां
बूलतेअरुणतेआरक्तहुतेपरिअबजुतुम्हवाना
इकाकेनेत्रनिबिषैचुंबनकीनोसुकज्जललग्यो
तातेंनीलेदेषिजतहैंसुमानहुंतुम्हारेशरीरकी
बराबरिकरतहैं।सुकहा।तुम्हारेअधरतांबू
लतेआरक्तएहैपरिअबवानाइकाकेनेत्र
केकज्जलतेजसोतुम्हारोरूपहैतेसेईभएहैं॥
वपुरनुहरतितवस्मरसंगरखरनखरक्षतरेखा॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२ मरकतसंकलकलितकलधौतलिपिरिवरतिजयलेखं ॥ श्रीराधाजी कहतिहैं अहो कृष्णतुह्मारोउरा
स्थलकामसग्रामकेजयकोजयपत्रतासोबराबरिक
रतुहै। सुकेसोहैतुह्मारोउरस्थल। अंगहैवानाइको
कैसोहैजाविषैकंसोसकामजयपत्रामे
रकतमणिजडोइ मणितातिविषेसोनेकीमसिसो
लिष्योहै। श्रीकृष्ण अंगमेबानाइकाकेनख
लगेहैतिनकोराधाजीकहतिहैजुयतु
तुह्मारसिंदूर धातुसोनेसोलिष्योकामकोनील
मणिकेपत्रहैयहै॥मूल। चरणकमलगलद
लक्तकसिक्तमिदं तवहृदयमुदारं॥दर्शयतीव
बहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारं॥टीका
बडौ। राधाजीकहतिहैअहोकृष्णवानाइका
केचरणनितेंगिरोजुमहावरताकरितुह्मारो
अतिविशालजुहैवक्षस्थलसुसीच्योहैसुम
हावरनहीतुह्मारेहृदयतेप्रगटहोतजुहैकाम
वृक्षताकेनूतनपत्रहैमानहुं दर्शनपद
त्वदधरगतममजनयतिचेतसिखेदं॥कथयति
कथमधुनापिमयासहतवबपुरेतदभेदं
राधिकाजीकहतिहैअहोकृष्णतुह्मारअधरविषै
जुवानाइकाकोदंतक्षतनयोदेसुमेरचित्तकोदुःख
उपजावतुहैसुअहोप्रभुतुह्मारोशरीरअरुमे
सोकौहैमेदहिनाहीउपजावतुमुकहोजु
तुममेरोमानभंगकीयोअरुतेतुह्मारोदंतक्षत
हिदेषिदुषपावतिहैं॥मूल। बहिरिवमलिन
तरंतवकृष्णमनोपिभविष्यतिनूनं॥कथमथ

सियंचयदुनमुखे विरचनायाता सितासिस्मिये॥ति
युक्तं विपरीतकारिणीतवश्रीखंडचर्चाविषंतीतांकुस्तपैनोदिमदकृत बड्डः क्रीडामुदायातिता॥
अथ सबजनएजु प्रियतिन्हसोमानजुक्तजुराधाजी
तिन्हसोंसषीकहतिहै। अरीविपरीतउलटीकारि
निहारिसंकोचरहितराधामधुरबोलतजुकलति
न्हसोंतूकठोरहैअरुवेषणामु करतहैतूफिरिबेठी
हैताहीतेंतोकोचंदनकीबातजुविषसीलागति
है। अरुचंद्रमासूर्यसोलगतुहैअरुक्रीडाजुहैते
जातनासीलगतिहैसुयहतोजुकहैजुमेरोक
ह्योनकरहि अंतर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्म
दारविस्रंसनस्तब्धाकर्षणदृष्टिहर्षणमहामंत्रः कुरंगीदृशां ॥ नेत्र ६
दृप्यद्दानववृंदयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां व ॥ ६९॥
शः कंसरिपोर्व्यपोहयतुवोश्रेयांसिवंशीरवः॥
कविकहतुहैकंसकेरिपुजुश्रीकृष्णजीतिन
कीमुरलीकोशब्दभक्तनिकेअशुभनिदूरिकरोसु
कैसोहैमुरलीकोशब्दमृगनैनीस्त्रीनुकेमनहिंमो
हिबेकौअरुचलैबुचलेऐसेकीदिमस्तकडुलाइबे
कौतेपारिजातकेफूलगिराइबेकौअरुजुस्त्रीगबके
रैताहिआकर्षिबेकौनेत्रनिहर्षदनकोमहासाधु
मंत्रहै।बहुरिकैसोहैमुरलीकोशब्द।गर्वजुक्तजे
दैत्यतिन्हतेंडरपतजेदेवतातिन्हकौजुअतिबडी
आपदाताकोदूरकर्त्ताहै।कहाजामुरलीकेसुन
तेदेवतानिर्भयहोतहैं श्री तर्गनंदनंदः
अत्रांतरेमसृणरोषवशामसीमनि
श्वासनिःसहमुखीमुपेत्य राधां॥सव्रीडमीक्षित
सखीवदनांदिनांतेसानंदगद्गदपदंहरिरित्युवा
च अथानंतरसंध्यासमेंश्रीराधाजीकौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३२ मरकतसोंकनकलितकलधौतलिपिरवरतिजयपत्र
रो। अर्थ। राधाजी कहतिहैं अहो कृष्ण तुम्हारो श
सरकामसयामकेजयकोजुपत्र तासौं बराबारक
रतुहै। सुकैसोहै तुम्हारो शरीर। अरुहैवानाइका
कैलीद्यानषूजानिषा। कैसोहै कामजयपत्र। म
रकतमणिजुनील मणि ताबिषैसोनेकीमसिसो
लिष्यो है। श्रीकृष्ण अंगमैवानाइकाकेनख
लगे हैं तिन लेषा राधाजी कहतितनजुपत्
तुम्हारो देह धौसोनेसों लिष्यौ कामको नील
मणिकोपत्र है यह॥ मूल॥ चरणकमलगलद
लक्तकसिक्तमिदं तवहृदयमुदारं॥ दर्शयतीव
बहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारं॥ ४॥ अर्थ॥
बहुरि राधाजी कहति हैं अहो कृष्णवानाइका
केचरणनितैं गिर्यो जुमहावरता करि तुम्हारो
अतिविशालजुहै वक्षस्थल सु सींच्यौ है सु म
हावरनहारतुम्हारे हृदयतैं प्रगट होतजु है काम
वृक्षताके नूतनपत्र है मानहु॥ दशनपदं
भवदधरगतं ममजनयति चेतसि खेदं॥ कथयति
कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदं॥
राधिकाजी कहति हैं अहो कृष्णतुम्हारे अधर बिषै
जुवानाइकाको दंतक्षत नयो है सु मेरे चित्तको दुःष
उपजावतु है सु अहो प्रभु तुम्हारो शरीर अजहू मो
सो कहै तैं भेद बिनाही उपजावतु है सु कहा। जु
तुम मेरो मानभंग कीयो अरु होतु तुम्हारे दंतक्षत
हि देषि दुषपावतिहै॥ मूल॥ बहिरिव मलिन
तरं तवकृष्णमनोपि भविष्यति नूनं॥ कथमथ

सियंवयदनुमुखे बिरवनायाता सितास्मि प्रिये न
घुक्तं बिपरीतकारिणि तव श्रीखंडचर्चाविषं॥
ताक्षुस्तपनोहिमद्युत नबङ्कः क्रीडामुदा यातना॥
अर्थ॥ सबजनएजु प्रियतिन्हसौं मान जुक्त जु राधाजी
तिन्हसौं सषीकहतिहै। अरी बिपरीतउलटी करि
निहारिसंको चरदृति राधा मधुर बोलनजु कहति
न्हसौं तू कठोर है अरु वे प्रणाम करत हैं तू फिर बैठी
है नाहीं तैं तोको चंदनकी बात पुनि बिषसी लागति
है। अरुचंद्रमा सूर्य सो लगतु है अरु क्रीडा जु है तै
जातनासी लगति है सु यह तो जुक्त है॥ इ
ध्यानकरिहि॥ अंतर्मोहनमौलिघूर्णनचलन्म
दारबिस्रंसनस्तब्धाकर्षणमहामंत्रः करीगीदृशां॥ ३९
दृप्यद्दानवदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां ॥ ४०॥
शः कंसरिपोर्व्यपोहयतु वोश्रेयांसि वंशीरवः॥
कवि कहतु है कंसके रिपुजु श्रीकृष्णजी तिन
की मुरलीको शब्दजन निके अशुभनि दूरि करो। सु
कैसो है मुरलीको शब्द। मृगनैनी स्त्रीनुके मनहि मो
हिबेकों अरु लज्जा न लैएसे कहि मस्तकडुलाइबे
को तैं पारिजातके फूल गिराइबेकों अरु जुस्त्री गवके
रैता हि आकर्षिबेको नेत्रनि हर्षदेनकों महासाध्य
मंत्र है। बहुरि कैसो है मुरलीको शब्द। गर्व जुक्त जे
दैत्य तिन्हतैं डरपत जे देवता तिन्हको जु अतिबडी
आपदा ताको दूरि करता है। कहा जु मुरलीके सुन
तदेवतानिर्भय होत है॥ श्रीगोविंदजू॥
अंतरेमसृणरोषवशामसीमनि
श्वासनिःसहमुखीसमुपेतराधां॥ सव्रीडमीक्षित
सखीवदनांदिनांते सानंदगद्गदपदं हरिरित्युवा
च॥ अथानंतर सांध्यासमें श्रीराधाजीके

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३५ निकटप्रधारिकोंर आनंदपूर्वक गद्गद बाकनि
करि श्रीराधाजी आगिली अष्टपदी को कहत नए।
वे सी है राधाजी। अति कठोर जु कोप ताके बस है।
बहुरि कैसी है राधाजी। उसासनि नाहीं सहि स
कत मुख जिनको सु कहा। इतने उ[illegible]सले ति है जि
तने मुख मैं नाहीं समात। बहुरि कैसी है राधा। ला
ज पूर्वक सखी को मुख [illegible] तिहैं। सु कहा है कौ यह
कहति है जु दृष्टि [illegible] की बातरा तिवे कर्म कीनें
अब ऐसें कहत हैं
ले॥ [illegible] बदसि यदि किंचिदपि दंतरुचिकौमुदी
हरति दरतिमिरमतिघोरं॥ स्फुरदधरसीधवे तव
वदनचंद्रमा रोचयति लोचनचकोरं॥ प्रिये चा
रुशीले [illegible] मुंच मयि मानमनिदानं॥
सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुख
कमलमधुपानं॥ श्रीकृष्णजी कहत हैं
अरी प्रिया राधा मो विषै अनादर की जु मानता
तो है छोड़ि सु कहा है कौ माणिकी रमेरो हृदय दग्ध हो
त हो तातें का[illegible] कोदूरि कर्त्ता जु है ने रो अधरा
मृतता को पान करवाइ अरु अरी प्रिया जो क
छु मोसों बोली है तो तेरे दंतनि की कांति करि मे
रे हृदय विषै जु नयरूप अंधकार नयो है सुदू
रि होइ अरु अरी राधा तेरा जु मुख चंद्रमा सो मे
रे लोचन हीं जु चकोर तिनकौं है तेरे अधरामृत के
निमित्त रुचि ही उपजावत है। कैसी है तू। चारु
नो हर है शील सुनावजा को। सत्यमेवासि
यदि सुदति मयि कोपिनी देहि खरनखरशरघा
तं॥ घटय भुजबंधनं जनय रदखंडनं येन वा भ
वति सुखजातं॥ बहुरि श्रीकृष्णजी कह
त हैं सुंदर है दंत जाके ऐसी अरी राधा जो तू सांचे

हूं षिझी है तो तैं रै नख जु नए अति तीखे बाण तिन
करि मोहि मारि सुका है तें। जा पर क्रोध होइ सु न
तानि मारिये अरु जो इतने हूं तें क्रोध दूरि न होइ
तो आपनी भुजा करि मोहि बांधि करि आपने दंतनि
सौं मेरे अधर निकौ खंडन करि और तो सौ कहा क
हैं जातें सुष पावसो [illegible] त्वमसि मम भू
षणं त्वमसि मम जीवनं त्वमसि मम भवजलधिरत्नं॥
भवतु भवतीह मयि सततमनुरोधिनी तत्र मम हृद
यमतियत्नं श्रीकृष्णजी कहत हैं अरी राधा
तूही मेरे आभूषण है अरु तूही संसार समुद्र विषै
निधि है। ऐसो जु है तातें विषैं तूं अनुकूल होहु। यावा
बिषैं मेरो हृदय बहुत जतन करत है। नीलन
लिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति कोकनदरू
पं॥ कुसुमशरबाणभावेन यदि रंजयसि कृष्णमिद
मेतदनुरूपं श्रीकृष्णजी कहत हैं अरी राधा
नीलकमल समान जु हैं तेरे नेत्र ते अब हैं कोक
नद जु है लाल कमल तिनके रूप धरत हैं। सु क्रो
ध करि लाल भए हैं यह जु कनहो इओ मोहि मिलि
करि कुसमशर जु है कामता कि जु बाण फूलनि
तें है उत्पत्ति जाकी ऐसो जु मधुता को पान करिके नै
न निआरक्त करा है तो यह जु कहैं स्फुरतु
कुचकुंभयोरुपरि मणिमंजरी रंजयतु तव हृद
यदेशं॥ रसतु रसनापि तव घनजघनमंडले घोषयतु
मन्मथनिदेशं श्रीकृष्णजी बहुरि कहत हैं
अरी राधा मणि को जु हार सो तेरे कुचकलशनि प
र बिराजो। अरु तेरे हृदय को शोभा दिखावै अरु
रसना जु है क्षुद्र घंटिका सो तेरे जघन पर निपरश ब
दि करो सु शब्द है सो आदी करति काम की जु आज्ञा
ता हि प्रगट करति है मानहु स्थलकमलगं

Folio no - 33, 34 Missing

X ३५ग९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३६ जनमम हृदये जनं जनितरतिरंगपरभागं॥
थ न मे स्मरणबाणकरन्नानि पदपंकजं सरस
लसदलक्तकरागं॥ ६ ॥ अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कह
ति हैं अति गंभीर अरु मधुर है वचन जाको ऐ
सी राधा तेरे चरणकमल तिन … जो लाल के हैं तो
महावर जुक्त करो। सु कैसे हैं चरणकमल जी
ती है स्थलकमल … शोभा जिन। बहुरि०।
मेरे हृदय के बिषै अनुराग हि उपजावत हैं ब
हुरि०। सुरत … या बिषै उपजायो है आनंद
जिन॥ म … रगरलखंडनं मम शिरसि मंड
४२ नं देहि पदपल्लवमुदारं॥ ज्वलति मयि दारु
णो मदनानलो हरतु तदुपाहितविकारं
अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कहत हैं अरी राधा तेरे जु अ
ति मनोहर चरणपल्लव तिनहि मेरे मस्तकप
र अलंकार करि सु कहा। आपने चरण मेरे म
स्तकपर धरि सु काहे कौं। मेरे अति दारुण जु है
कामाग्नि सो ज्वलत है ताको जु संताप सु जैसे दू
रि होइ। कैसे हैं तेरे चरणकमल। कामको जु बि
घ ताकौ दूरि करणहार हैं ॥ इति वंटु नचा
टुपटु चारु मधुवैरिणो राधिकामधि वचनजा
तं॥ जयति जयदेवकविभारती भूषितं मानि
नीजनजनितशातं ॥ इदं जा तिराधि
का हि प्रति कहे ऐसे जु श्रीकृष्णदेव के वचन तै
अति शोभत हैं। कैसे हैं श्रीकृष्ण के वचन। न
टुलक है मनोहर हैं अरु चाटुक हैं प्रीतिजुक्त
हैं पटुक हैं चतुराई सहित हैं अरु चारु कहै
अति कोमल हैं। अरु जयदेव कवि की जु भा
रती बाणी ता करि शोभत हैं॥ अरु मानिनी जु

ख्री तिन कौं सुष दाइक कहैं॥ इति श्रीगीतगोविंदे एक
[illegible] ॥ १९॥ [illegible]
तं केशवाका वयोस्ततं घनस्तनजघनया कृतश्र
ते परान वका … ति॥ बिरति बिलनोर न्पान काधि
ममांतरं प्राणयि … स्तनन्तरपरीरंभविधिहि प्रयता॥
अर्थ॥ श्रीकृष्णजी कहे … अनाहकवानाइकापति
न ऐसी राधा तू और नाइका … संग … ओषा छाँडा सु
का है तैं। जु मेरो हृदय सदा री। किराध्या … मेरे ह
ऐमें एका बतन नु नाही है तनु … जा के ऐसे काम
हिं बिना। और को कपट ही ना दीस … पर्यस हु
तेरे हि ए मैं रहत काम शरीरर … है सु और पत
तु है और को मेरे हृदय मैं अबकाश … कहा है। जाम्हा
हक हां है। तू कैसी है। अंतर रहित … अरु ज
घनजा के। तातैं कहतु हौं अब मन मैं जु …
ड्या है ता हि दूरि करि कै मो हि आलिंगन …
॥ मुग्धे बिधेहि मयि निर्दयदंतदंशं दोर्वल्लि
बंधनिडस्तनपीडनानि॥ चंडि त्वमेव मुदमंचय
पंचबाणचांडालकांडदलनादसवः प्रयांति॥
॥ श्रीकृष्णजी कहत हैं अहो परमसुंदरी रा
धा मेरे तु हु निर्दय होइ करि दंतदंत करहु अरु
भुजानि सौं मोहि बांधि करि गाढ़े करि अंगनि सौं
पीडा करहु सु काहे तैं जु अपराधी होइ ताकौं दं
डदी जैत बहीं सुष पाइ जे मुहो तो अपराधी
नहीं परितु तु लकूठो अपराध लगायो है ताते तु
जानि सौं बांधि स्तननि सौं गाढे पीडा करहु। जा
तैं तु हम सुष पावहु। जो ऐसे न करिहौ तौ चांडा
ल जु है काम ताके बाणनि के मारे प्राण जात
हैं तातैं कहतु हौं जु कछु दंड दीबे हारस दे के

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३० [illegible] न हाङ्ग [illegible] रा शिमुखितवक्तातिनंगुर
कृ [illegible] मोहकरालसर्प॥ तदुदितनयनंजनाय
मृ [illegible] भरसीमुसुधसिद्धमंत्र:॥ श्रीकृष्ण
जी कहत हैं अहो चडवनी राधा तुम्हारी बक्र जो भौंह
[illegible] जानिते। वैसी है [illegible] जुवजन जु तरुणन
निन्हके मोहिबेकों [illegible] करस्पाम सर्परूप है। अ
रु [illegible] मोहरूप सू पति [illegible] पञ्जो जु नयतहि दूरिक
रिबेकों तुम्हारो जु अधरामृत सोई सिद्धमंत्र है
[illegible] व्याध्यति [illegible] ध्यामौनंतन्विप्रपंचयपंचमंतक
[illegible] मुरालाप सर्पबिनोदयदृष्टिनि:॥ सुमुखिबि
मुखीत्ता [illegible] ताबद्धिमुंचनमुंचमांस्वयंमतिशय
स्नग्धो [illegible] मुग्धे प्रियोयमुपास्थित:
श्रीकृष्णजी कहत हैं अहो सुंदरी राधा तुम्हारो जु
[illegible] मौन करिबो सु मेदिदु:षदत है। तातें अ [illegible]
[illegible] कोमल बचननि करि पंचम राग हिं आला
पहु। अरु शीतल दृष्टि करि च तैं करि संताप दूरि
रिकरि। अहो सुंदर मुखहु जाको एसी राधा पाहिं
[illegible] बोलै। अरु मुग्ध कहै ज्ञान रहित राधा हो बि
हु जतन करि आयो आपुही तें तातें मोहि मा
ति छोडि है। हे कैसी हो। अतिशय करि स्नग्ध क
है अति अनुरागजुक्त है। चंधकद्दितिबाध
वोयमधुर: स्निग्धामधूकच्छर्बिगीडदृश्चंडिचकास्ति
नीलनलिनश्रीमोचनंलोचनं॥ नासाभ्येतितिति
लप्रसूपदवीकुंदाभदंतिप्रियेप्रायस्त्वन्मुख
सेवयाविजयतेविश्वंसपुष्पायुध:
मानिनी जु राधा जी तिन्हको मान दूरि करिबे
कों कहत हैं। अहो परमसुशीलराधा तुम्हा

से अधर जु पहरिया को फूल सो आस्तु [illegible]
मङ्गुवाको फूल समान पांडुरबर्न अतिन्हकेनेज [illegible]
लशा [illegible] है। अरु नील कमलनि की शोभा तुम्हारे ने
त्र निहरति हैं। अरु नासिका तिलफूल की बराबरि करति
है। कुंदसम दंत [illegible] एसी अहो पिया हों जानत
हौं तुम्हारे मुष की सेवा करि [illegible] पुष्पायुध जु कामदेव सो
सकल बिश्व हि जीततु है॥ [illegible]
दनमिंदुमतप्न्वितंगतिर्जनम [illegible] रंभा [illegible]
रूपयं॥ रतिस्त्वंकलावतीरुचि [illegible]
हो बिबुधयोबनंबहसितन्विष्टपश्री [illegible] श्री
कृष्ण जी कहत हैं अहो सुंदरी राधा [illegible]
न होत यापि तुम्ह अपछरानि के समस्त [illegible]
सु कौन प्रकार करि। सो कहत हैं। तुम्हारी [illegible]
रि कमल सहै। अरु मदालसा अपछरा ने त्रनि मैं है।
अरु मुख देखत ई जु चंद्रमा की सुधि होति है अरु ई
दुमती नाम अपछरा सुख करि जीती है। तुम्हारी
गति जन [illegible] लोकनि के मन हिं हरति हैं। अरु तु
म्ह गति करि मनोरमा अपछरा जीती है। तुम्हारी
जु रूकरि रंभा कदली केला की सोभा हि हरि करति है।
अरु तुम्हारी जु रूकरि रंभा नाम अपछरा जीती है।
तुम्हारी रति जु सुरत बिलास सो काम कला बि
षैं निपुन है। अरु रति करि तुम्ह कलावती ना
म अपछरा जीती है। तुम्हारी सौंह चित्र लिखी
सी सुंदर है। अरु तौंहनि करि तुम्ह चित्रलेखा
नाम अपछरा जीती है। श्रीकृष्ण कहत हैं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

३९ मदालसाइंदुमतीमनोरमारत्नीकलावती
चित्रलेखाहनतीकुगुणतुसहीमेहै
श्रातिविस्तनुसहरैः कुबलयापीडनसाद्धरिणे
राधापीनपयोधरस्मरणकृतकुंभेनसंभेदवान्॥
अत्रस्विद्यतिमीलतिक्षणमयादृष्टक्षिपेतत्स्व
णात्कंसबालकजितक्षिणेजतमितिबालालकै
लाहल॥ ... ।बकहतुहेएसैजुश्रीकृष्ण
जीनतानिकोपी॥ ... करउ।सुकैसेहैं।कुबलया
पीडहाथीसोंलरतजुराधाजीकेअंगनिकोजद्य
स्मरणतातेकुबलयापीडकेकुंभस्थलभेदतन
ऐ।पीछेसंसेदचलोअरुनेत्रमूंदेनबसावधा
नहैकरिजबहाथीमारयोतबसभनयोंकहतन
एजयहबालककंसहिंजीतिहैऐसोकोलाह
लहोतनये॥ श्री॥ ता॥
... रुचिरमनुनयेनपीणरत्वाम्मृगाक्षीगतवति
कृतवेषेकेशवेकुंजसय्या॥रचितरुचिरभूषांदृष्टि
मोषप्रदोषेस्फुरतिनिरवसादांकापिराधांजगा
द॥ अर्थ॥अबकोऊरकसषीसंध्याभएतेंराधा
सोंआगिलीअष्टपदीकरीकहतिहै।सुकहातन
ऐपीछै।प्रीतिजुक्तबचननिकरिबहुतबारलौं
श्रीराधाजीकोसंतुष्टकरिकरिश्रीराधाकोब
धुआधरिअरुश्रीकृष्णकोकुंजसेजकोपधारे
पीछेराधाजीकैसीहैं।पहिरेहैंअतिमनोह
रश्रीकृष्णजीकेभूषणजिन्है।अर्थकहाजुश्री
कृष्णराधारूपधर्योहैराधाजीकृष्णरूपधर्यो
है।बहुरिकैसीहैराधाजी॥दूरिनयोहैमानभ
गकोसंतापजिन्हको।संध्यासमयकेसाहै।

दृष्टिकेचोरहैं॥अथाष्टपदी॥ ... रुचिरकुसुम... कुलं
॥ बिरचितचाटुवचनरचनंचरणेरचितप्रणि
पातं॥संप्रतिमंजुलवंजुलसीमनिकेलिशयनम
नुजातं॥मुग्धेमधुमथनमनुगतमनुसरराधिके॥
... ॥ सषीकहतिहैअरीराधामधुदैतकेम
रिनहारेजुश्रीकृष्णजीतेवाकोअनुकूलभएहैंतिन्
हिंतू ... प्राप्तहोहु।कैसेहैंमधुमथन।केहेहैंत्र
तिन्हहिंप्रियबचनजिन्हके।बहुरिकैसेहैंचरन
निविषैकीनोहैनमस्कारजिनो।बहुरि।अबअ
तिमनोहरजुहैबेतकोकुंजताकेनिकटजुसुर
तनिमित्तरचीहैसेजताबिषैंप्राप्तभएहैंतातेंतूबे
गिचलि॥१॥ घनजघनस्तनभारभरेदरमंथर
चरणविहारं॥मुखरितमणिमंजीरमुपैहिविधे
हिमरालविकारं॥२॥अर्थ॥सषीकहतिहैस्थूलजु
हैंजघनअरुस्थूलजुहैंस्तनतिनकोहैभारजाकेए
सीअरीराधाशब्दकरतहैंमणिजटितनूपुरजाबि
षैंएसीजुगतिकरितूश्रीकृष्णकेनिकटचलिअरु
मरालजुहैंहंसताकीनाईंबिलासहिकरिकै
सीहैंगति।कछुएकमंदहैंचरणनिकोधरिबोजा
बिषै॥३॥शृणुरमणीयतरंतरुणीजनमोहनम
धुरिपुरावं॥कुसुमशरासनशासनबंदिनिपि
कनिकरेभजभावं॥३॥ सषीकहतिहैअरीरा
धाअतिमनोहरअरुतरुणीजनजुहैंतरुणीस्त्री
तिनकोमोहकोउपजावनहारोऐसोजुमधुरि
पुश्रीकृष्णतिनकोजुशब्दताहिसुनि।कामकी
जुआज्ञाहिकरतहैंजुऐसेकोकिलतिनकोश
ब्दसुकरिश्रीकृष्णजीबिषैंअनुरागजुक्तहोहु॥४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२९ अनिलमिलनचिरलयनिकरणैलनानिकुरंबाग्र
रुणमिश्रकरनारुकरोतिरतिप्रतिमुखविलंबं
॥ सषीकहति हे कमलमुखीसुथीकीतरुडि
री है जान्हाकीएसी अरी राधाचलि। वेविषें
जिनबकरति हैनाहिच्छोडिवेगिचलि।जानें
है सनकीजु है डारतिनकेजुनएपल्लवतेजुनए
कर हैं तिनकों गलता।जु है डारतेकहुंश्रीकृष्ण
पैपठवतिहै।सुकहा।बायुकीरस्षनिकीडा।
रहालतिहे।तिनं देषिसषीकहतिहे अरीराधाए
अनर्तनहैतेऊलतारूपजुहस्तनिकरितोकों
श्रीकृष्णपैचलनकहतहें।तातेंतूवेगिचलि॥
स्फुरितमनंगतरंगवसादिव सूचितहारिपरिं
रं॥ पृच्छमनोहरहारविमलजलधारममुंकुचकुं
भं॥ सषीकहतिहे अरीराधातूआपनेकु
चकुंननिसौंपूछिदेषिहैतोसोंचलीकहतिहे
किधौंअननली।कैसेहैंतेरेकुचकुंन।कामकेजु
तरंतिनकेबसतेहोतुडुहेकेपताकारिजनायो
हैश्रीकृष्णकोआलिंगनजिन।बहुरि।अतिनिर्मल
जुहेमुक्तानिकोहारसोईहैजलजिनविषें
अधिगतमखिलसखीभिरिदंतववपुरपिरतिर
णसज्जं॥चंडिरणितरसनारवडिंडिममभिसर
सरसमलज्जं॥ सषीकहतिहे अरीचंडी
कोपजुक्तराधिकासकलसषीनियहनीकेजा
नीजुतेरोशरीरकामसंग्रामकोसावधानभयो।
अर्थ कहाजुतेरोमान छूट्यो तातें लाजछांडि
करिकटिविषेंबाजतिजुहैछुद्रघंटिकासोईजुन
योडिंडिमढोलतादिबजाइकरिनि:संकश्री
कृष्णपैचलि॥ स्मरशरसुभगनखेनसखी

मवलंब्यकरेणसलीलं॥चंलबलयक्वणितैरवबो
धयहरिमपिनिजगतिशीलं॥७॥ सषीकहतिहे
अरीराधातूहाथकरिसषीकोअवलंबकरिवि
लासपूर्वकचलिकैसोहैतेरोकरकामकेबाणनि
समानसुंदरहैंनखजाविषें।अरुश्रीकृष्णकाम
केबसहूकरिएकाग्रचित्तकैरहेहैंतिन्हैंआ
पनेकंकणनिकेशब्दकरिजगाइ॥ श्रीजयदे
ववणितमधरीकृतहारमुदासितवामं॥हरिविनि
हितमनसामधितिष्ठतुकंठतटीमविरामं॥
श्रीजयदेवकरिकह्योजुयहगीतसोभक्तनि
केहृदयविषेंसर्वदाबिराजो।कैसोहै गीत।आप
नेगुननिकरिजीतोहैहाराजिन।बहुरि।श्रीकृ
ष्णकेनिकटकोंप्रेरीहैराधिकाजाविषें।अरुपरम
मनोहरजुहै।कैसेहैंभक्त।श्रीकृष्णविषैराख्यो
हैंचित्तजिन॥
सामांद्रक्ष्यतिवक्ष्यतिस्मरकथां ८।३
प्रत्यंगमालिंगनै:प्रीतिंयास्यतिरंस्यतेसखिसमा
गत्येतिचिंताकुलः॥सत्वांपश्यतिवेपतेपुलकयत्या
नंदतिस्विद्यतिप्रत्युद्गच्छतिमूर्छतिस्थिरतम:
पुंजेनिकुंजप्रियः॥ अबदूतीराधाजूकेआ
गेंश्रीकृष्णजीकेप्रेमहिवर्णतिहे।अरीराधाश्रीकृष्ण
जीकुंजमेंतोहिदेषतहैंअरुध्यानकरितोहि
देषिअरुकांपतहे।सुकाहेतेंमोसोंबोलिहेरा
धाकिधौंनहींयानयतें।बहुरिध्यानहीमेंतुम्ह
रेअंगसंगहिपाइकरिरोमांचजुक्तहोतहें।
बहुरिध्यानहीमेंतुम्हसोंरतिपाइकरिआनं
दहि अरुस्वेदहिपावतहैं।बहुरिरक्षीडाक
रिकेउठिचलीमानकुं।एसेमनमेंकरिकेउठि

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८० लतन है। अरु मूर्छित होत है। कैसे है श्रीकृष्ण।
ध्यान के निषेतो अरु गालि है नि है अरु जवध्या
न मिहृत देत बक हलै है राधा आइ करि सो तन वि
नवसी अरु चिंत करि काम कथानि कहैगी अरु का
म कथानि कहि करि अंगनि अंगनि सों मिलि
संतोष दिपावैगी अरु संतोष दिपाइ करि क्रीडा
हि करि है मो सो किधौं ना ही एसी चिंता करि के
अति आकुलात है ॥ क ॥ अक्ष्णोर्निक्षिप्तदंजनं
श्रवणयोस्तापिंछगुच्छावली मूर्ध्नि श्यामसरो
जदाम कुचयोः कस्तूरिकापत्रकं ॥ धूर्त्तानामभि
सारसाहसहृदां विष्वक्निकुंजे सखि ध्वांतं नी
लनिचोलचारु सुदृशां प्रत्यंगमालिंगति ॥
अथ अब सषी चलिवे जोग्य अंधकार बनीत
है। सो री कहति है। अरी राधा यह देषि अंध
कार नाइका निके अंगनि अंगनि लगतु है। सु
कैसो है अंधकार। नेत्रनि मैं अंजन कज्जल है
तु है। कहा जु नेत्रनि लग्यो सु कज्जल की शोभा
पावतु है। अरु अंधकार कर्ननि लग्यो सु तमाल
वृक्ष के फूलनि के कर्णाभरण की शोभा हि पाव
तु है। अरु जु अंधकार कुचनि लग्यो सु कस्तूरी
की शोभा हि पावतु है। कैसी है नाइका। परषे
रूष हि डहकति है। बहुरि कैसी है अंधकार।
नील बस्त्र सदृश जो है॥ ॥ काश्मीरगौरव
पुषामभिसारिकाणामाबद्धरेषमभितो रुचि
का नाम मा बद्धरे णामंजरीभिः॥ एतत्तमालद
लनीलतमं तमिस्रं तत्प्रेमहेमनिकषोपलतां
तनोति॥ ॥ बहुरि अंधकार बनैत है। स
षी कहति है। अरी राधा यह जु अंधकार सो

अभिसारिका नाइकानु को प्रेम रूप जु सुबर्न
ताको कसौटी होतु है। अर्थ कहा जु अभिसा
रिकानु को प्रेम अंधकार ही सौं कोहतु है॥
अरु कसौटी मैं भाष होति है या कसौटी मैं जु अ
भिसारिका नाइकानि के आभूषननि के मणिनि की
कांति सोई रेषा है। अभिसारिका कैसी है। केशरि स
मान गौर है बपु जिन्ह को। अंधकार कैसो है। तमा
ल वृक्ष के दल समान नील है ॥ हारावलीत
रलकांचनकांचिदाम मंजीरकंकणमणि
द्युतिदीपितस्य॥ द्वारे निकुंजनिलयस्य हरिं निरी
क्ष्य व्रीडावतीमथ सखी निजगाद राधां॥ अथ अ
ब सषी राधा जी सों आगिली अष्टपदी करि कहति है॥
कैसी है राधा जी। कुंज गृह के द्वार कृष्ण जी को देषि ल
ज्जित भई है। सु काहे तैं। इन्ह सौं मैं कितने निठुर बो
ले हैं। अब सामुहे कै सैं जाउं या कारण तैं सलज्ज है कै
सो है कुंज गृह। हार केउ जु मणि तिन्ह की कांति करि
अरु सोने की कटि मेषला ताकी कांति करि अरु नू
पुर के मणि की कांति करि अरु कंकण की मणि की
कांति करि कीन्हो है प्रकाश जा मैं। इतनी कांतिन्ह
करि। अंधकार मैं उजियारो भयो तब देषि सपाइ ल
ज्जित भई ॥
मंजुतर कुंजतल केलि सदने। प्रविश राधे मा
धव समीपमिह विलस रति रभस हसित वद
ने सषी कहति है अरी राधा माधव
जु है श्रीकृष्ण तिनके निकट चलि अरु अति म
नोहर जु कुंज ता है जु नए क्रीडा गृह तिन विषै श्रीकृ
ष्ण सों क्रीडा करि कैसी है तू। रति जु है सुरत ता बि
षैं जु रभस उत्साह ता करि होस्यं जु कै है मुख कंज को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८१ ॥मूल॥ नवभवदशोकदलसयनसारे। प्रविशराधे
माधवसमीपमिह बिलसकुचकलशतर
लहारे॥ ॥अर्थ॥ सषीकहतिहै श्रीराधानूतन
जुहै अशोकदलनिके दल तिनकरि रचीहै शय्या
जाबिषै। एसो जुकुंजगृह ताबिषै श्रीमाधवजी
कैनिकटचलि अरु क्रीडाकरि। कैसीहैतू। कुचक
लशनिपरचंचलहोतहै मुक्ताहारजाकै
कुसुमचयरचितशुचिबासगेहे॥ प्रविशराधे
माधवसमीप मिहबिलसकुसुमसुकुमारदेहे
॥अर्थ॥ सषीकहतिहै। कुसुमसमानकोमलहै
शरीरजाको ऐसी श्रीराधाकुसुमजुहैफूलतिन
करिरच्यो ऐसो अतिपवित्रजुहै संकेतस्थलता
बिषै श्रीमाधवजुकेनिकटचलिअरुबिलासक
रि॥ ॥ सषीक। चलमलयपवनसुरभिशी
ते॥ प्रविशराधेमाधवसमीपमिहबिलसरस
बलितललितगीते॥ ॥ सषीकहतिहैरस
सहितमनोहरहैगाइबोजाबिषै ऐसी श्रीरा
धा बक्रुतजुहैमलयपवनकोपवनताकरिसु
गंधहै अरुशीतलहै ऐसोजुसंकेतस्थलताबि
षै श्रीमाधवजीकेनिकटचलि अरुबिलासक्री
डाकरि॥ ॥ बिततबहुबल्लिनवपल्लवघने॥
प्रविशराधेमाधवसमीपमिहबिलसचिरम
लसपीनजघने॥ ॥ सषीकहतिहै श्रा
लसजुक्तहै अरुनिसजुक्तहै अतिस्थूलजांघजा
कीएसी श्रीराधाकेली अतिबिस्तीर्नतरुजु
लतातिनकेजुनूतनपत्रतिनकरिसघनएे
सो जुहैसंकेतस्थलताबिषै श्रीमाधवजीके

निकटबेगिचलि अरु बिलासकरि॥ मूल॥ म
धुमुदितमधुपकुलकलितरावे॥ प्रविशराधे
माधवसमीपमिहबिलसमदनरसरभसभा
वे॥ ॥ सषीकहतिहै मदनरसरजुहैका
मरसताकोहै अधिकपनजाबिषै एसी श्रीराधा
मधुजुहै फूलनिकोरस ताकरि मत्तनऐजु
केतस्थलताबि हैभ्रमरतिनकरिकीनोहैगु
जारवजाबिषै एसोजुसंकेतस्थलताबिषै श्री
माधवजीकेनिकटचलिअरु क्रीडाकरि॥
मधुरतरपिकनिकरनिनदमुखरे॥ प्रवि
शराधेमाधवसमीपमिहबिलसदशनरुचि
रदशनशिखरे॥ ॥ सषीकहतिहै अति
निर्मलजुहैमाणिकतिनसमानसुंदरहैदंतजा
कैऐसी श्रीराधा अतिमधुरजुहैकोकिलानके
शब्दतिनकरिमनोहरहैएसोजुसंकेतस्थलता
बिषै श्रीमाधवजीकेनिकटचलिअरुबिलासक
रि॥ ॥ बिहितपद्मावतीसुखसमाजे॥ कुरु मु
रारमंगलशतानि भणति जयदेवकबिराजे
॥ ॥ तुम्हारेगुणनिकहतजुकबिनकेराजा
जयदेवकविताको अहोमुरारितुमबहुतकल्या
णकरहु। कैसेहैंजयदेवकवि। पद्मावतीना
मजुआपनीस्त्रीताकोसुषकेदायकहैं॥ ॥श्री॥

त्वां चित्तेन चिरं वहन्नयमतिश्रान्तो भृशं तापि
तः कंदर्पेण तु पातुमिच्छति सुधासंबाधबिंबा
धरं॥ अस्यांकं तदलंकुरु क्षणमिह भ्रूक्षेपलक्ष्मी
लवक्रीते दास इवोपसेवितपदांभोजे कुतः संभ्र

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४२ म ॥१॥ अर्थ ॥ सषी कहति है अरी राधा एक क्षण अम
त करि पूर्ण जु तेरे अधर तिन्ह कौ पान कीयो चा
हत है। कैसे है कृष्ण जी। चित्त करि तुम हि लिलै अ
ति श्रमित है। जैसे श्रोरस्ना रत्नी नेह इसु अमित
होइ अरु जलपान कीयो चाहे। तातै कहति हों
इन्ह के गोद हि पर एक क्षण आदि हि। कदाचि
त कहै सषी हों इन्ह के निकट जात डरपति
हों। ता कौ कहति है अरी राधा इन्ह कौ कहा भय
करति है ए तो लाल लीन्है दास है। सु कहा है करि
मोल लीन्हे है कटाक्षनि करि नव नूतन लीन्हे है।
अरु दास जैसें चरण सेवत है तिन्ह कौ कौन भय
[illegible] ॥ सा ससाध्वससानंदं गोविंदे लोल लोच
ना ॥ सिंजाना मंजीरं प्रविवेश निवेशनं ॥
[illegible] राधा जी सषी बचन तैं कुंज गृह में प्रवेश क
रति भई। कैसी है राधा जी। गोविंद जी तन ला
जे तैं चंचल है लोचन जिन्ह के। बहुरि कैसी है राधा
जी। मनोहर शब्द करि जु कृष्ण मंजीर नूपुर ति
न्ह हि गमन तैं बजावति है। गोविंद जी कैसे है।
पहिले अपराध तैं सत्रय है अरु राधा जी कौ दे
षि सानंद भए है।
[illegible] ॥ राधा बदन बिलोकन बिक
शित बिबिध विकार बिभंगं ॥ जलनिधिमिव
बिधुमंडल दर्शन तरलित तुंग तरंगं ॥ हरि मेक
रसं चिरमभिलषित बिलासं ॥ सा ददर्श गुरु हर्ष
बशंवद बदन मनंग बिकाशं ॥
अब कवि कहत है सु जु है राधिका से श्री कृष्ण हिं
देषति भई कैसे है हरि। राधा के बदन कौ अवे

लोकन देषिबो ता करि उपजे पाये है नाना जिके
बिकार जिन बिषैं। कैसे देषियत है। बिधुमं
डल जु है चंद्रमंडल ता के दर्शन तै अति चंचल
न ए है बडे तरंग जा के ऐसो समुद्र जैसो देषिये
सु कहा जैसे चंद्रमा के देषे समुद्र के तरंग उठत
सैं श्री राधा जी के मुख देषे श्री कृष्ण जी के काम के
तरंग उठे है। बहुरि कैसे है हरि। एक रस अधिकाहि
बिषै है रस प्रीति जिनकै। बहुरि ॥ बहुत काल
तैं श्री राधा जी सौं केलि की बाछा करत है। बहुरि ॥
अति आनंद जुक्त है मुष जिनके अरु काम समा
न है सुंदरता जिन बिषैं ॥ [illegible] हारममल तरल
रमुरसि दधतं परिरंभ बिदूरं ॥ स्फुटतर फेन
कदंबक करबितमिव जमुना जल पूरं ॥ [illegible]
बहुरि कैसे है हरि। श्री राधा जी को आलिंगन सौं
मोतिन कौ हार तरल हृदय मैं पहरि रहे है। सु कैसे
देषियत है। बहुत दूर करि अति निर्मल जु है फेण
ता बिषै ऐसो जमुना जल जैसो देषिजे। श्री कृष्ण
सौं जमुना जल की उपमा मुक्ताहार कौ फेण
की उपमा ॥ श्यामल मृदुल कलेवर मंडल
मधिगत गौर दुकूलं ॥ नील नलिन मिव पीत
पराग पटल भर बलयित मूलं ॥ [illegible] बहुरि
कैसे है हरि। श्याम बर्न अरु अति मनोहर है श
रीर जिनको अरु पीतांबर ओढे है। सु कैसे दे
षियत है। पीत जु है पराग ता करि बेष्टित है मू
ल जा कौ। ऐसो नील कमल जैसो देषिये। श्री
कृष्ण कौ नील कमल की उपमा पीतांबर कौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

८२ पीतपरागकी उपमा॥ मूल॥ तरलदृगंचलचल
नमनोहरबदनजनितरतिरागं॥ स्फुटकम
लोदरखेलितखंजनजुगमिवशरदितडागं॥
॥अथ॥ बहुरिकैसेहैहरि। चंचलजुहैकटाक्ष
तिनकरिशोभनजुहैमुखताकरिराधाजीकौ
उपजाइहैप्रीतिजिन सुकैसेदेषियतहैं। श
रत्कालबिषै श्री जाफूलेजुकमलतिनक
रितलावजैसो द षेर। कैसेहैकमल। क्रीडाक
रतहैखंजरीट जा बिषै। श्रीकृष्णजीकेमुखकौ
कमलकीउपमानेत्रनिकौखंजरीटकीउपमा
मूल॥ बदन मलपरिशीलनमिलितमिहर
सम कुंडल शोभं॥ स्मितरुचिरुचिरसमुज्व
लिताधरपल्लवकृतरतिलोभं ब
हुरिकैसेहैहरि। बदनजुहैपद्मकमलताको
जुपरिशीलनप्रकाशकरिबो ताकेनिमित्तप्रा
प्तएहैसूर्यहैमानहु। एसेजुकुंडलतिनक
रिशोभितहै। बहुरिकैसेहैहरि। मंदहासक
रिशोभितहैअधरपल्लवतिनकरिकीनोहै
रतिबिषैलोभजिन शशिकिरणछुरि
तोदरजलधरसुंदरकुसुमसुकेशं॥ तिमिरोदि
तबिधुमंडलनिर्मलमलयजतिलकनिवेशं
बहुरिकैसेहैहरि। चंद्रमाकरिव्याप्त
हैमध्यजाकौ एसोजुमेघतासमानशोभितहैं
फूलनिसाहितकेशजिनके। बहुरिकैसेहैहरि।
अंधकारबिषैउदितभयोजुनिर्मलपूर्णचंद्रमा
तासमातासम। नदेषियतहैश्वेतचंदनको
तिलकजिनके बिपुलपुलकभरदं
तुरितंरतिकेलिकलाभिरधीरं। मणिगण

किरणसमूहसमुज्वलभूषणसुभगशरीरं॥
॥अथ॥ बहुरिकैसेहैहरि। बहुतजुहैरोमांच
तिनकरिव्याप्तहै अरुरतिकेलिकलाजुहैतु
बनआलिंगनआदितिनबिषैअधीरहै। बहु
रिकैसेहैहरि। मणिजटितजुहैदिब्यआभू
षणतिनकरिशोभितहैशरीरजिनको॥ मूल॥
श्रीजयदेवभणितमतिशोभनबिनवबिभूषण
भारं॥ प्रणमतहृदिबिनिधायहरिंसचजलधि
तरिश्रुतसारं ऐसेजुहैहरितिनकुंहृ
दयबिषैराषिकरिनमस्कारकरवु। कैसेहैहरि।
श्रीजयदेवकबिकरिबर्नेहैअतिसुंदरआभूष
णजिनके। बहुरिकैसेहैहरि। संसारसमुद्रहि
तारिबेकोजिहाजहै। अरुश्रुतिकेसारहै॥
॥ईसमा॥
अतिक्रम्यापांगंश्रवणपथपर्यंतगमनप्रया
सेनेवाक्ष्णोस्तरलतरतारंपतितयोः॥ इदानींरा
धायाःप्रियतमसमालोकसमयप्रयानस्वेदांबु
प्रसरइवहर्षाश्रुनिकारः अबकविश्री
कृष्णदर्शनतेराधाजीकौसात्विकभावबर्नतहैं।
सुकहतहैप्रियतमकेदर्शननैराधाजीके
नेत्रनितंआनंदाश्रुचलेसोआनंदकेजलनहो
इश्रमस्वेदकेजलहैमानहु। सुकाहेश्रमजलकेक
णभएसुकहतहैअपांगजुनेत्रनिकीकोरतिन्ह
उलंघिकरिकर्नमार्गलिंगएजुनेत्रतातेंप्रया
सकष्टभयोताहीतैंश्रमकणभएहैमानहु।
सुकैसेहैनेत्र। अतिचंचलहैतारकजिनकेत्र
रुश्रीकृष्णहैप्राप्तभएहैं चर्जसास्तल्पा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४८ तं कृतकपटकंदूविविक्तिस्मितंयातेगे हाद्बहि
रवेहिता लीपरिजने॥ प्रियास्पंपत्रपंक्तो: स्मरसर
समाकूतसुनगंसलज्जाया॥ सज्जाव्यगमदिवदू
रंम्रगदृशा॥ ११॥ अ॥ कबि कहतु है सलज्जजुरा
धाजी तिन्हकी लाजराशमानंकु। कैसी है राधाजी।
सानधानजुसषीजन तिन्हहिकुंजगृहतें बाहि
रनरेपीछैंतेजलों॥ ॥ नशदे। कैसोहैसषीज
न। कपटकेरवजुव रवकोमिसफिरिकरिकीनो
स हैं। मंदहासजिन,. कैसी है राधाजी कामबाण
कैआघीनतें पड्योजुसुरतअभिप्रायताकरि
मनोहरप्रिम मुषदेषतिहैं॥ ॥ जयश्रीबि
सलैर्सहितलस्वमंदारकुसुमैः स्वयंदूरेण धि
परमुद्धामुदतश्व॥ नुजापीडक्रीडाहतकुब
लयापीडकीरण: प्रकीर्णासग्बिंदुर्जयतिभुज
दंडोमुरजित:॥ ११॥ कबि कहतुहै मुरदैत्य
केजीतनहारेजुश्रीकृष्ण तिन्हकोबाहुअधि
कशोभतहै। कैसेहैबाहु। कीन्हीजुकुबलया
पीडहस्तीसोंजुधतातेंलगेहैंरुधिरकेबिंदु
ज्ञाबिषें। सुरुधिरनहोरहाथीकेमस्तककेसे
दूरदेषिकरिआपनोहाथीसिंदूरकरिचिन्हि
तकीनोहैमानकुं। बहुरिकैसेबाहु। जयल
क्ष्मीकरिडारेजुमंदारापुष्पतिन्हकरिपूज्यो
हैमानकुं। कैसेहैश्रीकृष्णजी। नुजानिकीक्री
डाकरिसान्पोहैकुवलयापीडहस्तीहिन्ह

॥ गतवृतिसखीवृंदेमंदत्रपानरनिर्भर

धाजी करिहाथसौं बांधेअरुपयोधरनिकेभारसैं
पीडितकीन्हैंअरुकटितटकरिलाडनकीनोअरु
केशगहिहाथसौं नवाएअरुअधरमधुपानकर
इकरिमोहैतथापिसंतोषपावतभएतातेंकामकी
गतिबामउलटीहै॥ ॥ मारांकेरतिकेलिसंकुल
रणारंभेतया साहसप्रा...कांतजयायकिंचिदु
परिप्रारंभियत्संभ्रमात्॥ नि: सादो जघनस्थलीशि
थिलदोर्बल्लिरुत्कंपितं बक्षो मीलितमाक्षिपौरुष
रस: स्त्रीणांकुत: सिध्यति॥ ॥ कबि कहतुहै
जुराधाजीतिन्हश्रीकृष्णहिंजीतिबेकोंकामसंग्रा
मकेआरंभबिषेंसाहसकरिअधिककुबिपरीतसु
रतसंभ्रमकेबेगतेंआरंभकीनोतबजपतोहिचलन
एअरुबाहुशिथिलभएबक्षस्थलकांपतभयोनेत्रमू
देतातेंस्त्रीनुकोंपुरुषरसकहांतेंसिद्धहोइ। संग्रामको
आरंभकैसोहै। रतिकेलिजुचुंबनादिकताकरिव्याप्त
है नस्याः पाटलपाणिजांकितमुरोनिद्राक
षायेदृशौ निर्धौताधरशोणिमाविलुलितस्रस्तं
जोमूर्द्धजा:॥ कांचीदामदरस्तथांचलमितिप्रातर्नि
लितं कबिकहतुहै। एजुकामकेपांचशर
तीषैतपतिजुहैश्रीकृष्णतिन्हकेनेत्रमेंलगे
रुबध्योमनुयहआश्चर्यहोतभयो। सुपांचकोनतेक
हतुहै। एकतोनखक्षतजुकराधाजीकोबक्षस्थलहू
सरोनिद्राकरिआरक्तनेत्र। तीसरोपानतेंगराहै
ललोहीजिन्हकोऐसेअधर। चौथोकंपितभएतातें
तेंगिरतहैफूलजिन्हतें। ऐसेकेश। पंचमकछुएक
शिथिलहैअंचलजाबिषैंऐसोबस्त्रएपांचशर
तेंश्रीकृष्णजीकेनेत्रनिमेंलगेअरुबंध्योमनयह

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४७ अचिरजुहातुनयो॥ तामप्राप्यमपिस्वसंब
रपसंदीरोदतीरोदसाशंकेसुंदरिकालकूटमपिव
न्मृडामृडानीपति॥ इसंपूर्वकथानिरन्पमनसो
बिहिप्पबामावत्तंराधायास्तनकोरकोपरिवलनेत्र
ओहरि: पातुव:॥ कविकहतुहैएसेजुहु
रितुम्हारीरक्षाकरउ। कैसेहहरि। राधाजीको
जुअंगतिनकोजुअ। तिन्हपरचंचलहै। नेत्रजि
नके। कैसीहैराधाजी। इहिंनांतिपूर्वकथानिसुके
नके। कैसीहैराधाजी। इहिंनांतिपूर्वकथा। श्रीकृष्णकहतहैं। अहोसुंदरिराधा
सीहैपूर्वकथा। श्रीकृष्णकहतहैं। अहोसुंदरिराधा
दीरसमुद्रकेतीरमेरोबरणकरिबेकोंउद्यतभई
जुलक्ष्मीतिन्हिंहिंबिनुपाएंषिमिकरिमहारुद्रबिष
पानकरतभएयहजुपूर्वकथाताहिसुनिकरिउ
निदं शीतबअंचलदूरिकरिकेराधाजीकेअंग
निदंपतत्नए व्यालोल: केशपाशस्तरलि
तमलकै: स्वेदलोलौकपोलौस्पष्टादष्टाधरश्री:
कुचकलशरुचाहारिताहारयष्टि:॥ कांचीकां
चिद्गताशांस्तनजघनपदं पाणिनाछाद्यसद्य:
पश्यंतीमात्मरूपंतदपिविलुलितस्रग्धरेयंधि
नोति॥ कविकहतहैंएजुराधातथापिश्री
कृष्णकेमनहिसंतुष्टकरतिहै। कैसीहैराधाजू।
रुत्तकरिअंगअरुजघनतत्कालढांपिकरिआपुनो
रूपदेषतिहै। सुरूपकैसोहै। केशछूटेहैंअरु
अघूघरवारेकेराठोरछोडिगएहैंअरुकपाल
पसीजेहैंअरुषंडितजेअधरतेप्रगटदेषियत
हैंअरुस्तननिकांतिकरिमातीनकेहारदूरिकी
एहैंअरुजद्यपिकांचीजुरसनासोकानइअ
रगईहैतथापिश्रीकृष्णजीकेमनहरतिश्रीराधा

हरतिहै॥ इषन्मीलितदृष्टिमुग्धहसितंसत्का
रधाराबशादव्यक्ताकुलकेलिकाकुविकसद्दंतांशु
धौताधरं॥ स्वासोत्कंपपयोधरोपरिपरिष्वंगात्कुरं
गीदृशो हर्षोत्कर्षविमुक्तनि:सहतनोर्धन्योधय
त्याननं॥ इषन्म। कविकहतुहैहरिणनैन
जाकेएसीहैनाइकाताकेमुखकोधन्यपुरुषपान
करतुहै। कैसीहैनाइका। कामतेउपज्योजुउसा
सतातेंचंचलजुकुचतिन्हकौजुआलिंगनतातें
भयोजुहर्षकोउत्कर्षतातेंआलसउपज्योताक
रिअतिशिथिलशरीरजाको। मुषकैसोहै। कछू
कमूंदेहैंनैनजाबिषैं बजोरि०। सुंदरहैहासजा
मैं। बजोरि०। कामकोजुआधिक्यताकेबशतेंजु
अतिआकुलकेलितातेंकेलिमेंजुकाकुबचनतिन्ह
बचनतिन्हतेंप्रगटभईजुदंतनिकीकिरणतिन्ह
करिशोभितहैंअधरजाबिषैं॥ अथसहसा
सुधांतंरतांतेनिवृत्तात्रिवेनांगी॥ राधाजगादसा
रमिदमानंदनंदनगोविंदं॥ अबराधाजीसु
रतकेअंतबिषैंआदरजुतेआनंदसहितगोवि
दजीसोंआगिलीअष्टपदीकरिकहतिभईगो
विंदजीकैसेहैं अतिसंतुष्टहैं। राधाजीकैसीहैं।
अतिषेदजुक्तहैंअंगजिनके॥
कुरुयदुनंदनचंदनशि
शिरतरेणकरेणपयोधरे॥ मृगमदपत्रकमत्रम
नोभवमंगलकलशसहोदरे॥ निजगादसायदु
नंदने॥ क्रीडतिहृदयानंदने॥
हृदयकोआनंदकेदेनहारएसेजुयदुनंदनश्री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४८ कृष्णजी तिनकेक्रीडाकरनसंतेंश्रीराधाजीकहतिहैं।
४१ अहोंजदुनंदनश्रीकृष्णचंद्रनसमानअतिरीतलजु
तुम्हारेहस्ततिन्हकरिमेरेपयोधरनिबिषेंम्रगमदजु
हैकस्तूरीताकेपत्रककाहिजैंचित्रतिन्हहिलिषें॥
कैसेहैंमेरेपयोधर।मनोजुदजुहैकामताकोमंग
लकरिबेकोकलससमानहैं॥ अलिकुलगंज
नसंजनकरतिना यकसायकमोचने॥ त्वदधर
चुंबनलंबितकज्जलमुज्वलयप्रियलोचने॥
श्रीराधाजीकहतिहै अहोकृष्णतुम्हारेचुंबन
तेंफैल्योहैकज्जलजिनबिषेंएसेजुमेरेनेत्रतिनहि
तुम्हआपनेहस्तकरिसुधारहु।कैसे मेरेनेत्र।
अलिजुहैभ्रमरतिनकीशोभाहिजीततहैं।बहुरि
कैसेहैनेत्र।रतिनाहकजुहैकामताकेजुसायक
बाणतिन्हहिंप्रेरतहैंसुकहा।जिनकीआगपातें
मबाणनिबाडतहैं॥ नयनकुरंगतरंगबिका
शनिरासकरश्रुतिमंडले॥ मनसिजपासबिलास
धरेशुभवेशनिवेशायकुंडले॥ श्रीराधाजी
कहतिहैपरमसुंदरदेषजिनको अहोएसेकृ
ष्णमेरेकाननिबिषेंकुंडलपहरावहु।कैसेहैमेरे
कर्ण।मनसिजजुहैकामताकोजुपाश।ताकेबि
लासहिकरतहैं।सुकहा।कर्णनहोहिंकामकी
पासिहैमानहुं।ताहीतैंनेत्रजुनएकुरंगतिनके
तिनकेजुतरंगकटाक्षतिनाहीकोराषतहैं
भ्रमरचयंरचयंतमुपरिरुचिरंसुचिरंममसं
मुषे।जितकमलेबिकमलेपरिकर्मयनर्मजन
कमलकंमुरवे॥ राधाजीकहतिहैं।अहो
कृष्णमेरोअतिसुंदरजुमुरवतापरबिथुरजुअ

लकतिन्हहिसंवारहु।सुकैसेहैअलकमेरेजुमुरव
परजिनहिदेषिकरिभ्रमरआवतहैं।सुकाहेतें।
स्यामअलकहैतिन्हहिंचमरआपनीजानिजानि
वेऊआवतहैं।कैसोहैमेरोमुरव।जीतीहैकमलनि
कीशोभाजाकरि।अरुनिर्मलहै।बहुरिकैसोहैअल
क।रतिक्रीडाकोप्रगटकरतहै॥ म्रगमदर
सबलितललिततंकुरुतिलकमलिकरजनीकरे॥बिहि
तकलंककलंकमलाननबिश्रमितश्रमशीकरे॥
राधाजीकहतिहैंकमलसमानहैमुषजिनको
एसेअहोकृष्णमेरोललाटजुचंद्रमाताबिषेंम्रगमद
जुकस्तूरीताकरितिलकरहु।कैसोहैतिलक।ललित
कहैमनोहरजुहै।बहुरि०कीनीहैकलंककीशोभा
जाकरि।सुकहा।ललाटचंद्रमाताबिषेंकलंककी
हिजैसुकस्तूरीकोतिलकहैमानहुं।कैसोहैललाट।दूरिकिनएहैप्रस्वेदकणजातें॥ ममरुचिरेचि
कुरेकुरुमानदमानसजुधजामरे॥ रतिगलितेल
लितेकुसुमानिशिखंडिशिखंडकडामरे॥
राधाजीकहतिहैंमानकेदेनहारेएसेअहोकृष्णमे
रेअतिरुचिरजुहैंचिकुरकेशतिनबिषेंफूलनिगु
हहु।कैसेहैकेश।कामकीजुध्वजाताकेचवरहैमा
नहुं।बहुरिकैसेहैकेश।रतिकेलिबिषेंछूटहैंअ
रुअतिशोभाहिपावतहैं।बहुरिकैसेहैकेश।शि
खंडीजुमयूरतिनकीजुपिछताकीशोभाहिजीत
तहैं॥ सरसघनेजघनेममशांबरदारणबार
णकंदरेमणिरसनाबसनाभरणानिशुभाशयबा
शयसुंदरे॥ राधाजीकहतिहैअतिउदारहै
चित्तजिनको एसेअहोकृष्णमेरेअतिसुंदरजुज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नाकटिस्थलताबिषैंमणिजटितक्षुद्रघंटिका अरुबसनबस्त्रअरुऔरआभूषणतिनकरिपह रावहु। कैसेहैमेरेजघन। अतिसरसअरुअति स्थूलहैं। बहुरिकैसेहैंमेरेजघन। सबलदारु णजुहैकामसोईजुहैनयोबारणहस्तीताकोहै बासजाबिषै जयदेवबखुणिजयदेस दयहृदयंकुरुमंडने॥ हरिचरणस्मरणामृतनि र्मितकलिकलुषज्वरखंडन॥ श्रीजयदे वकरिकह्यो। एसोजुगीतरूपबचनताबिषेंदय जुक्रमनराषहु। कैसोहैबचन। श्रीहरिकेचरण निकोजुस्मरणसोईजुनयोअमृतताकरिक सिंजुगकेबिषहिदूरिकरतहै। अरुभक्तनिकों जयकोदेनहारोहैअरुआभूषणहै

रचयकुचयोश्चित्रंपत्रंकुरुष्वकपोलयोर्घटय जघनेकांचीमंचस्रजाकबरीभरं॥ कलयबल यश्रेणींपाणौपदेकुरुनूपुराविति निगदितः प्रीतःपीतांबरोपितथाकरोतु कवि कहतुहैराधाजीकहतिहैं। अरुहमारेमेरें कुचनिपरचित्रलिषहु अरुकपोलनिकऊ रीपत्रलिषहु। अरुजघननिक्षुद्रघंटिकाबा धहु अरुफूलनिकीमालानिकरिमेरेकेश निकरिश्रोभितकरहु। अरुदस्तनिकंकण पहिरावहु अरुमेरेचरणनूपरनिकरिशो भितकरहु। इहिंभांतिजबराधाजीकह्यो।

तबपरमसंतुष्टह्वैकरिश्रीतांबरजुश्रीकृष्णसे सैहीकरतभए पर्यंकीकृतनागनायकफ णाश्रेणीमणीनांगणेसंक्रांतप्रतिबिंबसंबलन याविभ्रद्देहप्रक्रियां॥ पादांभोरुहधारिवारिधि सुमहांदिक्चुतनैकायव्यूहमिवाचरन्नुपचि ताक्ततोहरिःपातुवः॥ कविकहतुहैउपज्यो जुकामजिन्हकैऐसेजुहरितेतुह्मारीरक्षाकरहु। कैसेहैंहरि। सेजकीठौरकानोसुशेषनागतेकेफ णनिकीजुमणितिनमैंप्रतिबिंबतभएहैंसुप्रति बिंबनहोइचरणपलोटतजुहैलक्ष्मीजीतिन्हहि बहुतनेत्रनिकरिदेषिबेकोबहुतदेह मान हु यदंगधर्वकलासुकोशलमनुध्यानंचय दक्षवंयत्शृंगारबिबेकतत्वरचनाकाव्येषुलीला यितं। तत्सर्वंजयदेवपंडितकवेःकृष्णैकताना त्मनःसानंदाःपरिशोधयंतुसुधियःश्रीगीतगोविं दतः जुजयदेवपंडितजेकविहैतिन्हकैगी तबैमैंचतुराईहैंअरुजुश्रीभगवानजीकोस्म रणहैअरुजुशृंगारकोजुबिबेकसंयोगवियो गकीरचनाहैअरुकाव्यकरिबेकोबलहैंजुस बपंडितआनंदपूर्वकयागीतगोविंदहैसोषबि चारिशुद्धकरहु। कैसेहैंजयदेवश्रीकृष्णचर णनिमेंएकाग्रलग्योहैमनजिन्हको॥ श्रीगी तगो दम - का जय - पब - जी - बालन - नतर्पान वगनामद्वादश॥ ॥ ॥ अ ॥ नमोदे वगंगेदरनिखिलमलकंनदे॥ जयदेवकविकहतुहैअहोदेवीगंगातुहम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पाण्डुलिपिः समाप्ता

MANUSCRIPT ENDS

ختم شد

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi